वैदिक सम्मेलन

तृतीय

वैद्यक सम्मेलन

आयुर्वेद महामण्डल

प्रयाग

सूचना।

सभापति महोदयकी विद्वत्ता पूर्ण
हत स्पीच अलग छप रही है। सम्मेल
खर्चका ब्योरा भी उसीके साथ रहेगा।

मन्त्री।

कार्य विवरण।

जिसमें वैद्यक सम्मेलन सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य संगृहीत हैं।

सम्पादक

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल

प्रकाशक

आयुर्वेद महामण्डल प्रयाग।

और

मैनेजर मुन्शी बाबूलाल के प्रबन्ध से श्रीराघवेन्द्र प्रेस प्रयाग में मुद्रित हुआ।

संवत १९६८ वै०

प्रथमबार ५००प्रति

मूल्य ।।।) प्रति

प्राक्कथन ।

आज जिस कार्यके करनेकी मनमें कल्पना भी न हो, जिस कार्यके करनेका विचार भी न हो, जिसकी सफलता भी अपनेमें न शोची जाय, वही कार्य यदि अचानक अपने हाथों हो जाय तो उसे आप क्या समझेंगे ? अवश्य ही उसे हम उस अदृश्य शक्तिका विलास और प्रभाव समझेंगे जिससे इस संसारकी बाजीगरीका खेल होरहा है । अतएव जिसकी शक्तिसे जिसकी इच्छा और कृपा कटाक्षसे संसारके छोटेसे छोटे और महानसे महान कार्य हो रहे हैं उस सर्वशक्तिमान जगदीश्वरको अनन्त धन्यवाद और प्रणाम हैं । अपने प्रयागस्थ वैद्यक सम्मेलनको भी हम अपने पुरुषार्थ या परिश्रमका फल न समझकर ईश्वरी शक्तिका विलास मात्र समझते हैं । प्रयागकी जिस "आयुर्वेदप्रचारिणी सभा"के उद्योगसे यह सम्मेलन हुआ उसकी स्थिति अभी एक सालकी भी नहीं हुई । गत चैत्र कृष्ण पक्षमें उसका जन्म हुआ था । स्थानिक स[illegible] विश्वास भी नहीं था कि यह स्थायी [illegible] महीने तक इसका काम बिलकुल [illegible] साधारण-को इसके जन्मका भी [illegible] था ! हमारे

इधर जब कोई बालक होता है तब स्त्रियां छः महीने तक उसे घरके बाहर नहीं निकालतीं, उसे मकानकी देहली नहीं नँघातीं! हमारी 'आयुर्वेदप्रचारिणी सभा'ने भी इसी अवस्थामें छः महीने बिताये। छः महीने बीत जाने पर सातवें महीने अन्नप्राशनके समय साथ ही लोगोंको उसके जन्मका भी समाचार मिला! उसका छः महीनेका अज्ञातवास अवश्यही शुभप्रद हुआ है, क्योंकि प्रकट होतेही उसने ऐसा महत्वका कार्य किया है। इसके लिये उसके स्थापक, कार्य सञ्चालक और सहायक तथा स्नेही अपनेको धन्य मानते हैं। इस रिपोर्टको पढ़कर पाठक समझ सकेंगे कि इतने थोड़े अवकाशकी तैयारीमें जितना कार्य और जितनी सफलता होनी चाहिये थी उससे कहीं अधिक कार्य हुआ है। अतएव सम्मेलनमें योग देने वाले सभी सज्जन इस यशके भागी हैं। इस सम्मेलनसे इस बातका विश्वास हो गया है कि अब भारतीय वैद्यककी उन्नतिके स्थायी कार्य करनेका अनुकूल समय आगया है। इस समय उसके लिये जो परिश्रम किया जायगा वह व्यर्थ नहीं जायगा, कुछ न कुछ सफलता अवश्य होगी। सम्मेलनके समय प्रतिनिधियोंमें अनेक कष्ट और असुविधा सहकर भी जैसी काम करनेकी उत्सुकता देखी गयी; जैसा परस्पर स्नेहभाव और उदारताका वर्ताव परिलक्षित हुआ, जैसा हृदयद्रावक पारस्परिक करुणाभाव दिखाई पड़ा उससे

साफ मालूम पड़ता था कि हम लोग मनका क्षुद्र सङ्कुचित भाव विसर्जन कर रहे हैं और मङ्गलजनक उदारताके भावोंको हृदयमें स्थान दे रहे हैं। चौबीस पचीस वर्ष पहले जब स्वर्गवासी आयुर्वेदोद्धारक आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शङ्करदाजी शास्त्री पदे महोदयने आयुर्वेदके उद्धारका बीड़ा उठाया था तब उन्हें चारोंओर निराशा और अन्धकार दिखाई पड़ा था। परन्तु उनका यह मूलमन्त्र था कि (निश्चयाचे बळ। तुकाम्हणे तेची फळ) यदि मनमें निश्चयात्मक बुद्धि स्थिर रखकर कार्य किया जायगा तो उसका फल अवश्य मिलेगा। इसलिये यह कह कर उन्होंने अपना उद्योग जारी रखा था कि आज यद्यपि पूर्ण सफलता पानेका समय नहीं है तथापि हम अपने सतत उद्योगसे काम करने योग्य क्षेत्र तैयार करेंगे। आनन्दकी बात है कि उनका और अब तक आयुर्वेदके लिये उद्योग और परिश्रम करनेवाले अन्य भारतीय सज्जनोंका परिश्रम सफल हुआ है और उन्होंने क्षेत्र तैयार कर जो बीजारोपण किया था और जिसमें उनके सामने ही अङ्कुर निकल आया था वह अंकुर सूखने नहीं पाया बल्कि अब पल्लवित होनेके लक्षण दिखा रहा है।

इस वर्ष प्रयागमें द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अधिवेशन होनेवाला था; इस लिये मेरे मनमें यह विचार

उठा कि यदि इसी समय वैद्योंका भी एक सम्मिलन कर डाला जाय तो उत्तम हो; किन्तु सहायता और कार्य-कर्ताओंके अभावमें निश्चय हिम्मत नहीं पड़ती थी। इसी बीच कुछ सज्जनोंने समाचारपत्रोंमें भी वैद्यक सम्मेलन करनेकी इच्छा प्रकट की और मुझे उसका उद्योग करनेके लिये प्रेरित किया। मैंने इस विचारकी उपेक्षा करनी उचित नहीं समझी; तथापि प्रत्यक्षमें कुछ कहकर जिम्मेवरी शिर पर लेना भी बिना विचारके मैंने उचित नहीं समझा। इसलिये व्यक्तिगत रूपसे 'सुधानिधि' सम्पादककी हैसियतसे मैंने हिन्दी संसारके प्रसिद्ध भारतीय वैद्योंकी सम्मति संग्रह करनेका प्रयत्न किया। तदनुसार अनुमान डेढ़ सौ पत्र मैंने भिन्न भिन्न स्थानके वैद्योंके पास भेजे और पूछा कि इस अवसरमें सम्मेलन करना उचित है या नहीं। सम्मेलनके पक्षमें राय होने पर उसमें निम्न लिखित चार बातोंके जाननेकी जिज्ञासा की गयी :—

"(१) हिन्दीमें उपयुक्त वैद्यक ग्रन्थोंकी पूर्तिके लिये किन उपायोंका अवलम्बन किया जाय? [२] हिन्दी संसारके वैद्योंमें एकता बढ़ाकर आयुर्वेदकी उन्नति करनेके लिये किन आवश्यक उपायोंको काममें लाया जाय? [३] दिल्लीकी तिब्बी कानफरेंससे संयुक्त होकर आयुर्वेदकी उन्नतिका प्रयत्न किस प्रकार किया जाय और यदि

वैद्योंका कोई स्वतन्त्र सम्मेलन करना आवश्यक हो तो उसका कार्य किस तरह चलाया जाय ? और [४] यदि साहित्य सम्मेलनके समय वैद्यक सम्मेलन भी हो तो कौन वैद्य प्रवर सभापतिका आसन ग्रहण करें ।"

कहना नहीं होगा कि इस विषयमें जितने पत्र आये उन सबोंमें वैद्योंकी उन्नतिके लिये शास्त्रीजी के सम्मेलनोंके ढङ्गपर सम्मेलन करनेकी आवश्यकता प्रतिपादन की गयी । इससे मैंने इस विषयको "आयुर्वेद प्रचारिणी सभा"में पेश किया और उसके उत्साही कार्यकर्ताओंने वैद्यों की इच्छाको मान देना उचित समझा । इस प्रकार आश्विन कृष्ण ७ की सभामें स्वागतकारिणी सभा सङ्गठित हुई । उसके सभापति पण्डित शिवरामपाण्डे वैद्य, उपसभापति पण्डित वैद्यनाथशर्मा राजवैद्य, मन्त्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल उपमन्त्री डाक्टर रामेश्वरनाथ चतुर्वेदी और बाबू जयकुमार जैनी वैद्य तथा कोषाध्यक्ष पण्डित भगवती प्रसाद पाण्डे वैद्य महोदय नियुक्त हुए । सभासद स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, कुँवर सरयू प्रसाद नारायण सिंह बहादुर, लाला रामचरण दास राय बहादुर, पण्डित केदारनाथ चौबे वैद्य, पण्डित बच्चूराम शर्मा वैद्य, पण्डित ठाकुर प्रसाद शर्मा वैद्य, लाला कन्हैयालाल जी रईस, पण्डित देवकीनन्दन त्रिपाठी वैद्‌य, लाला सांवलदास

जी रईस, पण्डित रामभजन शर्मा वैद्य, बाबू मनमोहन लाल जी हकीम, बाबू सोहन लाल जी जैन वैद्य, पण्डित कालीचरण जी वैद्य, पण्डित विश्वेश्वर जी मिश्र वैद्य; पं० गिरिजा शङ्कर शर्मा वैद्य, पं० रामगोपाल शर्मा वैद्य, पं० मनबोध पाण्डे, ला० जग्गीलाल, पं० उमादत्त प्रभृति कार्यदक्ष उत्साही सज्जन हुए। यहां पर कह देना आवश्यक है कि सम्मेलनका होना सुनकर कानपुर और मथुराके वैद्य सज्जनोंको इतना उत्साह हुआ कि उन्होंने अपने अपने नगरमें सभा स्थापित कर दी। कानपुरके पण्डित रामेश्वरजी मिश्र वैद्य, पण्डित शिवनारायण मिश्र वैद्य, पण्डित शिवनन्दनजी मिश्र वैद्य, पण्डित कालकाप्रसादजी वैद्य, पण्डित छोटेलाल जी वैद्य तथा पण्डित लालमणि जी त्रिपाठी वैद्य आदि सज्जनोंका उत्साह अन्त तक बहुत प्रशंसनीय रहा। इस प्रकार यद्यपि स्वागतकारिणी सभाको बहुत शीघ्रतामें काम करना पड़ा तथापि ईश्वर कृपासे कार्य पूर्ण सन्तोषजनक हुआ। इस अवसरमें सम्मेलन करनेसे दुहरा लाभ यह हुआ कि बहुतसे हिन्दी साहित्यके धुरन्धर लेखकोंने अपनी उपस्थितिसे सम्मेलनकी शोभा बढ़ायी और विशेष बात यह कि हिन्दी समाचार पत्रोंके माननीय सम्पादकोंने उपस्थित होकर अपनी सहानुभूति प्रकट की और हमारे कार्य कलाप देखकर अवश्य ही समझा होगा कि यह समाज उठनेकी इच्छा

कर रहा है अतएव इसकी सहायता करना इसका उत्साह बढ़ाना आवश्यक है।

जो बाहरी सज्जन स्वयं पधार कर अपनी सम्मति प्रदान नहीं कर सके, उनमेंसे लगभग डेढ़ सौ सज्जनोंने तार और पत्र द्वारा अपनी सहानुभूति और सम्मति प्रकट की है। उन सम्मतियोंपर दृष्टि दौड़ानेसे इस बातका पता लगता है कि वैद्यककी उन्नति करनेके लिये हमें किन किन बातोंकी पूर्ति करनी होगी और किस मार्गसे चलना होगा। उनमेंसे जिन बातों पर इस वर्ष विचार नहीं किया जा सका उन पर आयुर्वेद महामण्डल विचार कर सकेगा और आगामी वर्षके अधिवेशनमें उन्हें पेशकर सकेगा। इसीलिये रिपोर्टके बढ़ जाने पर भी हमने उन सम्मतियोंका सार छाप देना उचित समझा। इस वर्षकी रिपोर्टमें जो निबन्ध छापे गये हैं वे यद्यपि दो एकको छोड़ द्वितीय और तृतीय श्रेणीके हैं तथापि वे अयाचित आये इसलिये उनका आदर करना उचित समझा गया। भविष्यमें यदि पहलेसे प्रयत्न किया जायगा तो सम्भव है इस विषय पर उच्च श्रेणीके निबन्ध भी आवेंगे जिससे वैद्यक साहित्यकी कई आवश्यक बातों पर विचार करनेका सर्वसाधारणको अवसर मिलेगा। तथापि सभापति महोदयोंकी स्पीच, अनुभविक प्रयोग, निबन्ध, प्रस्तावोंपर

व्याख्यान देने वालोंके व्याख्यान आदि कई विचार णीय बातोंके कारण यह रिपोर्ट बहुत ही महत्वकी हुई है ।

प्रयाग कार्त्तिक कृ. ११ सं. १९६८	सम्मेलनका सेवक, जगन्नाथप्रसाद शुक्ल

श्रीधन्वन्तरये नमः ।

तृतीय—

वैद्यक सम्मेलन ।

मङ्गलाचरण ।

भुवनमिदमशेषं लीलया कल्पयन्ती ।
त्रिगुण कलित मूर्तिः स्थापयन्ती ततोऽन्ते ॥
विलयमुपनयन्ती निर्गुणा निष्क्रिया हो ।
जयति निगम वेद्या देवता चिन्मयीयम् ॥ १ ॥

स्वागत और जलूस ।

वैद्यकसम्मेलनकी स्वागतकारिणी सभाका निमन्त्रण पा पा कर बाहरी वैद्य और प्रतिष्ठित सज्जन आश्विन शुक्ल २ अर्थात् २४ सितम्बरसे ही प्रयागमें पधारने लगे। बहुतसे सज्जन साहित्यसम्मेलनके प्रतिनिधियोंके साथ ही ठहरे ; कुछ मुट्ठीगञ्जकी धर्मशाला और दारागञ्जमें ठहराये गये। आश्विन शुक्ल ५को सभापतिका शुभागमन होनेवाला था। इसलिये बारह बजे स्टेशनमें स्वागतेच्छु सज्जनों, रईसों और बाहरी तथा नगरके प्रतिनिधियोंका अच्छा जमाव हो गया। गाड़ीकी अदला बदलीमें धोखा हो जानेसे सभापति महोदय उस गाड़ीसे नहीं आ सके। इससे बहुतसे लोग निराश होकर लौट आये। अन्तमें तीन बजे-

की गाड़ीसे कलकत्तेके प्रतिनिधियोंके साथ आप आ पहुँचे आपके उतरते ही ज़ोरशोरकी जयध्वनि हुई। सैकड़ों कण्ठोंसे "आयुर्वेदकी जय" "धन्वन्तरि महाराजकी जय" "कविराज गणनाथ सेन महोदयकी जय" निकलनेसे स्टेशन-भेदी शब्द हुआ। उसी समय स्वागतकारिणी सभाके स-भ्यों और बाहरी प्रतिनिधियोंसे आपका परिचय कराया गया और स्वागतकारिणीके सभापति पण्डित शिवराम जी पाण्डेय वैद्य तथा सहकारी मन्त्री बाबू जयकुमार जैन और डाक्टर रामेश्वरनाथ चतुर्वेदीने सभापति तथा अन्य प्रतिनिधियोंको हार तथा मालाएं पहनायीं। दिल्ली कान-फ़रेंसकी ओरसे वैद्यराज श्रीयुक्त मानसिंह जीने आपका पुष्पमालादिसे स्वागत किया। स्टेशनसे बाहर निकलते ही बाहरके एकत्रित सज्जनोंने जयघोष किया और बाजे बजने लगे। ठाठ बाठके साथ जलूस रवाना हुआ। सबसे आगे सुन्दर सुनहरी झूल पड़ा हुआ हाथी चल रहा था। जिसके ऊपर "स्वागतम्" "शुभागमन" तथा "वैद्यक सम्मे-लन" के बड़े बड़े सुनहरी झण्डे चल रहे थे। उसके पीछे रङ्ग बिरङ्गी झण्डी वालोंकी क़तार थी। इनके पीछे ऊंटों-की क़तार थी जिनके ऊपर कितने ही रङ्ग बिरङ्गे झण्डे चल रहे थे। जिनमें "आयुर्वेदकी जय" "वैद्यक सम्मेलन" आदि शब्द अङ्कित थे। इनके पीछे दुहरे बाजे बज रहे थे; जिनके पीछे एक बढ़िया गाड़ीपर सभापति कविराज

गणनाथ सेन, कविराज शीतलचरण सेन, पण्डित कन्हैया-लाल गोपालाचार्य और पण्डित कृपाराम शर्मा बैठे हुए थे। पीछेकी गाड़ियोंमें अन्य प्रतिनिधि बैठे हुए थे। पीछे कितनी ही भरी तथा ख़ाली गाड़ियोंकी क़तार चल रही थी। इस प्रकार बाजेगाजे और धूमधामके साथ स्टेशन रोड होकर जलूस आगे बढ़ा। रास्ते रास्ते श्री सभापति, पं० कन्हैयालाल, पं० कृपाराम, कविराज शीतलचरण तथा आयुर्वेद सम्बन्धी अनेक प्रकारकी जयध्वनि और पुष्प वृष्टि होती जाती थी। जानसेनगञ्जमें पहुँचते ही पण्डित वैद्यनाथ शर्मा राजवैद्य महोदयकी दूकानके पास जलूस रोका गया। पण्डित जीने केलेके खम्भे, तोरण बन्दनवार-से मकान खूब सजवाया था, बाजा बज रहा था; एक ओर हारमोनियम मीठे स्वरसे स्वागत कर रहा था। पण्डित जी तथा उनके चिरञ्जीव पण्डित अमरनाथ जीने बढ़कर सभापति महोदयको गाड़ीसे नीचे उतारा और स्वागत सम्बन्धी कविता कही। इसके बाद बैठकमें ले जाकर आसन पर बैठाया और चन्दन लगाकर पुष्प हार पहनाया तथा नारियल देते हुए ब्राह्मणोचित स्वागत कर आशीर्वाद दिया। यहाँसे जलूसकी भीड़ बहुत बढ़ गयी। पण्डित ठाकुरप्रसादजी शर्मा वैद्य; बाबू सांवलदास जी रईस, पं० रामभजन शर्मा, तथा कार्यकारिणीके अन्य कई सज्जन पैदल चलते हुए दौड़ दौड़ कर जलूसका प्रब-

न्ध कर रहे थे। सभीके चेहरों पर उत्साह और आनन्द झलक रहा था। यहांसे जलूस चलकर पण्डित शिवराम पाण्डेय वैद्य महोदयके यहां ठहरा। आपने तथा आपके भ्राता पण्डित भगवती प्रसाद जीने पुष्पमाला आदि पहना कर वेद मन्त्रोंसे स्वागत किया। अब जलूस बहुत धीरे धीरे चल रहा था और पुष्पवृष्टि, आनन्दध्वनि और जय जयकार गर्जनसे उत्साह हिलोरें मार रहा था। अपने मकानके सामने बाबू जयकुमार जैनी जीने फिर स्वागत किया। इसके बाद साहित्य सम्मेलन कार्यालयकी ओरसे पण्डित मुरलीधर जी मिश्रने माला पहना कर पुष्पवृष्टि की। इसके पास ही आयुर्वेद प्रचारिणी सभा और वैद्यक सम्मेलनका कार्यालय था। वहां फिर पुष्पमालादिसे स्वागत हुआ। हिन्दी साहित्यसम्मेलन और वैद्यक सम्मेलनके कार्यालय खूब सजाये गये थे। इसके पश्चात समुदायका जोश यहां तक बढ़ा कि सभापति महोदयके कितने ही मना करने और हाथ जोड़ने पर भी वालण्टियर तथा नवयुवकोंने गाड़ीके घोड़े खोल दिये और स्वयं गाड़ी खींचने लगे। चौकमें रास्ता बन्द हो गया। स्वदेशी कारबारने स्वागत किया और फिर बाबू सांवलदास जीने अपनी दूकानके सामने जलूस रोक कर पुष्पमालादिसे खूब स्वागत किया। रास्ता तरह तरहकी झण्डियोंसे खूब सजा हुआ था। इस प्रकार कोतवाली होते हुए जलूस राय

बहादुर लाला रामचरणदास जीकी कोठीके पास पहुँचा। यहां रायबहादुर महोदयने स्वागत किया और सभापति महोदयने गाड़ीसे उतरकर सब लोगोंको धन्यवाद दिया। रायबहादुर महोदयके यहां ही आपके ठहरनेकी व्यवस्था थी। इस तरह जलूसका कार्य धूमधामसे पूर्ण हुआ।

प्रथम दिवसका कार्य।

सम्मेलन भारतीभवनमें होनेको था। इसलिये भारतीभवनका नया कमरा ध्वजा, पताका, तोरण बन्दनवार और सम्मेलन तथा स्वागतसे सम्बन्ध रखनेवाले झण्डों और बोर्डोंसे खूब सजाया गया था। यहां भारतीभवन चार बजेसे ही भर गया था; किन्तु सभापति महोदयके आने और जलूस निकालनेमें बिलम्ब होनेसे बहुतसे लोग उकता कर उठ गये। तथापि कुछ जलपान कर लगभग साढ़े पांच बजे सभापति महोदयके आते ही भारतीभवन फिर ठसाठस भर गया। सभापति महोदयके आते ही ज़ोरकी जयध्वनि हुई। मङ्गलाचरण होनेके पश्चात आगरेके कविराज पण्डित सत्यनारायण जीने अपने मीठे और सुहावने स्वरसे स्वरचित स्वागतकी कविता पढ़ी जिसे सुन प्रतिनिधियोंने बड़ा हर्ष प्रकट किया। वह कविता यह है:—

सम्मेलन स्वागत।

श्रीधन्वन्तरि परमपूज्यवर औ अश्विनी कुमारा।
आयुर्वेद आदि आचारज विदित सकल संसारा॥
सुश्रुत चरकऽरु वाग्भट्ट श्रीभावमिश्र गुनवाना।
माधव आदरणीय देशमें जिनको सुलभ निदाना॥
औरहु विज्ञ सुलेखक जिनकी पाइ कृपा सुखकारी।
आयुर्वेद लता लहरानी ललित लहलही प्यारी॥
भुवि मण्डलमें जासु सुयशकी अनुपम धुज फहरानी।
चमत्कार परिपूर्ण चकित करि दिव्य छटा छहरानी॥
कालचक्रके विवस जासु यह दीन दशा दरसावै।
लखि जिहि देश हितैषिनको हिय करुणा सों भरि आवै॥
चिनगारी अवशेष रही जो ह्वैके सोउ पुरानी।
लहि असावधानी अब हा! हा! बोऊ जाति सिरानी॥
डारि सुघृत उत्साह जासुपै यदि कोउ जोति जगावै।
श्रमको समिध समर्पण करि पुनरपि प्रज्वलित करावै॥
तो यह हरि है अवसि कठिनरुज देश दुःखके मूला।
परिवर्द्धित करि पूर्ण सकल सुख सुलभ प्रकृति अनुकूला॥
नासि पठन पाठन क्रम जाको अङ्ग भङ्ग करि दीन्हीं।
चल न सकै अति जर्ज़र तनकी परत न तिह मुख चीन्हीं।
जासों वैद्य चिकित्सक सबरे "आयुर्वेद पञ्चानन"।
करहु सार्थक निज नामनिकों जिह विनती दे कानन॥
प्याइ "सुधानिधि" रस याकों कोउ जीवदान प्रिय दीजै।
जग दुर्लभ-अनमोल मनुज तन ताहि सफल करि लीजै॥

यहिसों विमल प्रयाग धाममें जुर्यो आय सम्मेलन।
करिये भरसक यत्न सकल विधि यह गुड़ियनुको खेल न॥
यदि कोउ जाइ शफ़ाख़ानेमें तासु कथा सुन लीजै।
पी पी तहँ 'एक आ पूरा' की शीशी धन बल छीजै॥
किन्तु फ़ीस नित नयी बढ़ति जासों अतिचित चकरावै।
तीन डबलकी आप बतावहु दुइ रुपया कहँ पावै॥
निस्सहाय निर्धन यह भारत रोग परम परचण्डा।
तिनके हेत सुलभ गुणकारी कोउ न प्रबन्ध अखण्डा॥
तुम्हरो यहां सनेह आगमन अतिही धीर धरावै।
अद्भुत आशा अङ्कूर हियमें तव दर्शन उपजावै॥
'शङ्कर-दाजी शास्त्रि पदेकी' मुदित आत्मा प्यारी।
देखहु वह आशीष देत है पुलकित तन बलिहारी॥
कटि कसि यासुउद्धार हेतु अब सबै प्रेमसों पागत।
हमहू परम उमंगत उरसों करत तिहारो स्वागत॥
हे 'शिव' हे 'गणनाथ' गजानन याकी रक्षा कीजै।
करुणाकरि करुणालय याकों 'सत्य' सकल सुख दीजै॥

सत्यनारायण शर्मा-धांधूपुर आगरा।

इसके पश्चात करतलध्वनिके साथ स्वागतकारिणीके सभापति पण्डित शिवराम जी पाण्डे वैद्य महोदयने अपना स्वागतका भाषण पढ़ना आरम्भ किया। उनके कुछ पढ़ने पर शेष भाषण जगन्नाथप्रसाद शुक्लने पढ़ सुनाया। आपका भाषण नीचे उद्धृत है:—

स्वागतका भाषण ।

त्रैलोक्याधिपतिं नमत्सुरपतेः कोटीररत्नमञ्जरी-
रञ्जत्पाद सरोरुहं गुणगणाम्भोधिं दयाद्याकरं ॥
रागद्वेष मुखान् जयन्तमखिलारीनात्म भक्तेप्सितम्-
यच्छन्तं प्रणमामि मङ्गल निधिं श्रीदेवदेवं सदा ॥१॥
पथ्यापथ्याप्त मालाऽमृत कलश शिखा बाल बर्हाङ्कुरेषु ।
बिभ्राणः प्राणिमात्रं परम करुणया नीरुजं कर्तु कामा ॥
या सिन्धोराविरासीदखिल सुरवरैर्वन्दिता वैद्यविद्यां ।
दीपःपायादपायादिह भुवि भगवान् वेद धन्वन्तरिस्सः ॥२॥

प्रियबन्धु वैद्यवर और आयुर्वेद प्रेमी सज्जन महाशयगण,

आज इस संख्यामें आप लोगोंको आयुर्वेदकी उन्नतिकी कामनासे उपस्थित देखकर मेरे आनन्दकी सीमा नहीं है । आनन्द, उत्साह और स्नेहकी लहरें हृदयके भीतरी भागसे तरङ्गित होकर हिलोरें ले रही हैं । आयुर्वेदकी उन्नतिकी शुभकामनासे प्रेरित होकर आप अनेक कष्ट और अड़चनोंकी परवाह न कर यहां पधारे हैं, इस घटनासे हम लोगोंके हृदयपर विचित्र परिणाम घटित हो रहा है । हम लोग इस बातको अच्छी तरह समझ रहे हैं कि इस कई दिनके प्रवासके कारण आप लोगोंके व्यवसाय और कार्योंमें कैसा

व्यत्यय उपस्थित हुआ होगा। इसीसे इस बातका परिचय मिल रहा है कि आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये अपनी वैद्यकविद्याका महत्व और प्रभाव प्रकट करने और चमकानेके लिये आप लोग कटिबद्ध हैं—तुले हुए बैठे हैं। इससे हमारे हृदयको बहुत बल मिलता है और हमारी "आयुर्वेद प्रचारिणी सभा" जिस उद्देश्यसे प्रेरित होकर आप लोगोंके दर्शनोंकी अभिलाषिनी हुई है उसकी सिद्धिका समय समीप दिखाई पड़ रहा है; इससे आल्हादसे हमारा हृदय गद्गद हो रहा है। यद्यपि सुविशाल भारतके सुविस्तृत हिन्दी समाजके असंख्य वैद्योंमेंसे इतने वैद्योंका पधारना किसी गिनतीमें नहीं है, तथापि जब हम इस बातका विचार करते हैं कि इस सम्मेलनकी कल्पना पन्द्रह बीस दिनोंसे अधिककी नहीं है और इसकी तैयारी एक सप्ताह मात्रकी है, तब हमें वैद्यों जैसे विशृङ्खलित समाजमेंसे इतने वैद्यों और आयुर्वेद-हितैषियोंको इकट्ठा हुआ देख बहुतही सन्तोष और आनन्द होता है। इससे इस बातकी आशा हो रही है कि वैद्योंमें एकता और सहानुभूतिकी वृद्धि करने तथा इस समुदायको शृङ्खलाबद्ध बनानेकी कल्पना निरर्थक नहीं है। कालान्तरमें इस विषयके प्रयत्नमें सुफल फलनेकी सम्भावना है। आज हम इस छोटी संख्यामें एकत्र होकर आयुर्वेदके प्रचार और अपनी उन्नतिकी चर्चा करेंगे और

इस प्रकार भारतके अनेक भागोंके बन्धु इकट्ठे होकर आपसमें प्रेम और सहानुभूतिकी वृद्धि करेंगे। यदि हममें दक्षता बनी रही तो कालान्तरमें हमारे मित्रों और सहयोगियोंकी संख्या बढ़ती जायगी जिससे आयुर्वेदकी उन्नतिके प्रयत्न साध्य और सुलभ होते जायँगे। हम सब आयुर्वेदकी उन्नतिकी कामना रखते हैं, जो लोग सब तरहसे सम्पन्न होने परभी रोगोंकी व्याधिसे दुःखित हो रहे हैं उनके कष्टोंको दूरकर सर्वसाधारणकी हितकामना करते हैं; अतएव एकही विचार एकही उद्देश्यके होनेके कारण हम सब एक हैं, हम सब भाई हैं। ऐसे अपने स्नेही भाइयोंका स्वागत करते हुए हमें बहुतही आनन्द हो रहा है। अतएव हृदय खोलकर हम सबसे प्रेमाभिवादन करते हैं। हम इस बातको समझ रहे हैं कि आप लोगोंके स्वागत और सुविधाके लिये हम यथेष्ट प्रबन्ध नहीं कर सके हैं; हम कुछ भी आपकी सेवा नहीं कर सके हैं; तथापि आप हमारे हैं; इसलिये हमें आशा है कि आप हमारी त्रुटियोंपर ध्यान न देकर हमें क्षमा करेंगे और हमारे हृदयके स्नेह और भावका विचारकर मतलबसे मतलब रखेंगे। आप अपने हैं इसलिये अपनेसे सब कुछ कहनेकी धृष्टता की जा सकती है। जिस समय मुझपर स्वागतकारिणीके सभापतिका भार सौंपा गया था उस समय मैं ज़रा सहमा था किन्तु आज मैं देख रहा हूं कि हम लोगोंका उत्साह

बढ़ानेके लिये केवल वैद्य बन्धु ही उपस्थित नहीं हैं, बल्कि सब श्रेणीके रईस, साहित्यप्रेमी, ग्रन्थकार, लेखक और अनेक पत्रोंके सम्पादक महोदय भी इस सभाकी शोभा बढ़ा रहे हैं। अतएव सभीका आन्तरिक कृतज्ञताके साथ हम लोग स्वागत करते हैं। आप सब लोगोंके सहयोगसे हमारा कार्य बहुत सुलभ हो सकता है, हमें अपने कामोंमें बहुत सहायता मिल सकती है, इसलिये आप सब सज्जनोंकी उपस्थितिसे हम लोगोंको बहुत आनन्द हो रहा है।

प्रियसज्जन, आज हम आप सब उस पवित्र प्रयाग नगरीमें एकत्रित हैं जो सनातनसे अघनाशिनी, शोक विनाशिनी और त्रयतापविध्वंसिनी कह कर प्रसिद्ध है। यह वह पवित्र भूमि है जो आयुर्वेदके आदि कारण ब्रह्माके द्वारा अनेक यज्ञोंके किये जानेसे प्रयाग नामसे विख्यात हुई है। यह उन तपोधन भरद्वाज ऋषिकी तपस्या भूमि है जिन्होंने संसारको आधि व्याधि प्रपीड़ित देखकर अपनेको भुला दिया था और ऋषि समूहकी मन्त्रणाके अनुसार इन्द्रसे आयुर्वेदकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये गयेथे। इस प्रकार संसारी लोगोंमें आयुर्वेदके प्रचारका सबसे प्रथम और महत्वका श्रेय इस पवित्र प्रयाग नगरीको ही प्राप्त है। यह वह नगरीहै जहां शिलादित्य ऐसे नरेश प्रत्येक छः वर्षमें अपना सर्वस्व दानकर धन्य

होते थे और रिक्त हस्त स्वदेशको जाकर अपने त्यागका अनुपम दृश्य सर्वसाधारणको दिखाते थे। महात्मा तुलसीदासने सज्जन समागमको प्रयागकी उपमा दी है और बहुत ही खूबीके साथ अपने कथनकी पुष्टि की है। सौभाग्यसे हम सब लोगोंको इस समय दोनों ही प्रयाग प्राप्त हैं। साक्षात प्रयागमें तो हम सब बैठे ही हैं किन्तु सज्जन-समागम रूपी प्रयागमें भी हम गोते लगा रहें हैं। ऐसे उभय प्रयागमें हम लोग आयुर्वेदचर्चाके लिये बैठे हैं यह उत्तम ही है। क्योंकि जैसे ऊपरके दोनों प्रयाग धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारो फलके दाता हैं उसी तरह आयुर्वेद भी उक्त चारों साधनोंको सुलभ करने वाला अपूर्व दानी है! साक्षात प्रयागमें सरस्वती लुप्त हैं; परन्तु 'भारतीभवनमें' बैठे हुए हमें अपने प्रयागके विषयमें उसकी कोई आशङ्का नहीं करनी चाहिये। यह सज्जन समागम रूपी वह प्रयाग है जिसे देखकर हमें चरक और सुश्रुतके समयका दृश्य स्मरण हो रहा है। हमको भासित हो रहा है कि उन ऋषि मण्डलियोंमें जैसे आयुर्वेदका मन्थन कर वैद्यक तत्वोंका सुन्दर नवनीत निकाला जाताथा उसी तरह आजके दृश्यसे भी उत्तम कार्य सिद्धि होनेकी आशा करना अनुचित नहीं है।

हमारा आयुर्वेद कल्पवृक्ष है; यदि उसकी छत्रछायामें रह कर भी हमारी इष्ट सिद्धि नहीं होती है तो दोष

कल्पवृक्षका नहीं हमारा है। हम अपनी अज्ञानता अथवा आलस्यके कारण इधर उधर संगृहीत चुटकिलोंके करील वृक्षोंमें अटक रहे हैं; कल्पवृक्षकी अगाध शक्तिकी ओर हमारा ध्यान ही नहीं है। हमारा आयुर्वेद हीनाङ्ग अथवा विकृताङ्ग नहीं बल्कि सम्पूर्ण और सभी अवयवोंसे युक्त है। उसके अष्टाङ्गकी अपूर्वता संसारके किसी भी वैद्यकमें खोजनेसे नहीं मिलेगी। पश्चिमी-पूर्वी संसारके सभी विद्वान एक स्वरसे स्वीकार कर रहे हैं कि हिन्दुओंकी आयुर्वेद विद्या संसारकी वैद्यकविद्याओंकी जननी है। वह एकमात्र हिन्दुओंकी निजकी विद्या है, वह किसीसे नहीं है; किन्तु संसारकी सम्पूर्ण विद्या उसकी पुत्री अथवा शाखा प्रशाखा मात्र हैं। वह अनादि है, उसके आविष्कारका समय निर्धारित करना मनुष्यकी शक्ति और कल्पनाके परे है। हम केवल यही कह सकते हैं कि ब्रह्माने प्रथम उसका स्मरण किया और फिर क्रमशः लोक-कल्याणार्थ वह संसारमें प्रचलित हुई। उसके क्रमवि-कासका इतिहास इतना प्राचीन है कि उसका स्मरण करनेसे हमें एक बार बहुत आनन्द उत्पन्न होता है।

किन्तु इस आनन्दके साथही दुःखकी बात है कि सैकड़ों वर्षसे हमारे आयुर्वेदकी उन्नतिका मार्ग रुका हुआ है। कोई भी विद्या हो जब तक उसकी आलोचना प्रत्या-लोचना, उसका ऊहापोह और उसके नित्य नये प्रयोग

होते रहते हैं तभी तक उसकी उन्नतिका मार्ग खुला रहता है। यही बात हमारे आयुर्वेदकी भी हुई है। इसे यद्यपि ब्रह्माने प्रथम स्मरणकर संसारमें प्रकट किया और एक हज़ार अध्यायोंमें एक लाख श्लोकोंसे पूर्ण आयुर्वेद नामका वैद्यक विज्ञान तैयार किया। तथापि इतने पर ही आयुर्वैदिक सिद्धान्तोंकी इति नहीं मानी गयी। वैद्यक सिद्धान्तोंके क्रमविकासमें आजकलके कुछ खोजियोंकी राय है कि वैदिक ऋषियोंने और उनके बादके आचार्योंने बराबर ढूंढ़ खोजका काम जारी रखा था। यदि हम ऋग्वेद और अथर्ववेदका सूक्ष्म दृष्टिसे परिशीलन करें तो हमें मालूम पड़ेगा कि इतिहास और मन्त्रोंके रूपमें उनमें किस प्रकार आयुर्वैदिक सिद्धान्तोंकी आदिम अवस्थाका पता लगता है। अथर्ववेदके कुछ मन्त्रोंसे मालूम पड़ता है कि पहले ऋषि लोग मन्त्रोंके द्वारा रोग आराम किया करते थे और जैसे औषधि प्रयोगमें किसी अनुपानकी आवश्यकता होती है, उसी तरह मन्त्र प्रयोगमें वे किसी वनस्पति या जड़ीकी सहायता लिया करते थे। मालूम पड़ता है पीछेसे उन्होंने देखा होगा कि रोगोंके दूर करनेमें वनस्पतियोंका असर भी कुछ कारणीभूत होता होगा। इसलिये स्वतन्त्र रूपसे वनस्पतियोंका प्रयोग करना आरम्भ हुआ और क्रमशः प्रयोग और अनुभव बढ़ते बढ़ते आजकी उन्नत चिकित्सा प्रणाली काममें

आने लगी। जिस समय मन्त्रौषधि और उसके बाद जड़ी बूटीकी औषधिविद्या उन्नति पा रही थी उस समय चिकित्साशास्त्रके दूसरे सिद्धान्त भी विकसित हो रहे थे। पश्चिमके खोजियोंका सिद्धान्त है कि आर्य लोग यज्ञोंमें पशुओंको बलि देते थे उस समय शरीरके भीतरी अङ्ग-प्रत्यङ्ग देखनेका उन्हें मौक़ा मिलता था। यही अनुभव शारीरशास्त्रका आरम्भ था। केवल पशुओंका शरीर ही नहीं बल्कि मनुष्य शरीरकी चीरफाड़ भी आर्यलोग करते थे। बल्कि यह कहना चाहिये कि अश्विनीकुमार अस्त्र-चिकित्साके ही वैद्य थे। क्रमशः इस विद्याने इतनी उन्नति की कि धन्वन्तरि सम्प्रदायके वैद्य छोटे मोटे रोगोंको भी अस्त्रचिकित्सासे आराम करते थे। उस समय इस चिकित्साकी इतनी धूम थी कि उसके सिद्धान्त ग्रन्थोंसे आज भी यूरोपियन डाक्टर बड़ा लाभ उठा रहे हैं और अपनी सर्जरी विद्या बढ़ा रहे हैं। इन तीनों प्रणालियोंके साथ एक चौथी विद्या भारतमें बढ़ रही थी और बढ़ते बढ़ते उसने वैद्यक-साम्राज्य पर भी बहुत कुछ दख़ल जमा लिया था। वह विद्या रसायन-विद्या है। धातुओंके तरह तरहके रासायनिक प्रयोग करते करते उनके पृथक्करण और तत्वानुसन्धानसे आचार्योंने अनुमान किया कि यदि अमुक तत्वप्रधान वस्तु अमुक बीमारीमें दी जाय तो अवश्य लाभ होगा। उस अनुमानने उन्हें

परीक्षाके लिये प्रेरित किया होगा। धीरे धीरे धातुओंकी जारणा, मारणाकी उन्नति हुई और रसौषधियोंका प्रचार बढ़ा।

यदि इसी प्रकार परीक्षा, प्रयोग और अनुसन्धानके काम जारी रहते तो नहीं कह सकते आज हमारी आयुर्वेद विद्याका प्रकाश कितना प्रखर होता। किन्तु ऐसे कामोंका होना राजाश्रय और प्रजाके उत्साह तथा विद्या-बुद्धि पर निर्भर करता है। बहुत दिनोंकी सुख समृद्धिके कारण देशकी चपलता कुछ कम हुई, धर्म विप्लव बढ़े और राजाओंका ध्यान विद्याओंकी उन्नति करनेकी ओर उतना नहीं रहा। विप्लवोंके कारणविद्वानोंकी संख्याका भी ह्रास हुआ; इसलिये देशकी मौलिक शक्ति—दिमाग़से नयी बातें शोचनेका काम, क्रमशः ढीला पड़ने लगा। बौद्ध ज़माने तक तो मालूम पड़ता है कि विद्यालयोंके अधीनस्थ औषधि-उद्यानोंमें और जङ्गलोंमें वैद्य लोग अपने विद्यार्थियोंको लेकर जड़ी बूटियोंकी परीक्षा किया करते थे; किन्तु धीरे धीरे यह क्रम घटा और पसारियोंपर ही औषधियोंके जुटानेका भार पड़ा। जिससे जड़ीबूटीकी विद्यामें वैद्य लोग नया प्रकाश डालनेमें असमर्थ हो गये। उधर अस्त्रचिकित्सा पर भी शनिकी दृष्टि पड़ी। बौद्ध ज़मानेमें पशुहिंसा-के विरुद्ध यहां तक लोगोंका झोंक बढ़ा कि रोग आराम करनेके लिये भी अस्त्रप्रयोग करनेकी प्रवृत्ति जाती रही।

उसका फल यह हुआ कि आज साधारण फोड़ा चीरनेमें भी वैद्योंका हाथ कांपता है। यद्यपि अस्त्रचिकित्सा बन्द होनेसे रोगियोंकी कोई विशेष हानि नहीं हुई; क्योंकि आयुर्वैदिक औषधियोंके प्रभावसे वैद्य लोग प्रायः सब तरहके रोग आराम कर सकते थे; तथापि इस प्रथाके बन्द होनेसे अस्त्रचिकित्सा और विशेष कर शारीरविद्याकी उन्नति पर कुठाराघात हुआ। यही हाल रासायनिक चिकित्साका हुआ। नागार्जुन आदि रससिद्धोंके कारण यह विद्या बहुत उन्नत हुई थी। परन्तु यह विद्या विशेष सम्प्रदायके कुछ चुने हुए लोगोंको आती थी; इसका प्रचार उन्होंने सर्वसाधारणमें कभी नहीं किया जिससे यह विद्या एक प्रकारसे लुप्त हो गयी। उन्नतिकी कौन कहे जिस दर्जे तक यह विद्या पहुँच गयी थी वहां भी स्थिर न रह सकी। जटिल और गुप्त अर्थ पूरित पारिभाषिक शब्दोंके कारण इस विद्याकी पुस्तकोंसे भी सर्वसाधारण पूरा लाभ नहीं उठा सकते। आजकल मन्त्रौषधिकी दुर्दशाका तो ठिकाना नहीं है बल्कि यह कहना चाहिये कि इस परसे लोगोंका विश्वास ही उठता जा रहा है! उसका कारण भी है। आजकल प्रायः नीच जातिके लोग ओझाई कर लोगोंको ठगते हैं। मन्त्रोंके नाम उनके अनगढ़न्त गँवारी भाषाकी शब्दयोजना मात्र है! वैदिक मन्त्रोंका प्रयोग ही उठ गया! इस प्रकार

चारो प्रकारकी चिकित्सा अधोगतिको प्राप्त हुई। नूतन आविष्कारोंके अभावमें स्वतन्त्र विद्वानोंका होना बन्द हुआ। जिससे वाग्भटके बाद स्वतन्त्र वैद्यक ग्रन्थ न बने। जो कुछ पहले ग्रन्थ बन चुके थे उनमें भी भेडु, जतूकर्ण, जनक आदिके तन्त्रोंका दर्शन भी हम लोगोंको नसीब नहीं है*। रहे सहे ग्रन्थोंके संग्रहमें ही मध्य कालीन वैद्योंने अपनी चतुराई और चालाकीसे ग्रन्थ निर्माण कर सन्तोष लाभ किया। किसीने रोगके हिसाबसे निदान, चिकित्सा आदि सब एक साथ रख नये ढङ्गका ग्रन्थ बनाया, किसीने बटिका, तैल, घृत आदिका प्रकरण अलग अलग कर ग्रन्थकार बननेका हौस पूरा किया, किसीने केवल औषधियोंका संग्रह किया, किसीने चुटकिलोंका संग्रह कर ग्रन्थकार बनना चाहा! सारांश आयुर्वेदके भण्डारमें नयी कौड़ी लानेका प्रबन्ध किसीने न किया। हां, ऐसे ग्रन्थोंसे वैद्यकका काम करनेवालोंकी सुविधा तो बढ़ी किन्तु यह सुविधा उन्हें सत्यानाशमें मिलानेका कारण हुई। इन संग्रह ग्रन्थोंने वैद्यक विद्याको पीछे ढकेला और वैद्योंको चौपट किया। एक अमृतसागर और इलाजुलगुर्बासे ही जब लोग वैद्य बन सकते हैं तब चरक, सुश्रुत अथवा वाग्भट पढ़नेका कष्ट कौन उठावे?

* सभापति कविराज गणनाथ सेन महादयसे मालूम हुआ कि तंजोरकी लायब्रेरीम भेडु संहिता और जर्मनीकी एक लायब्रेरीम जतूकर्ण संहिताका पता लगाहै। यदि प्रकाशित होकर ये हमारे सामने आवेंतो वह हमारे लिये सुदिन होगा।

चालीस पचास वर्ष पहले तक वैद्यकके लिये घोर अन्धकारका जमाना था। यद्यपि अब भी वैद्यक संसार निद्रित अवस्थामें है तथापि इधर कभी कभी करवट बदल देता है; बीच बीचमें चौंक पड़ता है। भारतमें अंगरेज़ी राज्य आनेसे जो सबसे बड़ी उत्तम देनगी हमें मिली है वह छापेखानोंका प्रचार है। इसके कारण कितने ही वैद्योंने अपनी विद्याका प्रयोग कर कई तरहके नूतन और ऋषि प्रणीत ग्रन्थ यथामति सुलभ रूपमें तैयार किये। और छापेख़ानोंमें छप छप कर वे सुलभ मूल्यपर बिकने लगे। लखनऊके मुन्शी नवलकिशोर प्रेसने सुलभ मूल्यमें ग्रन्थ प्रचार कर कमाल कर दिया! इधर बम्बईके श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, निर्णयसागर प्रेस, ज्ञानसागरप्रेस आदिने कुछ शुद्ध और दर्शनीय वैद्यक ग्रन्थ छापकर बड़ा काम किया। पुस्तकोंके सिवाय सामयिक पत्रोंके रूपमें भी वैद्यककी उन्नतिके कई बार प्रयत्न हुए। फरुखनगरके राजवैद्य पण्डित मुरलीधर शर्मा महोदयने 'आरोग्य सुधाकर' पत्र कुछ दिनों तक चलाया। कलकत्तेके राजवैद्य पण्डित श्रीनारायणशर्मा महोदयने 'आरोग्य सुधानिधि' चलाकर प्राचीन सिद्धान्तोंका प्रचार किया। स्वर्गवासी राजवैद्य पण्डित जगन्नाथ शर्मा महोदयने पांच वर्षों तक 'आरोग्य-दर्पणपत्र' चलाया। इसमें विशेषता यह थी कि कहीं कहीं पर स्वतन्त्र विवेचन मार्केका किया जाता था। आप

हीके लघुबन्धु और हमारे मित्र पण्डित वैद्यनाथ शर्मा महोदयने भी एक वैद्यकपत्र निकाला था किन्तु वैद्यक संसारकी उदासीनताके कारण अन्य पत्रोंका जो हाल हुआ वही चार महीनेमें ही हमारे मित्रके पत्रका हुआ। वैद्यक संसारकी उदासीनता आयुर्वेदकी उन्नतिमें बड़ी ही बाधा पहुँचा रही है। इस उदासीनताके कारण आयुर्वेदके क्षेत्रमें उसकी उन्नतिके सम्बन्धमें काम करनेकी हिम्मत भी नहीं पड़ती। यदि ऐसा न होता तो आयुर्वेदके सबसे बड़े पुरस्कर्ता, हिन्दी और नागरीके हितैषी आर्यभिषक, राजवैद्य, और सद्वैद्यकौस्तुभ पत्रोंके सञ्चालक स्वर्गवासी आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शङ्करदाजीशास्त्री पदे महोदय अपने बीस बाईस वर्षके प्रयत्नमें न जाने कितना कार्य कर डालते। पत्रोंके सिवाय विद्यालय और पाठशालाके रूपमें भी जिन लोगोंने आयुर्वेद प्रचारका प्रयत्न किया है, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना हम लोगोंका कर्तव्य है। आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शङ्करदाजीशास्त्री पदे महोदयने बम्बईमें जिस आयुर्वेद विद्यालयकी जड़ जमायी थी वह वर्तमान सञ्चालकोंके सदुद्योगसे उन्नत अवस्थामें है। मद्रासके डी० गोपालाचार्य महोदयने वैद्यक विद्यालय खोला है। कलकत्तेके डाक्टर मल्लिक महोदयने अपने मेडिकल कालेजमें आयुर्वेदका भी विभाग रख उपकार किया है। लाहौरके दयानन्द कालेजके स-

झ्लकोंने आयुर्वेदकी कक्षा खोलकर अन्य कालेजोंको देशहितका नया मार्ग दिखाया है। पीलीभीतके ललित-हरि विद्यालय, दिल्लीकी बनवारी वैद्यक पाठशाला और जयपुरके संस्कृत विद्यालयसे आयुर्वेदका बड़ा उपकार हो रहा है। स्वर्गवासी पण्डित जगन्नाथ शर्मा राजवैद्य महोदयने बहुत वर्षों तक वैद्यक पाठशाला चलायी थी। हमारे प्रयागकी हरदेव पाठशालामें भी वैद्यककी कक्षा है। देशमें और भी जहां ऐसा प्रयत्न हो रहा है वह सब अभिनन्दनीयहै। स्वर्गवासी शंकरदाजी शास्त्रीजी महोदयने वैद्यक सम्मेलनका मार्ग दिखाकर हम लोगोंका बड़ा उपकार किया है। इससे भिन्न भिन्न स्थानोंके वैद्य इकट्ठे होकर स्नेह वृद्धि कर सकते हैं। जिससे बहुतसी राय मिलाकर नये सिद्धान्त स्थिर करना सहज होता है। हमारे इस सम्मेलनकी कल्पना भी इसी नींव पर स्थापित हुई है।

इस समय हमारा कर्तव्य बहुत ही गम्भीर और उत्तर-दायित्वका है। हमारा कर्तव्यपथ सरल नहीं बल्कि कांटोंसे रुँधा हुआ है। हमारे कार्योंकी सफलताके साधन तो बहुत थोड़े हैं परन्तु विघ्नके सामान सबसे पहले हमीं लोगोंमें विद्यमान हैं; (शोक! शोककी ध्वनि) तथापि आज आप लोगोंकी कृपा और उत्साहके भरोसे सफलताकी आशा करना एकदम दुराशा न होगी। इस समय वैद्योंमें एक प्रकारकी उत्तेजना और उन्नतिकी उत्सुकता पायी जाती है। ऐसी

दशामें यदि स्थायी काम करनेका ढङ्ग जमा दिया जाय तो सम्भव है वह स्थायी हो और भविष्यमें उससे सफलता प्राप्त हो जाय। आज आप जिन महोदयको सभापति बनाना चाहते हैं उनकी योग्यता बहुत अधिक है। उनकी सलाहसे जो कार्य निश्चित होगा उसके स्थायी होनेकी ही आशा की जाती है। जिन लोगोंके हृदयमें आयुर्वेदकी उन्नतिके विचार उठा करते हैं उनके ध्यानमें सबसे पहले यह बात आती है कि एक ऐसी संस्था अवश्य होनी चाहिये जो निरन्तर आयुर्वेदकी उन्नतिके उपाय सोचे और काममें लावे। इसके लिये आप लोग एक ऐसी कमिटी बना सकते हैं जिसमें भारतके भिन्न भिन्न भागोंके वैद्यवर शामिल हों और उनकी सलाहसे महत्वके काम किये जायँ। एक बातकी आवश्यकताकी पूर्तिपर आप लोगोंका ध्यान अवश्य आकर्षित होना चाहिये। वह भविष्य वैद्योंकी परीक्षा और पढ़ाई क्रमका विचार है। आजकल वैद्यक संसारमें बड़ी धींगाधींगी है; चाहे जो वैद्य बन बैठता है। अतएव यह आवश्यक है कि भविष्य वैद्योंके लिये परीक्षाएँ नियुक्त की जायँ; जिससे योग्यता प्राप्त करने और वैद्यक विज्ञान सीखनेकी उत्तेजना मिलेगी। इस कामके लिये एक कौंसिलका बनाना आवश्यक है। आजके सम्मेलनसे आप लोगोंके ध्यानमें यह बात आरही होगी कि सम्मेलनसे कितना लाभ है, किस तरह

आपसमें मेलमिलाप और स्नेहकी वृद्धि हो सकती है। इसलिये आप लोगोंके हृदयमें यह विचार आप ही उठेगा कि प्रतिवर्ष वैद्योंका एक सम्मेलन हुआ करे। वैद्यक विद्याका प्रचार करनेके लिये और उपयुक्त रीतिसे पठनपाठनका काम होनेके लिये उपयुक्त ग्रन्थोंकी आवश्यकता है; उसकी पूर्ति पर भी आप लोगोंका ध्यान आकर्षित होना आवश्यक है। एक वैद्यक कोष, एक पूर्ण निघण्टु, वैद्य गाइड, वैद्यक डाइरेक्टरी और उपयुक्त निदान ग्रन्थकी आवश्यकता है। आजकल अस्पतालोंमें लोगोंको मुफ़्त दवा मिलती है; इसलिये उनसे अधिक लोग लाभ उठा सकते हैं। प्रत्येक वैद्य यद्यपि कुछ न कुछ दवा मुफ़्त बांटता है तथापि यदि यह काम किसी फण्डके द्वारा हो तो सुलभतासे हो सके और आयुर्वैदिक औषधियोंसे असंख्य गरीब भारतवासी लाभ उठा सकेंगे। सुना है कि बम्बईकी सरकार कोई क़ायदा डाक्टरोंके सम्बन्धमें बनाना चाहती है। सम्भव है उससे वैद्योंको हानि पहुंचे। इसलिये उसके विषयमें भी विचार कर आप लोगोंको सरकारसे प्रार्थना करनी चाहिये। और भी जो आवश्यक विषय होंगे उन पर आप लोग विचार करेंगे ही। मैं फिर भी प्रेम पूर्वक आप लोगोंका अभिवादन करता हूं और आशा करता हूं कि सभाका काम शान्ति और सफलताके साथ पूर्ण करनेमें आप लोग पूर्ण उद्योगी रहेंगे।

अब मैं श्रीमान कविराज गणनाथसेन महोदयसे अनुरोध करता हूं कि आप इस सम्मेलनके सभापतिका आसन मण्डित कर हम लोगोंको उपकृत करें।

सभापतिका चुनाव।

स्वागतकारिणी सभाके सभापति महोदयने कविराज गणनाथ सेन एम. ए. एल. एम. एस. विद्यानिधि कविभूषण महोदयसे सभापतिका आसन ग्रहण करनेका अनुरोध किया। इसके पश्चात जगन्नाथप्रसाद शुक्लने कहा कि महान कार्य योग्यके हाथोंमें जानेसे ही पूर्ण और सफल होते हैं। जिन्हें हम सभापति बनाना चाहते हैं उनकी योग्यता अगाध है। वे कलकत्तेकी आयुर्वेद सभाके प्रधानमन्त्री हैं, एम. ए. जैसी उच्च अङ्गरेज़ी शिक्षा और एल. एम. एस. जैसी उच्च डाक्टरी परीक्षा पास हैं। इतना होते हुए भी देशी वैद्यकके अनुसार वैद्यकी करना आपका वंशपरम्परागत व्यवसाय है। आपका आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञान पूर्ण है और आप देशी औषधियोंका ही व्यवहार करते हैं। आप नये आविष्कारोंसे पूर्ण शारीर और निदान ग्रन्थोंकी संस्कृतमें पूर्ति करनेका उद्योग कर रहे हैं। इस प्रकार आप नये और पुराने अनुभव, नयी और पुरानी विद्याके बीचमें प्रतिनिधि हैं; दोनोंकी सांकल एकमें मिलानेवाले हैं। आपके सभापति होनेसे सम्मेलन-

की शोभा है। आपके पिता कविराज श्री विश्वनाथ सेन विद्याकल्पद्रुम काशीके सुप्रसिद्ध कविराज थे। हमारे श्रद्धास्पद स्वर्गवासी पण्डित अम्बिकादत्त जी व्यासने आपके पितासे ही वैद्यक सीखा था। इस प्रकार आपके घरानेसे हम हिन्दीवालोंका घनिष्ट सम्बन्ध भी है। इसलिये मैं प्रार्थना करता हूं कि इस सम्मेलनके सभापति होनेके लिये आप ही उपयुक्त पात्र हैं!

इसके पश्चात कहा कि कोई यह न समझे कि यह सम्मेलन किसी सभासे प्रतिद्वन्द्विता करनेके लिये किया गया है। अथवा वैद्योंकी यह नयी सृष्टि है। हमारा सम्मेलन कई वर्षका प्राचीन है और इसके पहले दो शानदार जलसे क्रमसे नासिक और पनवेलमें क्रमशः बरांवस्टेटके कुँवर सरयूप्रसाद नारायणसिंह बहादुर तथा जयपुर राजकीय वैद्यक विद्यालयके प्रधानाध्यापक पण्डित गङ्गाधर जी शास्त्री महोदयके सभापतित्वमें हो चुके हैं। वैद्योंके सम्मेलनका सूत्रपात वर्षों पहले हो चुका है। अबसे बीस पच्चीस वर्ष पहले आजसे भी अधिक वैद्यकके लिये सङ्कटका समय आया था। जैसे आज डाकृर लोग सरकारमें अपनी प्रतिष्ठाकी रजिस्ट्री कराकर देशी वैद्योंको पर्यायसे अयोग्य बनानेका पेंच लगा रहे हैं वैसे ही उस समय अपने षड्यन्त्रसे वे वैद्यों और वैद्यक व्यवसायको रसातल पहुँचा देना चाहते थे। उस समय भी डाकृरोंका आन्दो-

लनस्थल बम्बई नगरी थी। उस समय डाकृरोंने चिल्लाना आरम्भ किया था कि वैद्योंको कुछ नहीं आता ; सरकार उन्हें चिकित्सा-व्यवसाय न करने दे। आश्चर्यकी बात तो यह है कि सर्वसाधारणका झुकाव भी डाकृरोंकी ओर हो गया था! उस समय वैद्योंका पक्ष लेकर महाराष्ट्रवीर स्वर्गवासी आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शङ्करदाजीशास्त्री पदे महोदय खड़े हुए थे और अपने सतत उद्योगसे उन्होंने डाकृरोंके आन्दोलनको निर्जीव कर दिया था (करतलध्वनि) यही नहीं बल्कि अपने मासिकपत्र और सभा सम्मेलनोंके द्वारा उन्होंने सर्वसाधारणके हृदयपर वैद्योंका विश्वास बढ़ाया और डाकृरों पर भी इतना प्रभाव जमाया कि जो पहले वैद्यों और आयुर्वेदके विरुद्ध आन्दोलन करते थे वे ही वैद्योंकी योग्यता स्वीकार करने लगे और आयुर्वेदकी श्रेष्टता मानने लगे! सो भी यहां तक मानने लगे कि अनेक डाकृर देशी औषधियोंका व्यवहार करने और शास्त्री जीके कामोंमें मदद देने लगे। इसकी सत्यता आप लोग इसीसे जान लेंगे कि उनकी स्थापित आयुर्वेद-विद्यापीठके सभापति बम्बईके सुप्रसिद्ध डाकृर सर भालचन्द्रकृष्ण भाटवडेकर महोदय थे और उन्होंने जो आयुर्वेद-विद्यालय स्थापित किया था वह आज भी बम्बईके कितने ही प्रतिष्ठित वैद्यों और डाकृरोंके उद्योगसे सफलता पूर्वक चल रहा है (करतलध्वनि)। इस प्रकार जब

शास्त्री जीने बम्बई प्रान्तमें सफलता प्राप्त की तब उन्होंने अपने कार्यको भारत व्यापी बनाना चाहा। इसके लिये उन्होंने हिन्दी—मराठी और गुजराती भाषाओं तथा उन भाषाओंके जाननेवालोंमें घनिष्टता बढ़ानेके लिये 'भारत-धर्म' त्रैभाषिक पत्र निकाला। वैद्योंमें उत्तेजना उत्पन्न करनेके लिये हिन्दीमें 'सद्वैद्यकौस्तुभ' पत्र निकाला और भारतव्यापी वैद्यक सम्मेलन करनेकी नीव डाली। उनका तीसरा वैद्यक सम्मेलन पवित्र काशी नगरीमें होनेवाला था और इसीलिये वे प्रयागमें आ ठहरे थे; परन्तु यहां ही उनका स्वर्गवास हो गया और अब तक तीसरे वैद्यक-सम्मेलनका काम रुका रहा। आज प्रयाग धाममें इस सम्मेलनके होनेसे उनका आत्मा सन्तुष्ट होगा। इस प्रकार हमारा वैद्यक सम्मेलन भारतीय वैद्यक संसारमें नयी चीज़ अथवा नया हौआ नहीं है (इसी समय सम्मेलनमें कितने ही मुखोंसे निकला कि नहीं यह हमारा तीसरा वैद्यक सम्मेलन है) बल्कि उपस्थित सज्जनोंके अनुमोदनके अनुसार वैद्योंके सम्मेलनका यह तीसरा प्रयत्न है। हम लोग शास्त्री जीके ढङ्ग पर आयुर्वेदकी उन्नतिका प्रयत्न करना चाहते हैं। इस प्रयत्नमें जिसकी सहानुभूति हो, फिर चाहे वह जिस जाति, सम्प्रदाय, या धर्मका हो, वह हमारा मित्र सहायक और साथी है। ऐसे सम्मेलनके लिये जैसे सभापतिकी आवश्यकता है

कविराज महोदय वैसे ही हैं इसलिये आपका सभापति होना सर्वोत्तम है। चमरौलीके पं० सूर्यप्रसाद वाजपेयी, जबलपुर के पण्डित गोविन्दप्रसाद जी शास्त्री, मेरठके आयुर्वेद मार्तण्ड पण्डित सूर्यप्रसाद शर्मा वैद्य, विजयगढ़के बाबू राधाबल्लभ वैद्य, लाहौरके पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा तथा पटनेके पण्डित जगन्नाथप्रसाद जी आदि सज्जनोंने इसका समर्थन किया। अतएव कविराज महोदयने सभापतिका आसन ग्रहण कर एक खासा व्याख्यान शुद्ध हिन्दीमें दिया। आपके उठते ही सभामें जयजयकार और तालियोंकी गड़गड़ाहट हुई।

सभापतिका व्याख्यान।

आपने अपने व्याख्यानमें स्वागत और जलूसका ज़िक्र कर सामयिक शिष्टाचारके अनुकूल भाषण किया और कहा कि यह जो सन्मान हुआ है वह मेरा नहीं बल्कि उस आयुर्वेदका है जिसका गौरव हम और आप सब लोगोंके हृदयमें निवास कर रहा है। सभापति तो केवल सभादास है; सभाकी सेवा करना ही उसका कर्तव्य है। प्रयाग सब तरहसे पवित्र भूमि है; संसारमें आयुर्वेदके प्रचारकी कीर्ति भी प्रयागके ही हिस्से हैं; क्योंकि भरद्वाज ऋषिकी यह तपोभूमि है और वेही संसारके कल्याणके लिये पहले इन्द्रसे आयुर्वेदका उपदेश ग्रहण कर

आये थे। ऐसे पवित्रस्थानमें एकत्रित हुए आप लोगोंके सङ्गममें अवगाहन कर मैं भी पुनीत और कृतार्थ होने आया हूं। यह समय हम लोगोंके हृदयमें आनन्दकी वृद्धि कर रहा है किन्तु दुःख और शोककी केवल एक बात यह है कि भारतके एक श्रेष्ठ वैद्यरत्न कविराज विजयरत्न सेन महोदयका अभी इसी सप्ताहमें स्वर्गवास हुआ है! आप मेरे ज्येष्ठ बन्धु सदृश थे। आयुर्वेदका प्रेम और उसके उद्धारके विचार उनके हृदयमें इतने बद्धमूलथे कि अन्त समय तक वे उसकी चर्चा करते रहे और कलकत्तेकी जिस आयुर्वेद सभाके वे सभापति थे उसके सञ्चालनके विषयमें पूछताछ करते रहे। उनका उपदेश है कि आयुर्वेदके उद्धारके लिये सङ्घशक्तिका होना आवश्यक है। आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शङ्करदाजी शास्त्री पदे महोदयका उदाहरण अभी आप लोगोंको मन्त्री महोदयने सुनाया हीहै। इसमें सन्देह नहीं कि सङ्घशक्तिसे यदि तत्क्षण सफलता न भी दिखे तौभी यह निर्विवाद है कि हमारी भविष्य सन्तान उसके द्वारा अवश्य अपनी उन्नति साधन करेगी। बीस पचीस वर्षसे बङ्गाल और अन्य प्रान्तों तथा इस प्रान्तोंमें वैद्यककी उन्नतिका प्रयत्न हो रहा है। परन्तु अब तक कोई उपयुक्त पुस्तकालय अथवा आयुर्वैदिक अस्पताल स्थापित नहीं हुआ। यथार्थमें इनकी बहुत आवश्यकता है। हम सब भाई हैं; सब भाइयोंको एकमत होकर काम करना चा-

हिये। अब तक राजपुरुषोंकी औरसे कोई ऐसी कार्यवाही नहीं हुई जिससे हमारे आयुर्वेदकी उन्नतिके प्रयत्नमें बाधा उपस्थित हो। आयुर्वेदकी उन्नति और रक्षा करना मानों देशकी रक्षा करना है क्योंकि अब भी आयुर्वेदकी चिकित्सासे देशके करोड़ों मनुष्योंका कल्याण हो रहा है। इस गिरी दशामें भी जब हमारा आयुर्वेद देशकी रक्षाकर रहा है तब उन्नत अवस्थामें न जानें वह हमारा कितना अधिक उपकारी होगा। कोई यह न समझे कि हमारा आयुर्वेद केवल भारतके ही लिये है बल्कि उसका उपदेश सम्पूर्ण जगतके लिये कल्याणकारी है। डाकृरी दवाका सेवन करना मानों सुरा सेवन करना है। इससे देशका धन और धर्म दोनों नाश होता है। डाकृरी दवाकी एक खुराकमें कमसे कम ॥) शराब अवश्य पेटमें जाती है। यदि दिनमें चार बार दवा लीजाय तो करीब आधी छटांक सुरा पेटमें गयी। इससे स्पष्ट है कि दवाके असरके साथ ही सुराका बुरा परिणाम भी हमारे शरीरको भोगना पड़ता है। आयुर्वेदकी चिकित्सा भारतके लिये अनुकूल है। आयुर्वेदके अनेकानेक विषय अभी तक डाकृरीमें आविष्कृत नहीं हुए। डाकृर सर हार्वी तथा अन्य पश्चिमी विद्वान हमारे ऋषियोंकी समता नहीं कर सकते। अतएव उनका आविष्कार भी उतने ऊंचे दर्जेका नहीं है। दो चार सम्मेलन करनेसे आयुर्वेदकी उन्नति नहीं होगी

बल्कि स्वार्थ त्यागके साथ सतत प्रयत्न करते रहनेसे होगी। इस कार्यमें परस्पर फूट और ईर्षा द्वेष कदापि नहीं होना चाहिये। अपनी उन्नतिकी इच्छासे आयुर्वेद दरवाज़े पर खड़ा आप लोगोंका मुँह जोह रहा है; उसे आश्वासन दीजिये; उसे उन्नतिका विश्वास कराइये। इत्यादि

पहले दिन अतिकाल हो जानेसे सभापति महोदयकी केवल मौखिक वक्तृता ही हो सकी। आपने अपनी लिखी हुई स्पीच दूसरे दिन पढ़ सुनायी। स्पीच बहुत ही महत्व पूर्ण और वैज्ञानिक विषयोंसे पूर्ण थी। सभी लोग बड़े ध्यानसे स्पीच सुन रहे थे। ज़रा भी किसी तरहकी कानाफूसी या शब्द होनेसे लोग विरक्त हो उठते थे और स्पीच सुननेमें बाधा पहुँचनेसे चिढ़से जाते थे। सुप्रसिद्ध रसायनशास्त्री प्रोफेसर महेशचरण सिंह स्पीचके नोट लेते जाते थे और जहां कुछ उन्हें शक होता या किसी बातको विशेष जाननेकी इच्छा होती तो बीचमें ही पूछ बैठते थे। सभापति महोदय उसी समय उनका समाधान करते और धारावाहिक रूपसे प्रमाणोंकी झड़ी बांध देते थे। शोक है कि आपकी उन सब मुखाग्र कही हुई बातोंके नोट पूरे नहीं लिये जा सके। पूर्वी और पश्चिमी विज्ञानका मिलान और दोनोंके भेद आपने बड़ी खूबीसे दिखाये और आयुर्वेद विज्ञानकी श्रेष्टता प्रतिपादित की। आपकी लिखी हुई स्पीच अन्यत्र उद्धृतकी गयी है।

सबजेक्ट कमिटी।

सभापति महोदयकी वक्तृता होने के बाद सबजेक्ट कमिटी अर्थात विषय निर्धारिणी समितिका सङ्गठन हुआ और उसी समय प्रतिनिधियों को जलपान आदि कराकर सबजेक्ट कमिटी आरम्भ होगयी। इसमें सभी प्रान्तों और स्थानों के ५० प्रतिनिधि रक्खे गये। इस कमिटी ने दूसरे दिन के लिये प्रस्ताव और उनका मसविदा तय किया।

दूसरा दिवस।

कार्यारम्भके पहले पण्डित सिद्धिनाथ दीक्षितने अपनी रचित कविता स्वयं पढ़कर सुनायी। इसके बाद सभापति महोदयने पहला प्रस्ताव उपस्थित किया। इस प्रकार क्रमशः सब प्रस्ताव उपस्थित किये गये। स्टैण्डिङ्ग कमिटीके नामकरणको छोड़ कर अन्य किसी विषय पर विरुद्ध वादविवाद नहीं हुआ केवल नामकरणका विषय अधिक वोटसे पास हुआ। शेष सब प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास हुए। आजका काम सबेरे और अपरान्ह दो बार हुआ। इसलिये दूसरी कविता अपरान्हकी सभा आरम्भ होने पर पढ़ी गयी।

ईश प्रार्थना और वैद्योंको प्रोत्साहन।

हे करुणानिधि जन सुखदायक, मङ्गलमुद आनँदकारी।
तवमहिमा विस्तार पार नहिं, शेष शारदा कहि हारी॥

उद्भव पालन नाश आप ही, क्षणमें कर बतलाते हैं।
समय समय पर अपनी अद्भुत, लीला सबहिं दिखाते हैं॥
जब भक्तोंकी आरत वाणी, आप कभी सुन पाते हैं।
पाते हैं विश्राम न क्षणहू शीघ्र जगतमें आते हैं॥
जब जब जिसके द्वारा जो जो, आपकृत्य करवाते हैं।
तब तब वैसी सुमति आप ही, उसके उर उपजाते हैं॥
वैद्यककी हीनावस्था जब, स्वयं आपने देखी है।
तब सेवकगण हृदय बीच शुचि, सुमति यही अवरेखी है॥
'भारतकी इस गिरी दशामें, जब जब लोग सुधरते हैं।
विद्याधर्म समाज जातिकी हित चिन्ता नित करते हैं॥
तब क्या आयुर्वेद हेत हित, सबका है कर्तव्य नहीं।
सोचें जो उन्नतिके साधन, अवनति पथसे वचे कहीं॥'
प्रभु इच्छा उद्देश मानि यह, जो सब सभ्य पधारे हैं।
अपने अपने भाव मनोगत, जो निज हियमें धारे हैं॥
बिन सङ्कोच विचार आज सब, प्रकट हिये सों करिदीजे।
त्यागि द्वेष अभिमान सबे बिधि, एकएक सों मिलि लीजे॥
हैं सब ऋषि सन्तान आप क्या, आज हमें बतलाना है?
केवल उनका अंश बन्धुवर, लाय सबहिं दिखलाना है॥
धन्वन्तरि आत्रेय प्रजापति, इन्द्र आदिने जो भण्डार।
प्राप्त किया था अमित कष्टसहि, करि बहुविधि प्रसन्नकरतार॥
ताकी पूँजी पास आपके, है पै नहिं चमकाते हो।
यासों तात जगतके हियमें, श्रद्धा नहिं उपजाते हो॥

वैद्यकके जो ग्रन्थ मनोहर ऋषियोंने निरधारे हैं।
पाठन पठन होत नहिं उनका, एक प्रकार विसारे हैं।
अमृतसागर, दीनचिकित्सा, आदि इलाजुल गुरुबाको।
करि परिशीलन बार एकही, लिखते हैं नुसखा बांको।
बिन विज्ञान आधुनिक ऐसे, जितने ग्रंथ दिखाते हैं।
वैद्यकके सुखदायक पथमें, ये कण्टक फैलाते हैं।
ह्यां तक अभी क्षेम है भाई, पै आगे अब सुनिये नेक।
दया धर्म कर्तव्य त्यागि कै, नहिं जानैं विवेक अविवेक॥
वाइन, स्प्रिट, आयल बहु लै, मिक्श्चर खूब बनाते हैं।
मनमाने कर नामकरण हू, नोटिस शीघ्र छपाते हैं।
सब रुज नाशक एक औषधी, अपनी वही बताते हैं।
आ भोले भाले कितने ही, बातोंमें फँस जाते हैं॥
पाय पारसल सजी सजाई, उत्सुक शीशी लेते हैं।
और कमाई निज गाढ़ीका, पैसा इनको देते हैं॥
वैद्यकके हर्ता कर्ता जो, ऐसे बहुत दिखाते हैं।
जो कोरी निजधर्म डींगकी, बातैं सबै सुनाते हैं।
पै ये धर्म, देश वैद्यकके, घातक पैदा होते हैं।
द्रव्य हेत निज धर्म गवांकर, पाप बीज नित बोते हैं॥
हे हे बन्धुवरो अब उनका, आप अनुसरण मत कीजै।
बहुत सो चुके प्रात भया अब, आलस निद्रा तजि दीजै॥
जो इस समय उपाय करो तो, उन्नति ध्रुव कर जावोगे।
नहीं तो समय चूककर प्यारे, पीछे सब पछिताओगे॥

करिये टुक न विलम्ब मान्यवर, समय यही अब कहता है।
लखि मारुत गति पीठि करैया, सदा सजग जग रहता है॥
कल करना सो आज कीजिये, आज काज सो करो अभी।
उठो उठो प्रियबन्धु! बांधिकटि, वैद्यक उन्नतिकरोसभी॥
आयुर्वेद चिकित्साके प्रति, यदि सुप्रेम हिय धरते हैं।
तौ स्वदेशहित मिलकर करिये, यही विनय हम करते हैं॥

सिद्धिनाथ दीक्षित।

प्रतिनिधियोंसे निवेदन।

धन्यवाद ईश्वरका सब विधि, अपने हृदय मनाते हैं।
आयुर्वेद प्रचार जानकर, बार बार हरषाते हैं॥ १॥
धनि धनि आयुर्वेद प्रचारिणि! जो यह समय दिखाया है।
वैद्यवरोंका अनुपम सङ्गम, सङ्गम सम मन भाया है॥ २॥
सुरसरि यमुनाके सङ्गममें, दरस परससे पाप छटैं।
आयुर्वेदविदोंके सङ्गम, आर्य्य जाति तन ताप हटैं॥ ३॥
पर विनती सब वैद्यवरोंसे, हाथ जोरके करता हूं।
अपने तुच्छ विचार सभा बिच, श्रीचरणोंमें धरता हूं॥४॥
मान्यवरो! यह वही भूमि है, तपजप ऋषि जहँ करते थे।
निज स्वारथको तुच्छ जानि तजि परस्वारथ चित धरते थे॥५॥
जहां बैठकर ऋषि मुनियोंने, आयुर्वेदोद्धार किया।
निज अनुभवका कोश खोलकर, देश विदेश प्रचार किया॥६॥
वहां बैठकर हमसब मिलजुल स्वयं हिताहित निजसोचैं।
करि विचार बहुभांति भांतिसे, आर्य्य जातिके दुखमोचैं॥७

शाखा सभा बनाय बहुतसी, ग्राम ग्राम विस्तार करौ ।
आविष्कार करौ नित नूतन, भारत बीच प्रचार करौ ॥८
तीर्थराज पर आय आय सब पाय "सुधानिधि" पान करौ।
तन मन सों निज उन्नतिके हित, पढ़ौ पढ़ाओ ध्यानधरौ॥९
विनती है ज्ञानेन्द्रदत्तकी, बहु सोये अब तौ जागौ ।
यहि नौकाके बाहक होकर बीच धारमें क्यों त्यागौ ॥१०

आयुर्वेदविदानुदासः,
ज्ञानेन्द्रदत्त शर्म्मा वैद्य ।

धन्यवाद* ।

दोहा--धन्य सभा धनि सभापति, धनि सम्मेलन आज ।
आयुर्वेदोद्धार हित, जुरा जो आज समाज ॥ १ ॥
कवित्त–धन्य यह प्रयाग जहँ देशनके वैद्यराज,
मिलि मिलि आज सम्मेलन बनायो है ।
आयुर्वेद विद्याके प्रचार हेतु सब मिलि,
सोचि सोचि यत्न सब सभामें सुनायो है ॥
बहुरि बिचार सभापति महाराज करि,
आयुर्वेद उन्नतिके कार्य मन लायो है ।
ईश्वरसे प्रार्थना करत माताभीख वैद्य यहि,
सम्मेलनकी उन्नति मनायो है ॥ २ ॥
माताभीख पांडे वैद्य प्रतापगढ़ (अवध) ।

---

* यह कविता तीसरे दिन कार्यारम्भके समय पढ़ी गयी ।

पहला प्रस्ताव ।

यह सम्मेलन सम्राट पञ्चम जार्ज और सम्राज्ञीके भारतागमन पर हर्ष प्रकट करता है और आशा करता है कि यह आगमन भारतकी सुख समृद्धिका कारण होगा ।

प्रस्ताव कर्ता-सभापति

सर्व सम्मतिसे स्वीकृत ।

दूसरा प्रस्ताव ।

यह सम्मेलन महामहोपाध्याय कविराज श्री विजयरत्नसेन (कलकत्ता) पण्डित जगन्नाथ शर्मा राजवैद्य (प्रयाग) पण्डित गोविन्दराज दिनकर दाजी शास्त्री पदे (बम्बई), लाला ठाकुर प्रसाद वैद्य (प्रयाग) और पण्डित विश्वेश्वर दयालु जी दीक्षित वैद्य (टेढ़ा उन्नाव) महोदयकी असामयिक मृत्युपर हार्दिक शोक और उनके कुटुम्बियोंके साथ समवेदना प्रकट करता है। सम्मेलनकी समझमें इनकी मृत्युसे आयुर्वेदकी बहुत हानि हुई है।

सम्मेलनके मन्त्री इस प्रस्तावकी एक एक नकल उक्त स्वर्गीय सज्जनोंके कुटुम्बियोंके पास भेजें।

प्रस्ताव कर्ता-सभापति

सर्वसम्मतिसे स्वीकृत ।

तीसरा प्रस्ताव ।

इस सम्मेलनकी सम्मतिमें एक ऐसी 'परीक्षा समिति' स्थापित करनेकी आवश्यकता है जो वैद्यक शिक्षा और परीक्षाका क्रम निश्चित करे। इसका प्रबन्ध स्थायी समिति (स्टैण्डिङ्ग कमिटी) के अधीन रहेगा ।

प्रस्ताव कर्ता--श्रीयुक्त राधावल्लभ जी वैद्य विजयगढ़ ।
अनुमोदन कर्ता-पं० रामेश्वरजी मिश्र वैद्य कानपूर ।
समर्थन कर्ता-पं० ठाकुर प्रसाद शर्मा वैद्य दारागञ्ज ।

(१) प्रस्ताव उपस्थित करते हुए श्रीयुक्त बाबू **राधाबल्लभ जी वैद्य** ने एक व्याख्यान दिया; जिसका सारांश यह है कि:-आयुर्वेद शास्त्रोंमें शरीर रक्षाके लिये अहर्निश प्रयत्न करनेको कहा गया है। प्राचीन पठन पाठन शैली आजकलकी सी नहीं थी । उस समयके सभी वैद्य कर्तव्य परायण होते थे और शिष्योंको निष्कपट हो विद्या सिखाया करते थे । आज कल बिलकुल विपरीत अवस्था है। आयुर्वेद शास्त्रोंके पठन पाठनका एक प्रकारसे अभाव है। पहले धनी और और राजाओंसे आश्रय पाकर ऋषि और गुरु लोग विद्यार्थियोंको पढ़ाया करते थे अब राजाश्रय बन्द होनेसे गुरूओंको कोई उत्साह प्रदान करने वाला नहीं है । सरकारी सहायता पाकर जैसे मेडिकल कालेज वगैरह चल रहे हैं उसी

तरह जब तक आयुर्वेदकी शिक्षाके लिये कालेज न हों तब तक उचित शिक्षा प्रचार नहीं होगा। जयपुर, दिल्ली, पीलीभीत, आदि स्थानोंमें जहां वैद्यक विद्यालय हैं वहां उनके द्वारा किसी अंशमें वैद्यक विद्याकी उन्नति हुई भी है। दश वर्ष पहले उक्त विद्यालयोंमें थोड़ी संख्यामें विद्यार्थी पास होते थे; किन्तु इस समय पास होने वाले विद्यार्थियोंकी संख्या बढ़ रही है। इसका कारण परीक्षा पद्धतिका क्रमविकास है! यदि परीक्षा लेनेके लिये संस्थाएं स्थापित हों तो बहुत लाभ होगा और वैद्यकविद्याकी पठनपाठन शैली एक क्रमके साथ होने लगेगी। इससे शिक्षापद्धति भी सुधरेगी और परीक्षा पास कर अधिकार प्राप्त वैद्य भी देशमें तैयार होंगे।

(२) इसका अनुमोदन करते हुए कानपुरके **वैद्य-कुलभूषण पण्डित रामेश्वर जी मिश्र**ने कहा कि इस वर्ष हमारे सम्राट पञ्चम जार्ज भारत पधारनेवाले हैं। उनसे प्रार्थना करनी चाहिये कि डाक्टरी शिक्षाके समान हमारी वैद्यक शिक्षाकी भी पद्धति जारी करें। इतना करने पर भी मैं यह भी कहूंगा कि तब तक हमें अपनी शिक्षा समिति स्थापित करनी चाहिये और उसके द्वारा परीक्षाकी पद्धति जारी कर देनी चाहिये।

(३) इसका समर्थन करते हुए प्रयाग दारागञ्जके **पण्डित ठाकुर प्रसाद जी शर्मा** वैद्यने कहा कि

परीक्षाके बिना बड़ी धींगा धींगी हो रही है। जो चाहता है वही वैद्य बन जाता है। उनमें बहुतेरे तो ऐसे होते हैं जो आयुर्वेद और वैद्योंकी हँसी कराते हैं। इसलिये शिक्षा समिति स्थापित कर वैद्यक शिक्षा और परीक्षाकी पद्धति प्रचलित करना नितान्त आवश्यक है।

(४) इसी विषयमें बोलते हुए दर्भङ्गाके पण्डित सुरेन्द्र मोहन जी वैद्यने कहा कि श्रीमान सम्राट पञ्चम जार्जसे प्रार्थना करनेसे कोई फल न होगा। उनकी देशीय और जातीय पश्चिमी वैद्यककी उन्नति है ही इसलिये अपने वैद्यककी उन्नतिका प्रयत्न हमें स्वयं करना होगा।

(५) सभापति महोदयने कहा कि यदि आयुर्वेदके कुलपीठोंमें महासमितिके मन्तव्यके अनुसार शिक्षा दी जाय तो २०-२५ वर्षमें आयुर्वेदकी बहुत उन्नति हो सकती है। पंञ्जाब और बङ्गालकी युनिवर्सिटीमें आयुर्वेदकी शिक्षाके लिये दरखास्त देनेका विचार होरहा है इस प्रान्तमें भी प्रयत्न होना चाहिये। किन्तु अपने पैरों खड़े होना सबसे उत्तम है। हमें प्रयत्न करना चाहिये कि हमारे वैद्य भी डाक्टरोंकी बराबरीके हों। आयुर्वेदीय चिकित्सा मूढ़ गर्भ आदिमें पीछे है। यदि वैद्य सब बातोंमें पूर्ण होंगे तो सरकारको भी मानना पड़ेगा कि वैद्य डाक्टरोंके बराबर हैं।

सभापति महोदयके अन्तिम विवेचनके पश्चात• प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

चौथा प्रस्ताव।

(क) इस सम्मेलनकी सम्मतिमें प्रति वर्ष भारतीय वैद्योंका एक सम्मेलन होते रहना आवश्यक है। इस कार्यको सम्पादन करनेके लिये आज ही एक स्थायी समिति बनायी जाय जिसके कार्य सञ्चालक निम्न लिखित सज्जन होंगे।

सभापति—कविराज श्री गणनाथ सेन एम. ए. एल. एम. एस. विद्यानिधि, कविभूषण, वैद्यावतंस, कलकत्ता.।

उपसभापति—(१) पण्डित शिवरामजी पाण्डे वैद्य प्रयाग.

(२) पण्डित वैद्यनाथ शर्मा राज-वैद्य प्रयाग.

मन्त्री—जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल प्रयाग.

संयुक्त मन्त्री—(१) ठाकुर रामेश्वर नाथ चतुर्वेदी,

(२) बाबू जयकुमार जैनी वैद्य प्रयाग.

आय व्यय निरीक्षक—लाला छेदी लाल गुप्त प्रयाग.।

(ख) इस समितिके सभासद समस्त भारतके वैद्य और आयुर्वेद प्रेमियोंमेंसे चुनेजावेंगे जिनकी संख्या १०१ होगी। वे सभासद पृथक प्रान्तोंसे निम्न संख्यामें चुने जावेंगे।

१	संयुक्त प्रान्त–२५		१०	सिङ्गल	– १
२	वङ्गदेश –	१५	११	बड़ौदा	– २
३	राज पूताना–	६	१२	काश्मीर	– ३
४	पञ्जाब –	८	१३	नैपाल	– २
५	मदरास –	५	१४	ब्रह्मदेश	– २
६	विहार --	५	१५	मैसूर	– १
७	उड़ीसा –	२	१६	गुजरात काठियावाड़	३
८	बम्बई –	८	१७	मध्यप्रदेश	– ७
९	मध्यभारत–	५	१८	सिन्ध	– १

(ग) मन्त्री प्रत्येक प्रान्तके वैद्योंसे पत्र व्यवहार कर हर एक प्रान्तके वैद्योंकी नामावालीसे समितिके सभासद चुन लेवें।

(घ) इस कमिटीको अधिकार दिया जाताहै कि वह नियमावली बनाकर आगामी सम्मेलनमें उपस्थित करे।

(ङ) सम्मेलनकी सम्मतिमें प्रत्येक प्रान्त और नगरोंमें आयुर्वेदकी उन्नति और प्रचार करनेवाली सभाएं स्थापित होना आवश्यक है।

(च) इस समितिका नाम आयुर्वेद महामण्डल (स्टैण्डिङ्ग कमिटी) समझा जाय और इसका कार्यालय प्रयागमें रहे।

प्रस्ताव कर्ता-पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा सम्पादक
देशोपकारक लाहौर

अनुमोदन कर्ता—जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल।

समर्थन कर्ता-(१) पं० शिवनारायण जी मिश्र कानपुर
,, (२) पं—लाधूराम जी शर्मा कलकत्ता

(१) पण्डित ठाकुरदत्त जी शर्माने प्रस्ताव उपस्थित करते हुए कहा कि संसारके सब देशोंने चिकित्सा शास्त्रको सर्वोपरि श्रेष्ठ माना है। लाहौर के मेडिकल कालेजमें पहले एक कक्षा वैद्यक और एक तिब्ब यूनानी-के लिये खोली गयी थी परन्तु वैद्य और हकीमोंने कहना आरम्भ किया कि ये कक्षाएं हमें समर्पित कर दो। अन्तमें कुछ भी हाथ न आया! आयुर्वेद वेदकी वाणी अतएव परमात्माकी वाणी है। हमारे प्राचीनग्रन्थोंका पता नहीं है; जो कुछ हम कंठस्थ कर रखते थे वही बच रहा है; तथापि हमारे प्राचीन गौरवका स्मरण करानेके लिये वह भी बहुत है। सन् १७०० ईस्वीमें डाक्टर हार्वीने शरीरके भीतर खूनके दौरेका हाल दरियाफ़्त किया था परन्तु हिन्दुओंको यह बात दो लाख वर्ष पहलेसे मालूम है। सुश्रुतमें इसका वर्णन स्पष्ट लिखा हुआ है। ज़र्राही अर्थात चीर फाड़में वैद्योंका पूरा दखल था। पुराने ज़मानेमें सर्जन और फिजिशियन पृथक पृथक थे। यदि कोई कहे कि हमारा चिकित्साशास्त्र पहले

पूर्ण नहीं था तो यह बात बिलकुल ग़लत है। आज अमेरिकाके डाक्टरोंने स्थिर किया है कि बच्चोंकी मृत्युका कारण सूतिकागृहमें बिल्लियोंका जाना भी है; परन्तु हज़ारों वर्षसे हमारी स्त्रियां तक जानती हैं कि सूतिकागृहमें बिल्लियोंका जाना हानिकारक है। इसलिये सूतिकागृहके पास बिल्ली कभी फटकने तक नहीं पाती। सूक्ष्म कीटाणुओंका वर्णन भी आयुर्वेदमें पाया जाता है। यह सब कुछ है; परन्तु आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये परस्पर प्रीति बढ़ानेकी आवश्यकता है। ईर्षा द्वेष त्यागकर उत्तमोत्तम औषधियां एक दूसरेको प्रीति पूर्वक बतानी चाहिये। यदि सम्पूर्ण सभासदोंकी इच्छा हो तो सम्मेलनका आगामी अधिवेशन लाहौरमें हो; मैं उसका समस्त भार उठानेको प्रस्तुत हूं (साधु साधु) स्टैण्डिङ्ग कमिटी होनेसे आयुर्वेदकी उन्नतिके काम स्थायी रूपसे होते रहेंगे इसलिये मैं स्थायी समितिका प्रस्ताव उपस्थितकर आशा रखता हूं कि आप लोग इसे स्वीकार करेंगे।

(२) इसका अनुमोदन करते हुए जगन्नाथप्रसाद शुक्लने कहा कि प्रस्ताव उपस्थित करते हुए हमारे सुयोग्य मित्र पण्डित ठाकुरदत्त जीने जो कुछ कहा है उसका मैं अनुमोदन करता हूं। विशेष कर उन्होंने ईर्षा-द्वेष त्याग कर परस्पर स्नेह भाव बढ़ानेकी जो सलाह दी है वह अमूल्य है। अतएव अपने वैद्य बन्धुओंका ध्यान

मैं इस ओर आकर्षित करता हूं। आपसका ईर्षा द्वेष देशकार्योंके लिये अतएव-आयुर्वेदके लिये बहुत ही विघातक है। आयुर्वेदकी उन्नतिका काम जितना इस विघ्नके कारण रुक रहता है उतना और किसी कारणसे भी नहीं रुकता। आपसका ईर्षा द्वेष देशकार्योंकी फसलकी बीमारी है, उसकी जड़का कीड़ा है; जो समूल ही उसे नष्ट कर देता है। यह भाव बहुत ही विषैला है कि अमुक सभा, अमुक संस्था अथवा अमुक कार्यके प्रति मेरा तो कुछ कर्तव्य ही नहीं है; क्योंकि मैं उसका सभापति या मन्त्री नहीं हूं। नामवरी तो सभापति या मन्त्री लूट लेगा फिर मैं व्यर्थ परिश्रम क्यों करूं। किसी संस्थाके कार्यकर्ताओंके पद कार्य शृङ्खलाके लिये होते हैं, उसका काम सुचारु रूपसे चलानेके लिये होते हैं; नामवरीकी दूकान लगाने के लिये नहीं होते। किसी संस्थाके प्रति जितना कर्तव्यसम्बन्ध मन्त्री या सभापतिका होता है उतना ही उसके प्रत्येक सभासद और उससे सम्बन्ध अथवा स्वार्थ रखने वाले सभी सज्जनोंका होता है। यदि किसी संस्थामें सभी कार्य कर्ता ही बना दिये जायँ सभी मन्त्री या सभापतिके आसन पर बैठा दिये जायँ तो कार्यकी शृङ्खला भङ्ग हो जावेगी। काम कभी शान्तिके साथ नहीं हो सकेगा; सभी एक दूसरेके भरोसे रह कर कर्तव्यमें शिथिल पड़ जावेंगे और "बहुते

जोगी गांव उजाड़” वाली कहावत चरितार्थ होगी। हमारे सुयोग्य सभापति महोदयने जैसा कहा है तदनुसार सभापति या मन्त्री सभाके दास हैं; सभाकी सेवा करना ही उनका परम धर्म है; वे सभाके सेवक हैं। सेवा धर्म बड़ा कठिन है; बड़े उत्तर दायित्व का काम है। “सेवाधर्मः परम गहनो योगिनामप्य गम्यः।” यदि किसीका उद्देश्य किसी संस्थामें काम करके नाम कमानेका ही हो तो भी किसीको निराश नहीं होना होगा। स्नेह पूर्वक काम करते जाओ; स्नेह (तेल) का धर्म ही है कि वह चाहे पानीके कितने ही नीचेकी तलीमें छोड़ा जाय कितना ही गुप्त रूपसे उसका प्रयोग किया जाय परन्तु वह ऊपर आही जावेगा। काम चाहे जिस रूपमें किया जाय वह कर्ताके परिश्रमके अनुसार उसका नाम कर ही देगा। जब यही हाल है तब मैं तो यही उत्तम समझता हूं कि कामके लिये काम किया जाय, नामके लिये नहीं; क्योंकि नामके लिये काम करनेसे कभी कभी सार्वजनिक हितकी हानि होनेकी सम्भावना रहती है। नाम पर लक्ष्य रहनेसे कामका स्वरूप कभी कभी बिगड़ जाता है। जो हो; अब तक हो चुकी उसे जाने दीजिये; परन्तु अब आगेसे ईर्षा द्वेष त्याग कर काम करनेका सङ्कल्प कीजिये और जिस समितिका प्रस्ताव आप अभी पास करना चाहते

हैं उसके उद्देश्योंको पूर्ण करनेमें प्रयत्नशील बनिये। सालमें एक दो दिनके लिये इकट्ठा हो जानेसे अधिक सफलता नहीं होगी। साल भर बराबर कामजारी रखना पड़ेगा। जो उत्साह आज हम लोगोंमें दिखाई पड़ रहा है उसे स्थायी समिति सदा बनाये रखेगी। आप जो प्रस्ताव पास कर रहे हैं उन्हें कार्य रूपमें परिणत करने-के लिये स्थायी समितिका परिश्रम समर्थ होगा। जिस परीक्षा समितिकी स्थापना करना आपने निश्चय किया है, उसका स्वरूप भी समितिके द्वारा बनेगा। अतएव समितिका होना बहुत ही प्रयोजनीय है। यहां पर एक बातका खुलासा करना और भी प्रयोजनीय मालूम पड़ता है। इस समितिकी स्थापनासे हमारे उद्देश्य किसी दूसरी सभासे प्रतिद्वन्द्विता करना नहीं बल्कि केवल आयुर्वेदकी उन्नति करना है। परलोकवासी शङ्कर दाजी शास्त्री पदे महोदयकी मृत्युसे आयुर्वेद-की उन्नति और प्रचारका जो काम शिथिल पड़ रहा है उसे आगे बढ़ाना—उसे जारी रखना हमारा उद्देश्य है। इस उद्देश्यमें—इस आयुर्वेदकी उन्नतिके कार्यमें जिनकी सहानुभूति हो, जिनकी मदद हमें मिले वे सभी हमारे मित्र हैं; सभी हमारे सहायक हैं। चाहे तिब्ब यूनानीके हकीम हों, चाहे एलोपैथी, होमियोपैथीके डाक्टर हों

सभी हमारे काममें सहानुभूति प्रकट कर हमारी आ-न्तरिक कृतज्ञता प्राप्त कर सकते हैं।

(३) कानपुरके उत्साही वैद्य पण्डित शिवानरायण जी मिश्रने थोड़े शब्दों में ईर्षा द्वेष त्यागकर समिति स्थायी करने और कार्यांको बढ़ाते रहनेका परामर्श दिया और इस प्रस्तावका समर्थन किया। इसके बाद दर्शकोंमेंसे प्रयागके मौलवी हकीम फाकिर साहबने इस प्रस्ताव पर कुछ बोलनेकी इच्छा प्रकट की। तदनुसार उन्हें बोलनेका अधिकार दिया गया। उन्होंने प्रस्तावका समर्थन करते हुए कहा कि हिन्दुस्थानियोंके लिये हिन्दुस्थानकी ही जड़ी बूटी फ़ायदे मन्द है यूनानी और आयुर्वेदका दामन-चोलीका सम्बन्ध है (साधुसाधु !) आयुर्वेदकी तरक्की यूनानी और यूनानीकी तरक्की आयुर्वेदकी उन्नतिसे हो सकती है। कलकत्तेके पण्डित लाधूराम जी शर्मा वैद्य महोदयने भी एक जोरदार छोटी वक्तृतामें ईर्षा द्वेष त्याग कर काम करनेका परामर्श दिया और कहा कि यूनानी ह-कीमोंसे हमारा प्रेमभाव है। स्टैण्डिङ्ग कमिटीका नाम आयुर्वेद महामण्डल रखने या न रखने तथा उसके प्रधान कार्यालयके स्थानके विषयमें बहुत वादविवाद हुआ इस विषयको लेकर पण्डित रामचन्द्र जी वैद्य, पं० शिवरतन जी वैद्य रहवां, पं० रामभजन शर्मा आदि सज्जनोंकी जोर-दार भाषामें वक्तृता हुई। इसके पश्चात सभापति महो-

दयने कहा कि ऐसी समिति समस्त देशमें आयुर्वैदिक सभाएं स्थापित करानेका कारण होगी। भारतमें जितनी आयुर्वैदिक सभाएं होंगी, सम्मेलन सबका केन्द्रस्थल होगा और सम्मेलनकी स्थायी समिति सबकी मन्त्रणा समिति होगी। सभापति महोदयने नाम और स्थानकी भी विवेचना की। इसके पश्चात सर्व सम्मतिसे प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

पांचवा प्रस्ताव।

यह सम्मेलन आवश्यक समझता है कि इसके स्थायी कार्यालयके अधीन एक आयुर्वैदिक पुस्तक भण्डार स्थापित हो; जिसमें आयुर्वैदिक प्राचीन हस्त लिखित तथा मुद्रित और नवीन पुस्तकें संग्रह की जावें। यह सम्मेलन वैद्यों, ग्रन्थकारों और प्रकाशकोंसे अनुरोध करता है कि वे अपनी संग्रहीत, तथा लिखित और प्रकाशित पुस्तकोंकी एक एक प्रति सम्मेलन कार्यालयमें भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

प्रस्ताव कर्ता—पण्डित कन्हैयालाल गोपालाचार्य
कलकत्ता।

अनुमोदन कर्ता—पण्डित शिवनन्दन जी मिश्र वैद्य
कानपूर।

समर्थन कर्ता—पण्डित सूर्यप्रसाद वाजपेयी चमरौली
उन्नाव।

(१) प्रस्तावको उपस्थित करते हुए पण्डित कन्हैया-लाल जीने कहा कि आयुर्वैदिक पुस्तकालयकी नितान्त आवश्यकता है। एक वैद्य सभी ग्रन्थ एकत्र नहीं कर सकता किन्तु एक संस्था सात पांचकी लाकड़ी एक जनेका बोझके अनुसार अच्छा पुस्तकालय रख सकती है ! ऐसे पुस्तकालयोंसे वैद्यक विद्याके प्रेमियों और अभ्यासियोंको बड़ा लाभ पहुँचेगा। वैद्यक विषयमें खोज और आलोचना प्रत्यालोचना करनेवालोंको ऐसे पुस्तकालयोंसे बड़ी मदद मिलेगी। ऐसे पुस्तकालयोंकी आवश्यकता तो तमाम देशमें है परन्तु जब तक यह कार्य सब स्थानोंके लिये सुलभ नहो तब तक सम्मेलनके कार्यालयके अधीन तो अवश्य ही एक पुस्तकालय चाहिये।

(२) इसका अनुमोदन करते हुए पण्डित शिवनन्दन जी मिश्रने कहा कि हमें यदि किसी वैद्यक ग्रन्थकी आवश्यकता होतो हम नहीं जान सकते कि किस छापेखाने अथवा किस पुस्तक विक्रेताके पास हमें उपयुक्त ग्रन्थ मिल सकेंगे। यदि हमारा कोई आदर्श पुस्तकालय हो तो उसके द्वारा हम अभीष्ट ग्रन्थका पता पा सकते हैं। मुसलमानी जमानेमें हमारे असंख्य ग्रन्थ जला दिये गये; जो बचे हैं उनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

(३) इसका समर्थन करते हुए पण्डित सूर्य प्रसाद जी वाजपेयीने कहा कि प्रयाग तीर्थ स्थान है। यही

सम्मेलनका कार्यालय रहेगा; अतएव यहां पुस्तकालय रखनेसे अधिक लाभ है। क्योंकि यहां तीर्थस्थानके कारण प्रयाग भारतका केन्द्र हो रहा है; इससे यहां लोगोंका आना जाना अधिक होता है। यहां लोग आवेंगे और अपना वैद्यक पुस्तकालय देख कर समझ सकेंगे कि इस गयी बीती अवस्थामें भी हमारे वैद्यक भण्डारमें कैसे कैसे रत्न भरे पड़े हैं। इससे लोगोंमें उत्साह जागृत होगा और अपनी कीर्ति विस्तृत करनेके लिये लोग प्रयत्न शील होंगे।

इसके पश्चात सभापति महोदयने कहा कि इसमें सन्देह नहीं कि कई मुसलमान बादशाह धर्मान्धतामें पड़कर हमारे ग्रन्थोंको नष्ट करनेके कारण हुए। कई एकोंका तो विश्वास था कि कुरानमें है वही सत्य है फिर कुरानको छोड़कर अन्य सब हिन्दू ग्रन्थोंकी आवश्यकता ही क्या है? अतएव असंख्य हिन्दू ग्रन्थोंसे बादशाहों और बेगमोंके हम्माम गरम होते थे। किन्तु एक बादशाहके खराब होनेसे तमाम मुसलमान जाति पर दोष नहीं आ सकता। जहां औरङ्गज़ेब ऐसा धर्मान्ध बादशाह हुआ है वहां अकबर ऐसे न्यायी, राजनीति कुशल और दयावान बादशाह भी मुसलमानोंमें हुए हैं। जिनके विषयमें कहावत चल पड़ी थी कि 'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" अतएव एक मनुष्यके कामसे तमाम जाति बदनाम नहीं हो सकती। अन्तमें प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

छठा प्रस्ताव।

इसके पश्चात कई वैद्योंने सम्मेलनसे प्रार्थना की कि विष उपविष सम्बन्धी औषधियां बाज़ारसे लेनेमें हमें बड़ा कष्ट होता है। सरकारने यद्यपि अच्छा ही शोचकर उसके लिये लैसंस नियुक्त किया है तथापि दूकानदार लोग सरकारका भाव न समझ कर वैद्योंको भी औषिध नहीं देते। दूकानदार लोग कह देते हैं कि कोतवालीसे हुक्म लाओ। किन्तु कोतवालीसे हुक्म ले आना सहज नहीं है। इसलिये सम्मेलन कोई ऐसा प्रयत्न करे जिस्से वैद्योंको चिट्ठी देनेसे औषधिके लिये विष-उपविष सहज ही प्राप्त हो सकें। इसपर सभामें निश्चित हुआ कि सब स्थानके लोग अपने अपने स्थानका अनुभव कह सुनावें जिससे सम्मेलनको विचार करनेका अवसर मिले। इस पर **बाबू जयकुमार जैनीवैद्य** प्रयागने कहा कि प्रयागमें हरताल संखिया, सींगिया आदि कोईभी विष एक औंससे अधिक नहीं मिल सकता। इस बातका प्रयत्न होना आवश्यक है कि वैद्योंका नाम रजिस्टरमें लिखकर उन्हें यथावश्यक विषौषधि मिला करें। प्रयागके बाबू सोहनलाल और हकीम मनमोहनलाल जीने कहाकि विषौषधि मिलनेमें बड़ी अड़चन पड़ती है इसलिये सरकारसे प्रार्थना की

जाय कि वह कठिनाइयोंको दूर कर दे। जबलपुरके पण्डित गोविन्दप्रसादजी वैद्यशास्त्री, इटावाके पण्डित शिवसहायजी वैद्य. कानपुरके पण्डित छोटेलालजी वैद्य, प्रतापगढ़के पण्डित ज्वालाप्रसाद जी वैद्य, दरा प्रयागके पण्डित धरणीधरजी झा, हिलसा पटनाके पण्डित जगन्नाथ प्रसाद पाठक वैद्य, अजमेरके वैद्यराज पण्डित हरिश्चन्द्रशर्मा दाधीच, सीकर शेखावाटीके पण्डित भूरालाल जी मिश्र वैद्य, बिजनौरके पण्डित भागीरथ लालजी वैद्य आदिने भी ऊपरकी बातोंका समर्थन किया। आगरेके वैद्यराज बाबू ज्ञान सिंहजी और लाहौरके पण्डित ठाकुरदत्तजी वैद्यने कहा कि हमारे यहां इन वस्तुओंके प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं है। हमें जब जितने विषकी आवश्यकता होती है तब हम प्राप्त कर सकते हैं। सभापति महोदयने कहा कि कलकत्तेमें भी इन चीजोंके प्राप्त करनेमें कठिनाई नहीं है। अन्त में सम्मेलनमें निम्न लिखित प्रस्ताव पेश हुआ।

प्रस्ताव

वैद्यक और यूनानी शास्त्रके अनुसार इलाज करने वाले भारतवर्षके विश्वास योग्य वैद्य महाशयोंको औषधि बनानेके लिये विष और उपविषोंकी आवश्यकता हुआ करती है। इसलिये सम्मेलनकी इच्छा है कि ये वस्तुएं उन्हें विशेष भावसे सुलभता पूर्वक मिला करें। सम्मेलन

स्थायी समिति पर इस विषयका भार समर्पित करता है कि वह इस विषयको निर्धारित करे कि इस विषयमें सरकारके पास किस प्रकार आवेदन पत्र भेजा जाय और सरकारसे प्रार्थना की जाय कि यथासम्भव शीघ्र सरकार इस कष्टको दूर करनेका प्रयत्न करे।

प्रस्तावकर्ता—डाक्टर रामेश्वरनाथ चतुर्वेदी प्रयाग।
अनुमोदनकर्ता—बाबू जयकुमार जैनी वैद्य प्रयाग।
समर्थनकर्ता—हकीम मनमोहनलाल वैद्य-प्रयाग।
„—पं० गोविन्दप्रसाद शास्त्री जबलपुर।
„—पं० भूरालालमिश्र शेखावाटी।

सातवां प्रस्ताव।

अधिकार युक्त वैद्य तैयार करने और समुचित वैद्यक शिक्षा देने के लिये आदर्श आयुर्वेद विद्यालयों-की नितान्त आवश्यकता है। सम्मेलन इस आवश्यकता को भी स्वीकार करता है कि जहां विद्यालय हों वहां विद्यालयके साथ और जहां विद्यालय नहीं हैं वहां अकेले आयुर्वैदिक आतुरालय (अस्पताल) स्थापित किये जायँ। जहां रोगियोंको मुफ्त दवा दी जाय और रोगियोंके रखनेका भी प्रबन्ध रहे।

प्रस्तावकर्ता—लाला सांवलदास प्रयाग।
अनुमोदनकर्ता—श्री युक्त वृद्धिचन्द्रजी कलकत्ता।
समर्थनकर्ता—पण्डित हरिश्चन्द्र शर्मा वैद्य अजमेर।

इस प्रस्तावके उपस्थित होते ही वैद्योंमें अपूर्व उत्साह और जोश दिखाई पड़ा। इसलिये शृङ्खलाका क्रम टूट गया और जिसके मनमें जो उत्साह और जोश भरा था वह अल्प व्याख्यानके रूपमें प्रकट होने लग गया। वैद्य महोदय इस बातकी प्रतिज्ञा करने लग गये कि जब तक सर्वत्र दीन आतुरालय स्थापित नहीं हुए तब तक हम लोग अपनेही यहां गरीबोंको मुफ़्त दवा दिया करेंगे।

किसीने एक किसीने दो किसीने चार किसीने पांच रोगियोंको अपने औषधालयमें रखने तथा गरीबोंको मुफ़्त दवा देनेकी प्रतिज्ञा की।

लाला सांवलदास जीने कहा-यद्यपि अभीभी वैद्योंके पास जो विद्यार्थी पढ़ने जाते हैं उन्हें वे पढ़ाते हैं और गरीब लोगोंको मुफ़्तमें औषधि भी देते हैं। तथापि व्यष्टिसे समष्टिका काम अधिक जोरदार और विस्तृत होता है। इसलिये आयुर्वेद विद्यालय और आतुरालय स्थापित होकर यदि काम किया जाय तो अधिक सफलता हो। इस विषयमें वैद्यों और सर्वसाधारणको उदारता और उत्साह दिखाना चाहिये। प्रयागमें हरदेवजीकी पाठशालामें एक वैद्यक कक्षा है, परन्तु सर्वसाधारणकी उदासीनताके कारण उसकी अच्छी अवस्था नहीं है। इस विषयमें गहरा और स्थायी प्रयत्न होना चाहिये।

श्रीयुक्त वृद्धिचन्द्र जीने कहा–डाकृरी अस्पतालोंमें इसलिये अधिक रोगी जाते हैं कि वहां उन्हें मुफ़ दवा मिलती है यदि आयुर्वैदिक पद्धतिसे दवा देनेके अस्पताल खुलें तो लोगोंका उपकार हो और सर्वसाधारणमें आयुर्वैदिक चिकित्सा प्रणालीके प्रति अधिक सहानुभूति उत्पन्न हो। प्रयागमें जैसे आयुर्वैदिक पुस्तकालय स्थापित होगा उसी तरह विद्यालय भी हो और विद्यालयके विद्यार्थियोंको जिस प्रकार आतुरालयमें प्रत्यक्ष निदान और रोगोंका अनुभव कराया जायगा उसी प्रकार औषधियोंके चिन्हानेके लिये एक औषधि प्रदर्शिनी भी होनी चाहिये। जिसमें काष्ठौषधि और कच्ची पक्की धातु आदि रखी रहनी चाहिये। जिससे विद्यार्थी पढ़ लिखकर क्रिया कुशल भी हो सकें। औषधि द्रव्योंकी पहचान होनेसे दूकानदार लोग धोखेसे दूसरी वस्तु नहीं दे सकेंगे।

पण्डित हरिश्चन्द्र शर्मा वैद्यने कहा औषधियोंके बनानेमें कितनी कठिनाई पड़ती है, यह अनुभवी वैद्य ही जानते हैं। विद्यार्थी वैद्यक ग्रन्थ पढ़कर निकलें तो भी चिकित्साजगतमें कुछ भी सफलता लाभ नहीं कर सकते। इसलिये पुस्तकी शिक्षाके साथ ही अनुभवी शिक्षा देनेकी भी नितान्त आवश्यकता है। बिना इसके वैद्य सच्चे वैद्य नहीं हो सकते।

जबलपुरके **पण्डित गोविन्दप्रसादजी शास्त्री**-ने कहा—आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये महाविद्यालय होना आवश्यक है। महामण्डल पढ़ाईका कोर्स निश्चित कर सर्वत्रकी वैद्यक सभाओंको सूचित किया करेगा। मेडिकल रजिस्ट्रेशन एक्टके विषयमें हमें अवश्य आन्दोलन करना चाहिये। संगृहीत ग्रन्थोंसे आयुर्वेदकी उन्नतिमें बहुत बाधा उपस्थित होती है। अतएव उनपर निर्भर न रहकर चरक सुश्रुतका संशोधन कर उन्हींकी पढ़ाई प्रचलित करनी चाहिये। सम्मेलनकी ओरसे योग्य वैद्योंको प्रशंसापत्र और परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियोंको योग्यतापत्र दिये जाने चाहिये। वैद्योंको दिखा देना चाहिये कि हम डाक्टरोंसे कम नहीं हैं। सरकारसे वैद्योंका सम्बन्ध अवश्य होना चाहिये। बिना सम्बन्ध हुए सरकारको हमारी योग्यताकी थाह नहीं लगेगी। सरकारको विश्वास है कि डाक्टर पढ़े लिखे योग्य होते हैं; इसीसे सरकारमें उनकी कदर है। वैद्योंके विरुद्ध कायदा बनाना निष्प्रयोजन है। कोई सबूत नहीं जिससे मालूम पड़े कि वैद्य अयोग्य हैं। यदि वैद्य अयोग्य हैं तो उनके विरुद्ध कितने मुकदमे आते हैं? वैद्योंको अधिकार प्राप्त करनेके लिये हमें अवश्य आन्दोलन करना चाहिये। पहले अपने यहां योग्योंका आदर होना चाहिये तब सरकारमें भी होगा। हम लोग डाक्टरोंसे चीरफाड़ करनेमें न्यून हैं, इसकी

पूर्तिके लिये विद्यार्थियोंको शवच्छेद करना सिखाना चाहिये। यदि हम लोग शल्यचिकित्सामें भी योग्य हों तो हमारी योग्यतामें कसर न रहे।

मिर्जापुरके **पण्डित रामनाथ जी**ने कहा—सम्मेलनकी रजिस्ट्री होनी चाहिये। इसके बिना धन सञ्चय करनेमें सुविधा न होगी। लोगोंमें सन्देह उत्पन्न न होकर विश्वास जमे इसका प्रयत्न होना चाहिये। पढ़ाईका कोर्स भी ठीक होना चाहिये। सम्मेलनके उद्देश्योंको सर्वसाधारण पर प्रकाश करनेके लिये एक साप्ताहिक पत्रकी आवश्यकता है। भारतके सभी प्रान्तोंमें डेपुटेशन घूमकर चन्दा इकट्ठा किया जाय।

काश्मीरके **लाला जगन्नाथ प्रसाद जी**ने कहा—आयुर्वेद महामंडल जहां उचित समझे वहां नेत्रचिकित्सालय स्थापित करे; मैं उसमें धर्मार्थ औषधि करनेके लिये प्रस्तुत हूं। हिन्दू कालेज बनारसमें भी मैं धर्मार्थ चिकित्सा करता था।

बरा प्रयागके **पण्डित धरणीधर जी झा**ने कहा—मैंने अपने यहां धर्म्मार्थ औषधालय खोल रखा है और प्रतिज्ञा करता हूं कि मेरे यहां जो रोगी आवेंगे उन्हें मुफ़्तमें ही औषधि दिया करूंगा। मेरी औषधियोंके प्रभावसे आसपासके लोगोंको अङ्गरेज़ी औषधियोंसे घृणा

सी हो गयी है। आयुर्वेदकी कीर्ति लुप्त होनेके कारण हम वैद्य लोग ही हैं। यदि कोई चमत्कारिक औषधि हमारे हाथ लग जाती है तो हम दूसरोंको न बताकर अपने साथ उसे स्वर्ग ही ले जाना चाहते हैं। वैद्योंको उचित है कि वे अपनी अनुभूत औषधियां दूसरे वैद्योंको भी बता दिया करें। आतुरालयमें वैद्योंको पारी पारीसे आकर अपना अनुभव बताते रहना चाहिये।

कलकत्तेके सुप्रसिद्ध वैद्य **पण्डित कन्हैयालालजी** गोपालाचार्य महोदयने कहा—हम अपने यहां गरीबोंको सदा मुफ्त औषधि देते हैं और आगेके लिये प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने यहां तीन रोगियोंको रखकर औषधोपचार किया करेंगे।

कलकत्तेके पंडित भूरालाल जीने कहा कि ब्राह्मण-सभाकी ओरसे हमारे कलकत्तेमें पंडित कन्हैयालाल गोपालाचार्य, पंडित भूरालाल मिश्र, पंडित लाधूराम शर्मा पंडित हरदत्त शर्मा वैद्यशास्त्री, पंडित महादेवप्रसाद मिश्र वैद्यशास्त्री और श्रीयुत पं० वृद्धिचन्द्र जी शर्मा आदि मुफ्तमें चिकित्सा करते हैं। आपने यह भी कहा कि संस्कृत वैद्यक ग्रन्थोंकी जो टीकाएं छपी हैं वे प्रायः सब अशुद्ध हैं। प्रेसके अधिकारियोंसे कहा जाय कि आयुर्वेद पर दयाकर भाषा टीका शुद्ध कराइये अथवा आयुर्वेद महा-

मण्डलकी सहायतासे इस कार्यको सम्पन्न कीजिये। भाषा-टीकाका संशोधन बहुत आवश्यक है।

इसके पश्चात उपस्थित वैद्योंमें इतना जोश बढ़ा कि सब उठ उठ कर प्रतिज्ञा करने लग गये। उस समय सबका नाम नोट करना कठिन पड़ गया। बाबू जयकुमार जैनीवैद्य जीने कहा कि प्रयागके पंडित केदारनाथ जी चौबे, पंडित शिवरामजी पांड़े, पंडित बच्चूरामजी शर्मा, पण्डित वैद्यनाथ शर्मा, पं० ठाकुरप्रसाद शर्मा, जयकुमार जैनी वैद्य, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, लाला सोहनलाल, पं० विश्वेश्वर जी मिश्र, पण्डित कालीचरण शुक्ल, हकीम मनमोहन लाल, पण्डित बालानन्द जी मिश्र, पण्डित भगवतप्रसाद जी, पण्डित गिरिजाशङ्कर आदि ग़रीबोंको मुफ़ दवा दिया करते हैं।

कानपुरके **पण्डित रामेश्वरजी मिश्र** वैद्यकुल भूषणने कहा :—वैद्योंके परस्पर प्रेम और सहानुभूतिसे सामुदायिक शक्ति बढ़ेगी और वैद्योंकी जो शक्ति अभी छिन्न भिन्न है वह एक स्वरूप धारण करेगी। एक शक्ति बन जानेसे हम आयुर्वेदकी उन्नतिके उपाय शोचेंगे और कार्यमें भी सफल होंगे। हमें अष्टाङ्ग आयुर्वेदकी शिक्षाका क्रम अवश्य प्रचलित करना चाहिये।

कानपुरके **पण्डित शिवनारायण मिश्र जी**-ने कहा—सम्मेलनका कार्य सर्वोपयोगी बनानेके लिये

अन्य भाषाओंके ग्रन्थोंकी सहायता लेकर हिन्दीमें अच्छे वैद्यक ग्रन्थ बनने चाहिये। इस कार्यकी सिद्धिके लिये एक फण्ड होना चाहिये। जिसके द्वारा पुस्तकें प्रकाशित हों और अच्छे ग्रन्थकारोंको पुरस्कार दिया जाय। वैद्योंमें एका बढ़ानेके लिये वैद्यक सम्मेलन अच्छा साधन है। वैद्योंको योग्यतानुसार उपाधि प्रदान करनेसे योग्य वैद्योंको उत्तेजन मिलेगा।

मेरठके आयुर्वेद मार्तण्ड **पण्डित सूर्यप्रसादजी शर्माने** कहा–हमारा कल्याण हमारे ही हाथों हो सकेगा। उत्साह हीनता, आलस्य, प्रमाद, फूटसे हमारी बड़ी हानि हो रही है। स्वर्गवासी आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शङ्करदाजी शास्त्री पदे महोदयके कार्योंको हमें सँभालना चाहिये। एक बारका उठाया हुआ काम हमें पूरा करके छोड़ना चाहिये।

रहवाँके पण्डित **शिवरत्न वाजपेयी** वैद्य जीने कहा–हिन्दी वैद्य गाइड की बड़ी आवश्यकता है; सम्मेलन कार्यालयमें इस वर्ष इसका विचार हो रहना चाहिये। ऐसे कार्य एक मनुष्यसे होना सम्भव नहीं है। इसके लिये सम्मेलनके अनुमोदनसे एक संस्था अलग स्थापित होनी चाहिये जो कम्पनीके ढङ्ग पर काम करे। सम्मेलन यदि वैद्योंमें परस्पर एकताका भाव बढ़ा सकेगा तो मानों उसने आधा काम सफल कर लिया। सम्मेलन समाचार-

पत्रोंके सम्पादकोंका ध्यान आकर्षित करें कि वे वैद्यक विषयमें अधिक सहानुभूतिकी दृष्टि रखें।

पण्डित रामचन्द्रजी शर्मा अलीगढ़ने कहा–सभाकी रजिस्ट्री कराकर कोष संग्रह करना चाहिये। जिससे अष्टाङ्ग चिकित्साकी शिक्षाका प्रबन्ध किया जाय। वनस्पतियोंके गुणदोष जाँचनेकी एक मण्डली होनी चाहिये। डेपुटेशन द्वारा कोष पूर्तिका प्रयत्न हो। अपना विद्यालय स्थापित कर शल्य चिकित्साकी शिक्षाके लिये विशेष उद्योग होना चाहिये।

कर्ण सिकन्दर पुरके **पण्डित हरिगोविन्द जी शर्मा**ने कहा–अभी तक जैसे उत्साहसे काम हुआ है; महामण्डलका काम उसी उत्साहसे होते रहना चाहिये। सौभाग्यसे सभापति ऐसे मिले हैं जो आयुर्वेदोद्धारके काममें स्तम्भ रूप हैं।

अजमेरके **पण्डित हरिश्चन्द्र** जीने कहा--कि केकड़ी अजमेर आदिमें बिना फीस लिये मैं रोगी देखने जाता हूं और गरीबोंसे दवाका दाम नहीं लेता।

पण्डित झाबरमल जीने कहा कि सभापति कविराज गणनाथ सेन महोदय गरीबोंको बिना मूल्य दवा देते हैं और ब्राह्मणोंको भोजन आदि भी देते हैं।

पण्डित शिवनन्दन जीने कहा कि कानपुरमें डाक्टर सेनने रोगियोंके लिये आतुरालय खोल रखा है।

उसमें डाक्टर साहब देशी दवा और भोजन पान भी देते हैं। कानपुरके वैद्य पं० रामेश्वर जी, पं० कालका प्रसाद, पं० छोटेलाल जी, पं० शिवनन्दन, पं० लालमणि जी, पं० विष्णुदत्त जी बारी बारीसे जाकर वहां रोगियोंको देखते हैं।

रीवांके **पण्डित बालमीकि** जीने कहा कि हम लोग जो कुछ करते हैं अपने श्रीमान महाराजा साहब बहादुरकी ओरसे ही करते हैं। उनसे हमें जागीरें मिलती हैं जिससे हम गरीबोंको मुफ़्त दवा देते हैं। तथापि मैं इस बातका भी प्रयत्न करूंगा कि राज्यकी ओरसे आतुरालय खुलें।

आठवां प्रस्ताव।

आयुर्वेदीय ग्रन्थोंका पुनः संस्कार और आवश्यक ग्रन्थोंका निर्माण होना आवश्यक है। इसी तरह अष्टाङ्ग-आयुर्वेदका पुनः प्रचार होना आवश्यक है।

प्रस्तावकर्ता—पण्डित देवकीनन्दन त्रिपाठी प्रयाग.

अनुमोदनकर्ता—पण्डित छोटेलाल शर्मा कानपुर.

समर्थनकर्ता—पण्डित मन्नूलाल मिश्र बिन्दकी.

,, --पण्डित ब्रजगोपाल जी सारस्वत.

प्रस्ताव उपस्थित करते हुए पं० देवकीनन्दन जीने कहा कि इस समय वैद्यक ग्रन्थोंकी जितनी टीकाएं हुई

हैं वे प्रायः सभी दुर्बोध और अपूर्ण हैं। यहां तक कि संस्कृत टीकाओंका हिन्दी अनुवाद भी ठीक नहीं हुआ है। सम्मेलनकी संरक्षकतामें ग्रन्थोंका संस्कार होना चाहिये। (२) पं० छोटेलाल जीने कहा कि बहुत सी बातें ऐसी हैं जो इस ज़मानेके अनुसार प्राचीन वैद्यक ग्रन्थोंमें घटायी तथा बढ़ायी जाने योग्य हैं। नये आविष्कार और पुराने सिद्धान्तोंका मिलान भी स्थान स्थान पर होना चाहिये। यह काम एक व्यक्तिसे नहीं बल्कि सम्मेलन ऐसी संस्थाके द्वारा ही ऐसे काम हो सकते हैं। पं० मन्नूलाल जीने कहा कि वर्तमान प्रेसोंके मालिकोंसे लिखापढ़ी करनी चाहिये कि वे अपने यहांके प्रकाशित वैद्यक ग्रन्थोंका प्रतिसंस्कार सम्मेलन द्वारा करावें। पं० व्रजगोपाल जीने कहा कि अष्टाङ्ग आयुर्वेदकी पूर्ति समय सापेक्ष है किन्तु ग्रन्थोंका प्रतिसंस्कार शीघ्र होना चाहिये। यदि प्रेसोंके मालिक अपने ग्रन्थ सुधरवानेकी इच्छा न दिखावें तो सम्मेलनसे अनुमोदित कोई कम्पनी खड़ी कर इस कामको आरम्भ कर दिया जाय। अन्तमें सर्वसम्मतिसे प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

नवां प्रस्ताव।

प्लेग, मलेरिया, हैज़ा आदि संक्रामक रोगोंसे गत शताब्दीमें असंख्य मनुष्योंकी मृत्यु हुई और अब भी हो रही है। अतएव उन रोगोंके प्रादुर्भावका कारण अनुस-

ध्यान कर आयुर्वेदोक्त चिकित्सा करनेकी व्यवस्था करनी आवश्यक है।

इस प्रस्तावको स्वयं सभापति महोदयने उपस्थित किया और कहा कि सरकार इन रोगोंकी जांचके विषयमें प्रयत्न शील है। डाक्टरोंने अपनी मतिगतिके अनुसार खोज भी की है। वैद्योंके लिये यह उत्तम अवसर है। वे यदि सरकारको अपनी बुद्धिका चमत्कार दिखावें और इस विषयकी उत्तम जांच कर उत्तम चिकित्सा प्रणाली संसारको बतावें तो आश्चर्यके साथ सर्वसाधारण और सरकार वैद्योंकी प्रतिभा, गुणगरिमा और चिकित्सा प्रणालीकी श्रेष्टता जान सकें। यह प्रस्ताव भी सर्व सम्मतिसे स्वीकृत हुआ स्टैण्डिङ्ग कमिटी इस विषयकी विचार समिति बनानेका प्रयत्न करेगी।

अन्तमें **सभापति महोदयने** उठकर कहा—पहले हम अपनी बलवृद्धि कर लें तब सरकारसे प्रार्थना करना उचित होगा। जब हम सुशिक्षित हो जायँ तब सरकारसे भी प्रबन्ध होनेकी आशा करें। इस समय योग्य वैद्योंकी संख्या थोड़ी और अयोग्योंकी अधिक है। वैद्योंके विरुद्ध क़ानून बननेसे हमारी उन्नति पर वज्राघात अवश्य होगा; किन्तु महर्षियोंके आदर्श पर उन्नतिका प्रयत्न करनेसे हमारा अधिकार अबाध होगा। रजिस्ट्रेशन एक्टकी भीतरी मंशा चाहे जैसी हो पर बाहरी विचारसे उससे वै-

द्योंकी विशेष हानि नहीं दिखाई पड़ती। योग्य वैद्योंको सम्मेलनसे प्रशंसापत्र दिये जाने चाहिये। इससे सम्मेलनका वैद्योंसे घनिष्ट सम्बन्ध हो जायगा। आयुर्वेदीय ग्रन्थोंकी सत्यासत्य विवेककी मीमांसा होनी चाहिये। सरकार होमियोपैथिक चिकित्साका सैंकशन दे चुकी है; तब हमारी आयुर्वैदिक चिकित्साको भी सैंकशन क्यों नहीं देवेगी? सरजरीका काम अङ्गरेज़ीग्रन्थोंके अनुवादसे नहीं चलेगा। मैंने शारीर पर प्रत्यक्ष देखी हुई बातोंके आधार पर 'प्रत्यक्ष शारीर' नामक ग्रन्थ लिखा है; उससे भविष्य विद्यार्थियोंको अच्छी सहायता मिलेगी; और वैद्य लोग डाक्टरोंकी बराबरी कर सकेंगे। शल्यतन्त्रमें हमें अभी बहुत विचारसे काम करना होगा। अर्थसंग्रहके लिये वर्षों प्रयत्न करना होगा। सम्मेलनका आयुर्वेदीय महामण्डल इसके लिये अवश्य प्रयत्न करेगा। मैं स्वयं इसके लिये भिक्षाकी झोली लेकर निकलनेको तैयार हूं। (साधु साधु!) कलकत्तेमें होमियोपैथिक अस्पताल बनानेके लिये ज़मीन ख़रीद ली गयी है। प्रयागके रईसोंकी इच्छा है कि प्रयागमें एक आयुर्वेदीय अस्पताल खोला जाय। डाक्टर आरचीकरने पहले अकेले ही कलकत्तेमें अलबर्ट विक्टर अस्पताल खोला था। अब उसकी आशातीत उन्नति हुई है। वृथा कामोंमें असंख्य रुपये ख़र्च हो जाते हैं; परन्तु आयुर्वेदकी उन्नतिमें शिथिलता दिखाना शोक जनक है।

देश भरमें भेषजशालाएं खुलनी चाहियें। यदि हिन्दू वि-श्वविद्यालयका आयुर्वैदिक शिक्षाक्रम अखिल भारतके आयुर्वेद ज्ञाताओंके मतसे मिल जाय तो उससे मिलकर काम करनेका हमें विचार करना होगा। ग्रन्थोंका सं-ग्रह करना हमारा प्रधान काम है। समग्रभारतमें जब तक ग्रन्थ संग्रहकी चेष्टा न होगी तब तक आयुर्वेदकी ठीक उन्नति न होगी। पं० धरणीधर जी तथा अन्य सज्जनोंने उत्साहसे जो कुछ कहा है उसके लिये उन्हें सबको धन्यवाद देना चाहिये। ऋषियोंका कथन है कि धर्मार्थ चिकित्साके लिये स्वर्ण छोड़कर मिट्टी ग्रहण करो। कलकत्तेमें एक बड़ा धर्मार्थ औषधालय है। उसमें प्रतिवर्ष एक लाख रोगी आराम होते हैं। उसका सञ्चालन भार कई सभ्योंके हाथमें है; जिनमें मैं भी एक हूं। अजमेरमें पं० हरिश्चन्द्र जीका एक बड़ा धर्मार्थ औषधालय है; जिसकी रिपोर्ट हमने देखी; वास्तवमें वे धन्यवादके पात्र हैं।

मिश्र जीका आगमन।

दूसरे दिनके अधिवेशनमें शामके समय हिन्दी सा-हित्य सम्मेलनके सभापति श्रीमान **पण्डित गोविन्द नारायण जी मिश्र** महोदयका शुभागमन हुआ। आ-पके साथ हितवार्ता सम्पादक पं० बाबूराव जी पराडकर, भारतमित्र सम्पादक पं० अम्बिका प्रसाद जी वाजपेयी

आदि सज्जन थे। खड़े होकर वैद्योंने आपका स्वागत किया। मन्त्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्लने सम्मेलनमें उपस्थित सज्जनोंसे आपका परिचय कराया और कहा कि इस समय प्रयागमें दो सम्मेलन हुए। संयोगसे दोनोंके सभापति कलकत्तेसे आये। प्रयागवासियोंके—नहीं नहीं सम्पूर्ण हिन्दी समाजके-सौभाग्यसे दोनों सभापति ऐसे आये जिससे दोनों सम्मेलनोंकी अपूर्व शोभा बढ़ गयी। वैद्योंकी ओरसे आपने कहा कि सम्पूर्ण उपस्थित वैद्योंकी इच्छा है कि मिश्र जी महाराजने जैसे साहित्य सम्मेलनके मञ्चसे अपनी गम्भीर वक्तृता सुना कर लोगोंको मुग्ध किया है उसी तरह अपनी वक्तृताकी अमृतधारा वर्षण कर वैद्य मण्डलीको भी तृप्त करें। इसके पश्चात् मिश्र जी महाराजने खड़े होकर बहुत ही ललित वक्तृता दी। जिसमें धर्म, साहित्य और वैद्यकका विचित्र सम्मेलन देख लोग आश्चर्य चकित हो गये। आपकी वक्तृताका सारांश यों है :—

प्रयागमें इस समय जो दो सम्मेलन हुए हैं उन दोनोंका उद्योग अभिनन्दनीय है। मैं तो साहित्य सम्मेलनकी अपेक्षा वैद्यक सम्मेलनको अधिक उपयोगी समझता हूं (करतलध्वनि)। क्योंकि साहित्य सम्मेलन उस समयका आलोच्य विषय है जब स्वास्थ्य अच्छा है, चित्त प्रसन्न है। वैद्यक सम्मेलन प्राणोंकी रक्षा करनेका उपाय बताता है। अतएव स्वास्थकी उन्नति कर सहित्यकी आलोचना-

के योग्य लोगोंको बनाना उसका कार्य है। वैद्यक ही क्या सभी विज्ञानोंका आविष्कार पहले भारतमें ही हुआ है। अपने शास्त्रोंसे अनभिज्ञ नयी शिक्षा प्राप्त लोग विदेशी विद्वानोंके आविष्कारोंको देखकर समझने लगते हैं कि वे नये आविष्कार हैं; परन्तु यथार्थमें ऐसे आविष्कार भारतमें कमसे कम पांच हजार वर्ष पहले हो चुके थे। प्रायः लोग प्राचीन बातोंकी आलोचना करते समय वैदिक समयका सहारा लिया करते हैं परन्तु यथार्थमें वैदिक समय कोई समय ही नहीं है। वेद अनादि हैं तब उनका समय कहना ही मूर्खता है। वेद मन्त्रोंकी आलोचना करनेकी शक्ति और अधिकार उन ऋषियोंको था जो अयोनिज थे। प्राचीन बातोंका पता लगाना इस समय बड़ा कठिन हो रहा है। प्राचीन शिला लेख आदि आजकल इनके साधन हो रहे हैं। भारतमें आयुर्वेदका विकास बहुत प्राचीन समयमें हुआ था। देवासुर संग्रामके समय जब समुद्र मन्थन किया गया था और जब अमृत, चन्द्रमा आदिके आविष्कारके साथ भगवान धन्वन्तरि समुद्रसे निकले थे उस समय ब्रह्माने उन्हें आयुर्वेदका पृथवी पर प्रकाश करनेकी आज्ञा दी थी। अर्थात जब पृथ्वी बसी, पृथ्वी वासियोंको जबसे चन्द्रमाका प्रकाश मिलने लगा तभीसे भारतमें आयुर्वेदविद्याका प्रकाश हो रहा है। अर्थात हमारा आयुर्वेद इतना प्राचीन है कि उसका समय बतलाना बड़ा

कठिन है। धन्वन्तरि अपने हाथमें दो वस्तुएं लेकर
अवतीर्ण हुए थे। एक हरीतकी और दूसरी जलौका। क्या
ही विज्ञानका निचोड़ है; यथार्थमें इन दोनों वस्तुओंमें
ही वैद्यकविद्याका सार है। संसारमें जितने प्रकारके
रोग हैं उनके प्रायः दो भेद हैं; एकतो वे जो मलविकारसे
होते हैं अर्थात् जिनका सम्बन्ध आमाशयसे है और
दूसरे वे जो रक्तविकारसे होते हैं। धन्वन्तरि महाराज
जो वस्तु लाये उसमें पहली मलका शोधन करनेवाली
और दूसरी रक्तका शोधन करनेवाली है। हमारे ऋषि-
विद्युत्शक्तिका प्रभाव भी अच्छी तरह जानते थे। वे सम-
झते थे कि किसी औषधिमें दूसरी औषधिका पुट देकर उसे
बार बार घोटनेसे उस औषधिमें रासायनिक शक्तिका
सञ्चार तो होता ही है किन्तु बारम्बारकी रगड़से उसमें
वैद्युतिक शक्ति भी प्रविष्ट हो जाती है। यदि ऐसा नहीं
तो वे इतने मूर्ख न थे जो कितनीही औषधियोंको सौ सौ
बार पुट देकर खरल करनेके लिये कहते! किन्तु आज-
कल हर एक बातमें वर्णसङ्करता फैल रही है; और
आश्चर्य तो इस बातपर है कि ऐसी वर्णसङ्करता अनेक
लोगोंको पसन्द भी आती है। धर्म और रक्तमें वर्णसङ्करता
फैलानेकी प्रवृत्तिका पता माननीय बसुके अनमेल विवाह-
के बिलसे लग रहा है। भाषामें वर्णसङ्करता फैलाना भी
बहुतोंको अभीष्ट है; यहां तक कि हिन्दीसाहित्य सम्मे-

लनमें इसके लिये प्रस्ताव उपस्थित होनेवाला था; किन्तु हिन्दीके सौभाग्यसे इस वर्ष तो वह अनी टल गयी और कमसे कम मैं इस पापसे बच गया ; आगे देखना चाहिये क्या होता है। मुझे यह देखकर दुःख है कि वही वर्णसङ्करता वैद्यक संसारमें भी प्रविष्ट हो रही है। बहुतसे वैद्य अपनी पवित्र औषधियोंको छोड़कर विदेशी अपवित्र औषधियां मिलाकर दोगली दवाइयां तैयार करने लगे हैं। भला कुनैनका रङ्ग तबदील कर जो काले रङ्गकी दवा कुछ वैद्योंकी पुड़ियोंमें दी जाती है वह कौन कान्तीसार है! वैद्यक सम्मेलनको इस बातका प्रयत्न करना चाहिये कि औषधियोंमें वर्णसङ्करता न फैलने पावे। इस बातको रोकना मानों देशको सत्यानाश होनेसे बचाना है। जब अपने यहां रत्नोंकी खानि भरी हुई है तब दूसरेके यहां चोरी करनेसे क्या प्रयोजन है? यदि अङ्गरेज़ी ही दवा देनी हो तो खुल्लमखुल्ला दी जाय; परन्तु अङ्गरेज़ी दवाको देशी कहकर देना पाप है। वैद्योंको कच्ची औषधियोंकी पहचान कराना भी आवश्यक है। जो नये वैद्य औषधियां नहीं पहचानते उन्हें पंसारी जो चीज़ दे देता है उसीसे वे दवा तैयार करते हैं; जिससे असली दवा न मिलनेसे कभी कभी पूरा लाभ नहीं होता। भारतमें रसादिक औषधियोंके आविष्कारका समय भी बहुत प्राचीन है। यद्यपि चरकसुश्रुतमें रसौषधियोंका उतना वर्णन नहीं है

तथापि मालूम पड़ता है कि इसकी स्वतन्त्रप्रक्रिया बहुत पुराने जमानेसे प्रचलित है। पुराणोंमें पारद शिवकावीर्य और गन्धक पार्वतीका रज माना गया है। अर्थात महादेव और पार्वतीसे इनका सम्बन्ध जोड़ कर इनको प्राचीनता प्रदर्शित की गयी है। इससे स्पष्ट है कि रसौषधि भी हमारी बहुत प्राचीन प्रक्रिया है।

आपको कई सज्जनोंसे मिलने जाना था, इससे आप अधिक समय तक नहीं ठहर सके। सम्मेलनके मन्त्रीने सम्मेलनकी ओरसे आपको धन्यवाद दिया। इसके पश्चात अतिकाल हो जानेके कारण दूसरे दिनका कार्य यहीं समाप्त हुआ। निबन्धोंका पठन अभी होनेको था इसलिये तीसरे दिन भी सम्मेलन करना निश्चित रहा।

तीसरा दिवस।

दूसरे दिन रातकी गाड़ीसे बहुतसे बाहरी सज्जन अपने अपने घर चले गये थे। देशोपकारकके सम्पादक पण्डित ठाकुरदत्त जीको हिन्दू सभामें अमृतसर जाकर दो व्याख्यान देने थे; इसलिये वे दूसरे दिन अपना व्याख्यान समाप्त कर पधार गये थे। विजयगढ़के वैद्यवर राधावल्लभ जी भी आवश्यक कार्यसे चले गये। और भी सज्जन बहुतसे कार्यवश चले गये। तीसरे दिन सवेरे उपस्थित प्रतिनि·

धियोंका फोटो लिया गया। फोटोकी कापी सम्मेलन कार्यालयसे प्राप्त हो सकती है; जिन्हें आवश्यकता हो मय ख़र्च १॥) में मँगा लें। सभापति महोदयके साथ कानपुर कलकत्ता और प्रयागके वैद्योंका फोटो अलग अलग भी लिया गया। सम्मेलन कार्यालयको लिखनेसे उनके भेजनेकी भी व्यवस्था हो सकती है।

निबन्ध पाठ।

फोटो लिये जानेके पश्चात सम्मेलनके तीसरे दिनका कार्य आरम्भ हुआ। सबसे पहले निबन्ध पढ़े गये। सम्मेलनकी तैयारी बहुत शीघ्रताके साथ की गयी थी। इसलिये निबन्ध लिखानेका प्रयत्न और प्रबन्ध नहीं किया गया था। तथापि दो चार सज्जनोंने जो निबन्ध तैयारकर भेजे थे वे पढ़े गये अथवा पढ़े हुए समझे गये। ब्यावरके सुप्रसिद्ध आयुर्वेदहितैषी, परम उदार, आदर्श उत्साही, आयुर्वेद पञ्चानन पण्डित पूनमचन्द तनसुख व्यास वैद्य महोदयने तृतीय वैद्यक सम्मेलनके लिये एक निबन्ध और एक वैद्यगाइडका नमूना तैयार किया था। आपने अपने दोनों विषयोंको पुस्तकाकार छपा डाला है और ये दोनों पुस्तकें प्रसिद्ध प्रसिद्ध वैद्योंके पास भेजी भी जा चुकी हैं। जिन्हें पहले पुस्तकें प्राप्त नहीं हुई थीं उन्हें सम्मेलनमें दी गयीं। अभी भी जिन्हें ये दोनों पुस्तकें न मिली हों वे हमें अथवा व्यास जीको पत्र लिखकर मँगा लें। इस-

लिये आपके निबन्धोंका समूचा भाग यहां छापना हम आवश्यक नहीं समझते। आपकी वैद्यगाइडका नमूना सम्मेलनको पसन्द है। केवल अनुरोध इतना ही है कि वैद्यकके सिद्धान्त ग्रन्थ चरक, सुश्रुत और वाग्भटमेंसे भी इसमें औषधियोंका नाम पता दिया जाय। सम्मेलनकी सम्मति है कि व्यास जीने जैसे ज्वरकी औषधियोंकी गाइड तैयार कर डाली है, उसी प्रकार सब रोगोंकी भी तैयार कर डालें। सम्मेलनसे जैसी सहायता हो सकेगी वैसी वह अवश्य देगा। सम्मेलनकी सम्मतिमें ऐसी गाइडके दो भाग हो सकते हैं। एक भागका नमूना तो व्यास जीने दिया ही है; दूसरा औषधियोंका नाम पता ककारादि क्रमसे देनेसे पूरा हो सकेगा। दूसरा भाग पहले भागके परिशिष्ट स्वरूपमें भी रह सकता है। इस परिश्रम और प्रयत्नके लिये सम्मेलन व्यासजीको धन्यवाद देता है।

दूसरा निबन्ध आपका "वैद्यककी उन्नति किस प्रकार होगी" नामका है। आरम्भमें आपने निबन्धका उपोद्घात इस प्रकार लिखा है :—

"यह बात किसीसे छिपी नहीं है कि वैद्यकविद्या वर्तमान अवस्थामें बहुत कुछ गिरी हुई दशामें है। परन्तु भगवान्‌की कृपा और "श्रीमयाजी आयुर्वेद विद्यापीठ"के संस्थापक श्रीमान् स्वर्गीय आयुर्वेद महोपाध्याय पं० शङ्कर

दानी शास्त्री पदके अतुलनीय परिश्रम और उत्साहसे वैद्यकविद्याके उपासकोंमें सहिष्णुता प्रचारित हो इन दिनोंमें इसके हरे भरे दिन दिखाई देनेकी आशा हुई है। आज लोगोंके मनमें फिरसे वैद्यकविद्याका गौरव दीखने लगा है, उपयोगिता मालूम हुई है, देश भरमें वैद्यकविद्याका पुनरुद्धार करनेकी चर्चा प्रबलतासे चलने लगी है, कई प्रकारके उपाय सोचे जाते हैं, सभा समितियां होने लगी हैं। अतः ऐसे समयमें प्रत्येक वैद्यको इस ओर ध्यान देना आवश्यक ही नहीं वरन् कर्त्तव्य भी है। यह निबन्ध भी इसी आशयसे तृतीय वैद्यकसम्मेलनकी सेवा-में भेट करनेके लिये लिखा गया है। आशा है कि सम्मे-लन इस छोटेसे कार्यको स्वीकार कर बाधित करेगा। इसमें वैद्यककी वर्त्तमान अवस्था, अवनतिका कारण और उन्नतिके उपाय-समयके उपयोगी औद्योगिक सिद्धान्तों (Business Principles) के अनुसार विस्तारसे कहे गये हैं। पक्षपात रहित होकर स्वयं वैद्योंकी और औषध कर्त्ताओं-की अवस्थाका एक अच्छा ख़ाका खींच बताया है; और आजके वैद्योंकी दशा किस प्रकारकी है ?, उनकी कार्य प्रणाली कैसी है ? वे किस किस प्रकार वैद्यक नियमका उल्लंघन किया करते हैं ? आदि ये सब इसमें भले प्रकार दर्शाये गये हैं। इससे वैद्यक संसारमें एक नवीन भाव उत्पन्न होगा।

वैद्यककी अवनति इसमें एक भिन्न ही प्रकारसे ब-तायी जानेसे, किसीके मतको नवीन कल्पना कह देना, व अपनी रुचिके विरुद्ध समझ सहसा बिना कारण ही उतावलमें उस पर अविश्वास कर लेना, अथवा मन चली समालोचना लिख डालना उचित नहीं होता। अतः यह निबन्ध जिन जिन विद्वान् डाकृरों, वैद्यराजों, हकीमों, वर्त्तमानपत्रों और मासिकपत्रोंके विद्वान् सम्पादकोंकी सेवामें भेजा जावे उनसे सविनय प्रार्थना है कि वे इस अति आवश्यक विषय पर सप्रमाण मननपूर्वक विवेचन करनेकी कृपा करें। यह निबन्ध यूनानी वैद्यकके लिये भी लाभकारी ठहरेगा।"

इसके पश्चात आपने बहुत ही योग्यताके साथ निबन्धका आरम्भ किया है, काल-अकाल मृत्युका निर्णय कर आयुर्वेदकी आवश्यकता और आदि उत्पत्तिका विव-रण किया गया है। इसके पश्चात पूर्वकालकी उन्नत अव-स्था दिखलायी गयी है कि एलोपैथी और होमियोपैथी चिकित्सा प्रणाली हिन्दू वैद्यकके लिये नयी बात नहीं यह सब आयुर्वेदके अन्तर्गत है। अपनी वैद्यक विद्याकी पूर्वकालीन उन्नत अवस्थाका वर्णन करते हुए आपने लिखा है:—

"इतिहाससे पता लगता है कि अगले ज़मानेमें वैद्यक विद्या हमारे देशमें इतनी सर्वांगपूर्ण अवस्थामें थी कि

उस समयमें शिवजीसे काटा हुआ ब्रह्मा जीका मस्तक फिरसे जोड़ दिया गया था। देवासुर युद्धमें आहत हुए देवताओंके अङ्ग जोड़ दिये जाते थे। असलीके समान बनावटी दांत पूषा ऋषिके बैठाये गये। नेत्र हीन भग ऋषिके नेत्र खोले गये। वृद्धावस्थासे च्यवन ऋषि युवा बनाये गये और फोड़े हुए नेत्र पीछे ठीक कर दिये गये। रोगोंमें चन्द्रमाके समान राजयक्ष्मा रोगी तक आरोग्य किये जाने लगे। राम रावणके युद्धमें मेघनादके शक्तिवाण-से मूर्च्छित हुए लक्ष्मण सचेत किये गये। यह मूर्च्छा इतनी भयङ्कर थी कि स्वयं मर्यादापुरुषोत्तम तक शोक करने लगे थे। कटा हुआ असली शिर न मिलनेसे गणपति पर हाथीका और दक्ष प्रजापति पर बकरेका मस्तक बड़ी सफ़ाईसे जोड़ दिया गया। दाधीच ऋषिका मस्तक कुछ कालके लिये अलग काट कर रख देना, और घोड़ेका मस्तक लगा कर कार्य निकाल लेना, और फिर पीछे वही उनका असली शिर लगा देना। कहां तक कहें भगवान्के मोहिनी अवतारसे ठगे हुए अमृतसे वञ्चित दैत्य लोग जब देवताओंसे युद्धमें मारे गये तब भारतवर्षके गौरवको बढ़ानेवाले भगवान् शुक्राचार्य्यने उनको अपनी सञ्जीवनी विद्या द्वारा पुनः जीवित कर दिया। ऐसे ही हिन्दुओंके पूजनीय सत्यव्रता राजा हरिश्चन्द्रके पुत्रको सर्प दंशसे पुनः जीवित कर देना आदि कितने ही अद्भुत चमत्कारी प्रयोग इस

विद्याके प्रतापसे हुए थे। जिनका किया जाना तो क्या सहसा विश्वास भी ले आना आज हम हिन्दू सन्तानोंको भी, वह शक्ति वह बुद्धि और वह दृष्टि न रहनेसे, असम्भवसा प्रतीत हो रहा है। वैद्यक शास्त्र-जिससे संसारका ऐसा ऐसा उपकार हुआ था–एक समय इस देशमें इतनी उन्नत अवस्था पर था कि जिसका वर्णन करनेको न तो हमारे पास सम्पूर्ण सामग्री ही रही है न लेखनीमें ही वह शक्ति है। यद्यपि आज अब वह समय नहीं रहा है, इतनी इस विद्याकी कमी हो चली है, प्रति पक्षमें नवीन नवीन चिकित्सा प्रणालियां राज्य संरक्षासे प्रचरित होती जाती हैं, गांव गांवमें पाश्चात्य विद्याके होस्पिटल डिस्पेन्सरियां (Hospitals, Dispensaries) खुली हैं; तब भी करोड़ों मनुष्य पूर्वोक्त चमत्कारकी झलक बनी रहनेके कारण हमारे सच्छास्त्रों पर अटल विश्वास बनाये हुए हैं। अपने परिश्रमसे उन्नतिकी चरम सीमा तक पहुँचे हुए पाश्चात्य विद्वान् तक उस उच्च दशाको स्वीकार करते हैं और इसके मर्मका पता लगानेको आकुल हैं।”

इसके आगे चलकर वर्तमान शोचनीय अवस्थाका खाका खींचा गया है और अवनतिके जो कारण अकसर लोगोंके मुँहसे सुने जाते हैं उनमेंसे १२ कारण संगृहीत कर दिखाये गये हैं:—

(१) "कोई कहते हैं वैद्यकका अनुभव पुराना हो गया है और पहिलेसे ऋतु काल आदि में बहुत कुछ अन्तर पड़ जानेपर भी अब तक वह वैसा ही माना जा रहा है।

(२) कोई कहते हैं वैद्यकमें शारीरक विद्याकी असलमें कमी है। इस विषयमें आयुर्वैदिक कालमें इतनी अधिक खोज नहीं हुई थी जितनी अब पश्चिमी डाक्टरोंने नवीन यन्त्रोंकी सहायतासे की है। इसके बिना चिकित्साका अंग अधूराही रह जाता है।

(३) कोई कहते हैं वैद्योंमें 'शस्त्र चिकित्सा' (Surgery) का प्रचार बिलकुल नहीं है। इसीसे इसकी प्रतिष्ठा और उपयोगितामें कमी हुई, है और रोगियोंको भी दूसरोंका आसरा लेना पड़ता है।

(४) कोई कहते हैं शिक्षाके लिये विद्यालयोंका एकदम अभाव है। पढ़े बिना पुस्तकों हीके आधार पर चिकित्सा करनेसे लाभ नहीं होता। कौन कहां पर जाके किस प्रकारसे विद्याभ्यास कर सकें।

(५) कोई कहते हैं वैद्यकमें पाठ्य पुस्तकें नहीं हैं। अच्छी अच्छी पुस्तकोंका भाण्डार रहने पर भी इस समयकी उपयोगी कोई भी पुस्तक नहीं है। विना उपयोगी ग्रन्थोंके ज्ञान नहीं बढ़ सकता।

(६) कोई कहते हैं आज हलदी धनियेके नाम जानने वाले ही वैद्य बन बैठे हैं। आज कोई शास्त्र पढ़नेका श्रम नहीं करते। अधिकांश अनपढ़े ही वैद्यकशास्त्रके चिकित्सक हैं। यही कारण है कि लाभकी अपेक्षा हानि अधिक दीख पड़ती है, श्रद्धा घटती जाती है, और पढ़े लिखे लोग उनका आदर नहीं करते हैं।

(७) कोई कहते हैं वैद्यकीय औषधियां अच्छी और सस्ती नहीं मिलतीं। किन्हीं किन्हीं वैद्योंको छोड़ कर बहुतोंके पास तो तैयार तक नहीं रहतीं। स्वयं रोगियोंको आवश्यकता पड़ने पर वैद्यजीके लेखानुसार पंसारियोंसे लाके स्वयं कूट पीसके तैयार करनी होती हैं। तैयार औषध न पानेसे बहुत कम लोग इनसे चिकित्सा कराते हैं।

(८) कोई कहते हैं आयुर्वेदके धर्मार्थ चिकित्सालय (Charitable Dispensaries) नहीं हैं। साधारण स्थितिके लोग मुफ़्तमें चिकित्सा न पाने से मजबूर होकर अस्पतालों (Hospitals) का आश्रय लेते हैं। इससे सर्व साधारणमें उन्हींका प्रचार बढ़ाते हुए लोग डाक्टरों हीका गुणगान किया करते हैं।

(९) कोई कहते हैं वैद्योंको उत्तेजना नहीं मिलती, कोई साहस नहीं दिलाता। इससे उनमें सुस्ती छा गयी है। पेटकी फ़िक्रके मारे वैद्योंसे नये नये आविष्कार नहीं होते। उन्हें हम ही आज उद्योगहीन बना रहे हैं।

(१०) कोई कहते हैं वैद्योंकी सभा समितियां नहीं होतीं। वे अपनी कार्य प्रणालीका समयके अनुसार शोधन नहीं करते। नये नये प्रकट रोगों पर कुछ खोज नहीं की जाती। कोई निःस्वार्थ अगुवा वैद्यककी सेवाके लिये तैयार नहीं होते। इसीसे दिन दिन दशा गिरी जा रही है।

(११) कोई कहते हैं वैद्यकमें स्वतन्त्र पत्र नहीं। विना इसके इस उन्नत जमानेमें आगे बढ़ना हो नहीं सकता। कैसे अपने अनुभव और आविष्कार संसारमें फैलाकर साहित्यकी वृद्धि करते हुए लोगोंकी रुचि इस ओर बढ़ावें?

(१२) कोई कहते हैं आरोग्यता सम्बन्धी सभी काम डाक्टरों हीके हाथमें सरकारने सौंपे हैं। उन्हींके 'अस्वास्थ्य सरटीफिकट' (Sick certificates) से राज्य कर्मचारी, रेलवे नौकर आदि छुट्टी वगैरह पा सकते हैं। इसीसे बहुतोंको उन्हींके अनुयायी हो जाना पड़ता है, उन्हींसे चिकित्सा करानी होती है और उन्हींका आदर सत्कार करना पड़ता है। अतः हम अपना प्रभाव लोगों पर जमा नहीं सकते। क्योंकर हमसे चिकित्सा करानेवाला राज्यसे छुट्टी वगैरह पा सकता है? इतने लाभोंको छोड़ हमसे कौन चिकित्सा कराने बैठेगा? यही बात है कि बहुतोंकी इच्छा होने पर भी हमसे लाभ उठाना बन नहीं पड़ता।"

आपने कारण बहुत जाँचकर लिखे हैं अतएव उनके विषयमें विवेचन करनेकी आवश्यकता नहीं है । अब आवश्यकता केवल इस बातकी है कि इन कारणोंको दूर कर किस प्रकार अपने वैद्यककी उन्नति की जाय । इसमें सन्देह नहीं कि हमारा आयुर्वेद त्रिकालदर्शी ऋषियोंके द्वारा वर्णित है उसमें भ्रमप्रमाद नहीं हो सकता । तथापि यह बात माननी पड़ेगी कि उन्होंने जो लिखा है अपने समयके लोगोंकी शक्ति और प्रकृतिका विचार कर लिखा है । सिद्धान्त उनके अवश्य ही अबाध हैं ; तथापि कई बातोंमें हमें नयी शोधकर उन्हें अपनी शरीर-प्रकृति और शक्तिके अनुसार कर लेना चाहिये । मान लीजिये हमें शिलाजीत खाना है । यदि पुस्तकोंको देखकर हम उसकी मात्रा लें तो उत्तम मात्रा चार तोला और निकृष्ट मात्रा एक तोलेकी लेनी पड़ेगी । किन्तु आजकल हम इतने निर्बल हैं कि निकृष्ट मात्रा एक तोला सेवन करने पर भी शायद ही जीवित रह सकें । पुराने और अनुभवी वैद्य इन बातोंका विचार कर अवश्य उपयुक्त मात्रा निश्चित करते हैं तथापि सर्वसाधारणके लिये सिद्धान्त निश्चित कर लिपि बद्ध कर देना उत्तम है । आपका बतलाया हुआ दूसरा कारण भी योग्य है और इस सम्मेलनके सभापति श्रीमान कविराज गणनाथ सेन महोदय प्रत्यक्ष अनुभवके अनुसार "प्रत्यक्षशारीर" नामक

ग्रन्थ संस्कृतमें श्लोक बद्ध लिख रहे हैं; आशा है उससे शारीरविद्याकी बहुत कुछ न्यूनता दूर हो जावेगी। तीसरा कारण भी सत्य है और एक यही कारण है कि जिससे भारतीय वैद्योंको सब तरह योग्य होने पर भी नीचा देखना पड़ता है। किन्तु यह काम भारी है और आजही नहीं हो सकता। ईश्वर चाहेगा तो धीरे धीरे इस विषयमें भी भारतीय वैद्यक पूर्व गौरव प्राप्त करेगा। चौथे कारणके विषयमें आयुर्वेदकी हितचिन्तना करनेवालोंका ध्यान आकर्षित हो रहा है और आशा है धीरे धीरे इस कार्यकी सिद्धि भी हो जावेगी। वैद्यककी पाठ्य-पुस्तकोंके विषयमें सम्मेलनका ध्यान आकर्षित हुआ है। किन्तु सम्मेलन आज ही इस कामको अपने शिर लेनेमें समर्थ नहीं है। तथापि उसके सुयोग्य सभ्य यदि इस पर ध्यान देंगे तो बहुत सी त्रुटि दूर हो सकेगी। (६) छठे कारणकी फरियाद मिटानेके उद्देश्यसे ही सम्मेलनने शिक्षा और परीक्षा समितिकी स्थापना की है। (७) यदि ईमानदारीसे सच्ची शास्त्रोक्त आयुर्वैदिक औषधियां बनाकर बेचनेवाली व्यापारी कम्पनियां खुलें तो सातवां कारण दूर हो सकता है, किन्तु जब तक विज्ञापनसर्वस्व लुटेरे वैद्योंका जमाना है तब तक ऐसी कम्पनीकी सफल-तामें जरा विलम्ब लगेगा। (८) आठवें कारणके दूर करनेके विषयमें सम्मेलनने प्रस्ताव पास किया है और जब तक

सर्वत्र धर्मार्थ आतुरालय न खुल जावें तब तक उत्साही वैद्योंने गरीबोंको मुफ़ दवा और आवश्यकता पड़ने पर भोजन आदि भी देकर औषधोपचार करनेका भार अपने ऊपर लिया है। सब वैद्योंको इसका अनुकरण करना चाहिये। (८) नवां कारण बहुत दुरुस्त है और इस समय वैद्योंको अपने पुरुषार्थका ही विशेष भरोसा रखना चाहिये। सर्वसाधारण और राजदरबारसे सहायता पाये बिना हमारी उन्नतिमें बहुत बाधा हो रही है तथापि कोई उपाय नहीं है। हां, योग्यता और प्रभाव बढ़ाते हुए इसके लिये प्रयत्नशील रहना आवश्यक है। (१०) दशवें कारणको दूर करनेका प्रयत्न हो रहा है। आशा है शीघ्र ही अनेक स्थानोंमें वैद्योंकी सभा समितियां स्थापित होने लगेंगी। (११) भगवानकी दयासे इसकी पूर्ति हो रही है किन्तु वैद्यों और सर्वसाधारणसे उत्साह और सहायता पानेकी बहुत आवश्यकता है। नहींतो वैद्यकके पत्रोंका जीवन धारण करना ही कठिन है फिर नये आविष्कार और अनुभव फैलाना तो दूरकी बात है। (१२) बारहवां कारण बहुत योग्य है और इसी वर्ष सम्मेलन इस कामको उठाने वाला था किन्तु अभी इसमें कई अड़चनें हैं। हमें अभी अपनी योग्यता संसारको दिखानेके लिये बहुत कुछ करना है। हर एक कामकी सफलतामें योग्यता और प्रभावकी आवश्यकता रहती है। तथापि

सम्मेलनका ध्यान इधर आकर्षित है और समय पाते ही वह इसके लिये प्रयत्न करनेमें नहीं चूकेगा।

✓ इस निबन्धमें अवनतिका वास्तविक कारण 'कार्य विभागका नाश' बतलाया गया है और सबसे अधिक इसी पर जोर डाला गया है। आपका कथन है कि यदि औषधि बनाने और चिकित्साकर व्यवस्था बतानेके काम अलग अलग कर दिये जावें तो वैद्योंको अनुभव बढ़ाने, शास्त्रालोचना करने, और नयी बातोंके शोचने विचारनेका अधिक समय मिलेगा और वे वैद्यककी उन्नतिमें ध्यान दे सकेंगे। अभी वैद्योंका बहुतसा समय औषधियोंकी तैयारीमें लगता है। जो समय बचता है वह रोगियोंके देखने और उन्हें व्यवस्था बतानेमें बीत जाता है। इससे आयुर्वेदकी उन्नतिके विचारोंको उनके दिमागमें स्थान ही नहीं मिलता। आप चाहते हैं कि वैद्य लोग रोगियोंको देखकर व्यवस्था लिख दिया करें और औषधिके लिये ऐसी कम्पनियां रहें जो बनी बनायी औषधि रक्खें और लोगोंको उचित मूल्य पर दिया करें। ऐसी कम्पनियोंकी व्यवस्था भी आपने बतायी है कि कुछ सुयोग्य वैद्योंकी देख रेखमें औषधियां बना करें। आपका विचार उत्तम है और निस्सन्देह कार्यमें परिणत करनेसे लाभकी सम्भावना है; किन्तु इस समय भारतकी जैसी अवस्था है उसे देखते हुए इसमें सफलता प्राप्त करना कठिन दिखता है। ऐसी

कम्पनियोंका ध्यान रुपया कमानेकी ओर रहेगा और खासकर जब कम्पनीवाले देखेंगे कि विज्ञापन बाज़ लोग दीन ईमान किसीकी परवाह न कर हज़ारों रुपये कमा लेते हैं तब उन्हें धर्म और सत्यके मार्ग पर दृढ़ रहना ज़रा कठिन होगा। सम्भव है लोभमें आकर वे कीमती औषधियोंमें सभी कीमती औषधियां ठीक ठीक न डालकर कबाड़ करें और अपनी कमज़ोरीका दोष वैद्यों-के शिर पटकनेका प्रयत्न करें। निरीक्षण करनेवाले वैद्य भी सम्भव है कर्तव्य शिथिल होकर कम्पनीकी चोखाई कम करनेका कारण हों। अभी वैद्योंको इस बातका डर रहता है कि यदि हम उत्तम औषधि नहीं तैयार करेंगे तो हमारे रोगियोंको फायदा नहीं होगा और फिर हम परसे लोगोंका विश्वास घट जायगा। किन्तु अलग अलग विभाग होनेसे वैद्यलोग दूकानदार पर दोषारोपण करेंगे और दूकानदार लोग वैद्य पर; बीचमें हानि होगी सर्वसाधारणकी और जिस लाभके लिये उपाय शोचा गया था वह कुछ अंशों में व्यर्थ हो जायगा। यदि देखा जायकि भारतीयोंकी मानसिक स्थिति इतनी गिरी नहीं है तो इस विचारको काममें लाना अच्छा ही है। किन्तु इस विषयमें हकीम और अत्तारोंका परस्पर सम्बन्ध भी विचारणीय है। दोनों दलके लोगोंसे इस विषयमें पूछ पाछ कर तब राय निश्चित करना ठीक होगा। हम

देखते हैं कि बहुतसे हकीम लोग अत्तारोंकी प्रतारणासे दुःखित होकर स्वयं औषधियां बनाने लगे हैं। अतएव उचित संशोधनके साथ इस कामको करना ठीक होगा। इस विषयकी साधक बाधक बातें लिखनेमें व्यास जीने बहुत विचार और परिश्रम किया है अतएव वैद्य लोगोंमें इस विषयकी खूब आलोचना होनी चाहिये; जिससे एकतत्व निश्चित हो सके और आपका परिश्रम सफल हो।

इसके पश्चात आपने कार्य विभाग अलग अलग बन जानेकी सरल योजना बतलायी है और आयुर्वेदके पुनरुद्धारके लिये कई उपाय बताये हैं। उस अंशको हम नीचे उद्धृत किये देते हैं:—

आयुर्वेदके पुनरुद्धारका उपाय।

विभाग अपने आप अलग अलग हो जायँ इसके लिये एक तो औषध निर्माणशाला, वैद्यकफार्मेसी, लेबोरेटरी चलानेके लिये जाइण्ट स्टाक कम्पनी बनायी जावे। द्वितीय चिकित्सकों और निर्माताओंके लिये वैद्यकसे साररूप नवीन ग्रन्थ समयके उपयोगी रचे जाकर प्रकाशित किये जायँ। और तृतीय वर्त्तमान वैद्यों द्वारा आविष्कार की हुई नवीन औषधियोंकी जांचके लिये एक सभा स्थापित हो। इस प्रकारके तीनों प्रबन्ध हो जानेसे वर्त्तमान वैद्योंको लाभ होनेके साथ साथ स्वयं

वैद्यक विद्याकी भी आजपर्यन्तकी Up to Date वास्तविक उन्नति होगी। बहुत पैसा और समय नहीं लगेगा। विचार करनेके लिये भी अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। किन्तु प्रबन्ध करनेवालोंको स्वयं द्रव्यकी प्राप्ति होगी और यश भी उनका चहुँओर फैलेगा।

लिमिटेड निर्माणशालाकी आवश्यकता और लाभ।

सबसे पहिले औषधनिर्माणशालाके विषयमें यह कहदेना उचित होगा कि यद्यपि देशमें आज भी ५।४ ऐसी उच्चपद्धतिकी औषध संस्थाएं—वैद्यक फ़ार्मेसीज़ हैं, जहां प्रायः सबही शास्त्रोक्त औषधियां शुद्ध बनी बनायी मिल जाती हैं, परन्तु उनपर अबतक सर्वसाधारण वैद्योंका पूरा विश्वास नहीं जमा है। कारण पहिले जिन कारणोंसे विभाग एकत्र करनेकी आवश्यकता पड़ी थी उनका वहां प्रत्यक्षमें विश्वसनीय कोई प्रतिकार नहीं किया गया है। प्रचलित संस्थाओंके अकेले ही एक मालिक कर्त्ता--धर्त्ता हुआ करते हैं। इससे कदाचित् वहां लोभवश पुरानी औषधियां काममें लायी जायँ, मूल्यवान् पदार्थोंकी एवज़में कुछ और ही हलके पदार्थ मिलाये जायँ अथवा यथोक्तरीतसे तैयार न की जायँ तो कौन कह सकता है कि प्रायः सभी औषधालय आज धन

कमानेके विचार हीसे खोले गये हैं ? इससे इन त्रुटियों-का हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है। ऐसा करनेके लिये उनको कोई रोक नहीं सकते हैं। कोई अपने यहां ऐसा न किये जानेकी गारण्टी नहीं देते हैं। और न अबतक प्रभावशाली सभा समिति द्वारा कोई प्रतिष्ठित ही हुए हैं। फिर किस प्रकार वैद्योंको विश्वास आ सके कि तैयार की हुई औषधियां अपने नामानुसार प्रभावशा-लिनी होंगी ? द्वितीय धन कमानेकी अभिलाषासे खुले होनेके कारण बनी हुई औषधियोंके मूल्य प्रायः ला-गतसे चौगुने वा औरभी अधिक हुआ करते हैं। उदाहरण-के तौर पर श्वासकुठार रस वैद्य अपने घर अढ़ाई आने तोलामें तैयार कर सकते हैं; तब वर्त्तमान औषधालयों-से तैयार मंगाने पर कहीं ७ मात्राका एक रुपया, कहीं एक तोलेका एक रुपया, कहीं डेढ़ रुपया लगता है। फिर किस प्रकारसे महंगी दवायें मंगाकर काममें लायी जायँ ? तृतीय इन औषधि संस्थाओंमें जो नफा रहता है उसके सर्वाधिकारी एक अकेले मालिक ही होते हैं। औषध मँगाने वाले वैद्योंको जिनके कारण ही इतना नफ़ा उन्हें रहा है कुछ भी हिस्सा नहीं मिलता है। इत्यादि कई एक कारणोंसे बनी बनायी औषधियां अभीकी संस्थाओंसे मँगाने पर कोई प्रत्यक्ष लाभ न दीखनेसे बहुत कमही वैद्य तैयार औषधें मंगाकर उपयोग करने-

का ध्यान धरते हैं। इन सब त्रुटियोंको दूर करनेके लिये हमें १० । १० रुपये के २०००० शेअरोंसे २ लाखकी पूंजी एकत्र कर सार्वदेशिक लेबोरेटरी (Labouratary) वा वैद्यक फ़ार्मेसी लिमिटेड करके खोलनी चाहिये, जहां शास्त्रोक्त सभी औषधियां शुद्धताके साथ बनायी जाकर खर्चा निकालके नाम मात्रके नफ़ेसे उचित मूल्यमें बेची जायँ। इसका प्रबन्ध वैद्योंकी एक प्रभावशालिनी सभा-बोर्डआफ़ डाइरेक्टर्स (Board of Directors) से हो, और जहां तक होसके प्रायः सब हिस्से वैद्यों हीके हाथ बेचे जायँ। इस प्रकार एक लिमिटेड कम्पनी द्वारा फ़ार्मेसी चलायी जानेसे सभी वैद्योंको विश्वास आ जायगा कि यहां किसी एक हीको लाभ हानि न होनेसे किसी भी प्रकारसे ऐसा न हो सकेगा कि जिनसे औषधियोंके प्रभावमें कुछ कमी व वैद्यकके नियमका उल्लंघन हो। द्वितीय शुद्ध वैज्ञानिक रीतिसे बनी हुई औषधियां उचित मूल्यमें मिल जायँगी। तृतीय वहां जो कुछ नफ़ा रहेगा वह हिस्सेदार शेअर लेने वालोंके हाथ भी लगेगा। इत्यादि कई एक सुभीतोंसे सभी वैद्य इस लिमिटेड संस्थासे आवश्यकतानुसार दवाइयां मँगाकर उपयोग करने लगेंगे जिससे निर्माण और चिकित्सा विभाग अपने आप अलग अलग होनेमें बहुत सुगमता हो जायगी। जब बाजारमें खातिरी पूर्वक बनी बनायी उमदा औषधियां प्रायः लागत

क़ीमत हीमें मिल जायँ, तब ऐसा कौन वैद्य होगा जो अपने हाथसे सब दवाइयां बनाकर परिश्रम और समयकी हानि सहेगा? प्रत्युत स्वयं वैद्योंका ऐसी संस्थामें हिस्सा रहनेसे वे तो आप इसका अधिक प्रचार बढ़ानेका ख़ूब प्रयत्न करेंगे। अब रही पूंजी (Capital) की बात; तो इसके विषयमें इतना ही कहना अच्छा होगा कि व्यवसायके लिये तो इतनी पूंजी एकत्र हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है। यदि एक एक वैद्य भी १००। १०० ही रुपयेके शेअर ले तो इतनी सी क्या इससे भी चौगुनी पूंजी थोड़े ही समयमें एकत्र हो सकती है।

समयके उपयोगी नवीन ग्रन्थोंकी आवश्यकता।

(२) दूसरा उपाय चिकित्सकों और निर्मातात्र्योंके लिये समयके उपयोगी ग्रन्थोंकी रचना कर प्रकाशित करना है। वैद्यकशास्त्रमें अबतक ८०० के ऊपर ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। और इनमेंसे २००। २५० पुस्तकें प्रेस देवकी कृपासे प्रकाशित भी हो चुकी हैं। पर इनमेंसे बहुतेक तो केवल पाठान्तर वा शब्दोंकी चातुर्य्यता हीसे एक दूसरेसे संग्रह की जाकर बनी हैं। जो औषधियां पहिले ग्रन्थमें कही गयी हैं, वे ही दूसरेमें, तीसरेमें, और चौथेमें नामके फेरफार आदिसे लिखी हुई हैं। कई व्याकरणी पण्डितोंने बिना अनुभव किये ही लोभवश होकर वा नाम पानेकी अभिलाषासे अनेक छोटी मोटी पुस्तकें रचके वैद्यक-

साहित्यका बोझा वृथा ही बढ़ा दिया है। अतः आयुर्वेदके मर्म जाननेवाले वैद्यों द्वारा समयके उपयोगी ग्रन्थ बनाये जानेकी नितान्त आवश्यकता है। विशेषकर Hand books की शैलीकी पुस्तकें इस समयकी उपयोगी हो सकती हैं। अभी हमें इसके लिये सबसे पहिले *वैद्यगाइड नामक पुस्तक बनाकर प्रकाशित करनी होगी।

[१] वैद्यगाइड ग्रन्थकी व्याख्या।

पाठकगण! आज ऐसी कोई पुस्तक नहीं है जिससे चिकित्सकोंको एक साथ ही मालूम हो जाय कि अमुक रोग पर अमुक औषधियां अमुक अमुक ग्रन्थोंमें कही गयी हैं, और वर्त्तमान वैद्यों द्वारा ये नये नये आविष्कार निकले हैं। इत्यादि जाननेके लिये वैद्योंको बहुत द्रव्य ख़र्च कर २००। २५० पुस्तकोंका संग्रह करना पड़ता है। और एक एक रोगके लिये इतनी पुस्तकें टटोलनेकी आवश्यकता होती है। पर चिकित्सकोंको एक तो इतना समय उन सबको देखनेका न मिलनेसे द्वितीय किस ग्रन्थमें कौनसा प्रयोग कहा गया है वह सब याद न रहनेसे बहुत कठिनाइयां भोगनी पड़ती हैं। उसमें भी सभी वैद्योंके पास तो इतने पुस्तक संग्रह नहीं मिलते और न यह मालूम ही कियाजा

* इस प्रकारके नामोंके विषयमें बहुतोंको शंका होगी। पर लोगोंका ध्यान इस ओर अपने आप किसी भी प्रकारसे आकर्षित करानेके लिये ही ऐसे अंगरेज़ी मिश्रित हिन्दी नाम रखे गये हैं।

सकता है कि वर्त्तमान वैद्यों द्वारा क्या क्या नवीन आविष्कार हो चुके हैं और वे कैसे हैं? प्रायः इन त्रुटियोंको दूर करनेके लिये वैद्यगाइड नामक पुस्तककी परम आवश्यकता है। यह अब तकके छपे तथा लिखे ग्रन्थोंसे संग्रह करके बनायी जाय। इसमें किस किस रोग पर क्या क्या औषधियां कौन कौनसे ग्रन्थमें कहां कहां पर कही हैं, वे सब एक उचित ढङ्गसे बताई जायँ और औषधियोंके विशेष विशेष गुण मालूम हो जानेके लिये उनपर सांकेतिक चिह्न लगा दिये जायँ। साथ ही नवीन आविष्कारोंके समावेशके लिये प्रबन्ध कर्त्ता द्वारा वर्त्तमान वैद्योंके नाम यह सूचना निकाल दी जाय कि "जिन्होंने जिस रोग पर जो औषधि अनुभव की हो उसका नमूना और विवरण पत्र आदि सब अमुक स्थान (जो निश्चित हो) पर भेजनेकी कृपा करें, वहां उनकी जांच कराकर औषधका नाम उक्त 'गाइड' में प्रकाशित किया जावेगा और साथ ही आविष्कर्त्ताका नाम, पता और औषधिका मूल्य भी रहेगा"। उस प्रकारकी पुस्तक बन जानेसे वैद्योंके समय और द्रव्यकी बचत होगी, अनेक पुस्तकोंका भार नहीं उठाना पड़ेगा, आतुरताके समय अमुक रोग पर कौनसी औषध देनी श्रेयस्कर है? यह थोड़े ही समयमें ध्यानमें आजायगी। पढ़ाई करनेमें बहुत सुगमता होगी और पाश्चात्य विद्वान भी इस एक ही पुस्तकसे आयुर्वेदका गौरव समझने

लगेंगे। साथ ही आविष्कारकर्त्ताओंको भी उत्तेजना मिलेगी। यह पुस्तक ५ विद्वानों द्वारा बनवायी जानेसे अनुमान एक वर्षमें तैयार हो जायगी। पृष्ठ संख्या रायल आठ पेजी साइज़की लगभग ८८० होगी। बनवानेमें तीन हज़ार रुपये व्यय होंगे। और दो हज़ार प्रतियां छपवाने पर दो हज़ार और ख़र्च बैठेगा। इस प्रकार पांच हज़ारमें दो हज़ार प्रतियां प्रकाशित हो जायँगी। एक एक प्रति भी तीन तीन रुपयेमें बेच देनेसे लागत शीघ्र वसूल हो कर प्रबन्धकर्त्ताको एक हज़ार नफ़ा बच रहेगा।

गाइड किस प्रकारसे बनानेमें सुगमता हो सकेगी? इसके लिये मैंने नमूने के* तौर १५ ग्रन्थोंसे संग्रह करके इसका 'ज्वर प्रकरण' छपाकर सम्मेलनकी सेवामें भेट किया है। आशा है आप लोग उसपर ध्यान देकर उचित प्रबन्ध करेंगे।

---

* गाइड की आवश्यकताके विषयमें 'सुधानिधि'के सम्पादक आयुर्वेद पंचानन पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल माघ वदि ३०के एक पत्रमें लिखते हैं कि "म आपके परिश्रमकी कदर करता हूं। अगरेज़ीमें इस ढंगकी पुस्तकें हैं परन्तु अपने आयुर्वेदमें अब तक किसीने ऐसा प्रयत्न नहीं किया था। मुझे इस बातका अभिमान है कि इस कामको मेरे एक मित्रन पूरा करना विचारा है। आपका परिश्रम सराहनीय है। इसे देख कर विरोधी भी जान सकेंगे कि आयुर्वेद ज्वर पर कुनैन जैसी एक दवाके भरोसे रहने वाला नहीं है बल्कि सैकड़ों दवाइयां एक रोग पर भरी पड़ी हैं। आप शीघ्र ही पूरे रोगोंकी ऐसी ही गाइड तयार कर डालिये।……यदि आप इसे पूर्ण कर सकें तो बड़ा काम होगा…………

[२] वैद्यक फ़ारमाकोपिया ग्रन्थकी व्याख्या।

द्वितीय पुस्तक वैद्यक फ़ारमाकोपिया मूल श्लोक और भाषा टीका सहित आजतकके संशोधन करके बनायी जायँ। आज औषधियां तैयार करनेमें अनेक ग्रन्थों-की सहायता लेने पर भी यह पूरा निश्चय नहीं किया जा सकता है कि किस प्रकारसे बनायी जाने पर शुद्ध होंगी ? क्योंकि एक ही औषधके विषयमें किसी ग्रन्थमें तो कुछ और किसीमें और ही कुछ लिखा है। तैयार करनेकी विधिमें भी बहुत कुछ फेरफार है। साथ ही श्लोकोंकी भाषा टीका भी वैद्यकशास्त्रसे अनभिज्ञ केवल व्याकरणी पण्डितों द्वारा की हुई है। अतः अनेक पुस्तकें ख़रीद लेने पर भी काम नहीं चलता। इन कई एक अड़चनोंको ध्यानमें लेकर अबतक प्रकाशित हुए ग्रन्थोंसे संग्रह कर प्रकाशित करना बहुत उपयुक्त होगा। इसमें क्रमसे सभी शास्त्रोक्त औषधियां किस प्रकार किन किन द्रव्योंसे बनती हैं? और उनके गुण दोष क्या क्या हैं? ये सब अनुभव सहित वर्णित किये जांय। निर्माताओंके उपयोगी अन्य विषय भी विस्तारसे कहे जांय। इससे इधर उधरसे बटोर कर बिना अनुभव किये ही नवीन पुस्तिकाएँ लिखनेवाले होश सम्हाल लेंगे। आयुर्वैदिक औषधियां शुद्ध तैयार किये जानेका और अधिक प्रचार बढ़ेगा। इस एक ही पुस्तकसे निर्माताओंके सभी काम

सुगमतासे निकल जावेंगे। चिकित्सकोंको भी बहुत लाभ पहुंचेगा। घड़ेमें समुद्र भर दिये जानेकी भांति यह ग्रन्थ वैद्यककी ग्रन्थ माला देखते कोई बहुत बड़ा नहीं होगा। हिसाबसे पता लगता है कि वैद्यक साहित्यमें एक एक औषध हीके लिये कई पृष्ठ खर्च हो गये हैं। एक श्वास-कुठाररस हीके लिये १०।१० पंक्ति प्रति ग्रन्थके हिसाब १०० ग्रन्थोंमें सब मिलाकर एक हज़ार पंक्ति अर्थात अनुमान ३० पृष्ठके ऊपर लिखे गये हैं। तब इसमें तो १५ पंक्ति हीसे वह सब काम निकल जायगा, और पहलेसे बहुत सरलता भी रहेगी। यह ग्रन्थ प्रकाशित होजाने पर 'वैद्यगाइड' मानों इसका एक सूचीपत्र गिना जावेगा। यह ग्रन्थ ८ विद्वानोंकी सहायतासे दो वर्षमें तैयार हो सकेगा। पृष्ठ संख्या लगभग पांच हजार होगी। बनवाईके लिये ३२० रुपये प्रति मासके हिसाबसे लगभग ८००० हज़ार ख़र्च पड़ेंगे। दो हज़ार पुस्तकें छपानेपर इतना ही ख़र्च और पड़ेगा। कुल १३ हज़ारमें इसकी २ हज़ार प्रतियाँ छप जायँगी। एक एक प्रति १०। १० रुपयेमें भी बेची जानेसे लागत वसूल होकर ४ हजार नफ़ा रह जायगा।

[३] आरोग्यशास्त्र ग्रन्थकी व्याख्या।

तृतीय पुस्तक 'आरोग्यशास्त्र' नामकी प्रकाशित की जाय। किस रोग पर क्या पथ्य विहार आदि करने चाहिये ? किस प्रकारके साधनसे नीरोगता हुआ करती है

शरीर तन्दुरुस्त बना रहता है? इसका वैद्यक पद्धतिमें आज यथोक्त रीतिसे उपयोग नहीं होता है। इस विषयकी कोई सर्वांग सुन्दर पुस्तकभी नहीं है। स्वयं वैद्य तक इस विषयको अच्छी तरह नहीं समझते हैं! अतः इसके प्रथम भागमें तो प्रत्येक रोगके पथ्य, विहार, उपदेश, दिनचर्या, रात्रिचर्या आदि अनेक उपयोगी विषय अबतकके प्रकाशित हुए सभी पुस्तकोंसे सार निकालके कई वैद्योंकी सलाहसे बताये जायँ। द्वितीय भागमें वैद्योंकी जानकारीके लिये कई उपयोगी उपयोगी बातें डाक्टरी यूनानी और अन्य किसी शास्त्रसे संग्रह कर लिखी जांय जिससे वैद्य अन्य शास्त्रोंके हालातों तथा चिकित्सा प्रणालियोंसे वाक़िफ़ बने रहें। यह ग्रन्थ ४ वैद्य १ डाक्टर और १ हकीमकी अध्यक्षतामें बनाया जानेसे एक वर्षमें तैयार हो जायगा। पृष्ठ संख्या दोनों भागोंकी अनुमान एक हज़ार होगी। बनवाईके लिये ३५० रुपये माहवारके हिसाबसे साढ़े चार हज़ार रुपये खर्च पड़ेंगे। अढ़ाई हज़ार छपवाईके ख़र्चनेसे दोहज़ार पुस्तकें छप जायँगी। कुल सात हज़ार ख़र्च पड़ेंगे। एक एक पुस्तक साढ़े तीन तीन रुपयेमें बेच देनेसे भी असली लागत वसूल हो जायगी।

[४] परिवर्धित माधवनिदानकी व्याख्या।

चतुर्थ पुस्तक माधवनिदानका संस्कार कर परिवर्धित करना होगा। निदानके लिये 'माधव' अब तक

'निदाने माधवः श्रेष्ठः' वाले वाक्यको बराबर पालन करता आ रहा है। रोग ज्ञानके लिये यह एक ही अद्वितीय ग्रन्थ है। पर इस समयमें कई एक नवीन नवीन रोग और फूट निकले हैं, जिनकी भी पहिचान इसमें लिख दिये जानेकी एकदम आवश्यकता है। अतः परिशिष्ट रूपमें नवीन निकले रोगोंके निदान अन्य शास्त्रोंके आधार पर लिखे जायँ। और निदान साधनके अङ्ग-नाड़ी, मूत्र, मल, जिह्वा, स्वर, नेत्रकी परीक्षा और कालज्ञान आदि कई एक विषय बढ़ा दिये जायँ। इससे रोग निश्चय करनेका एक अच्छा संग्रह बन जायगा, अनेक ग्रन्थ नहीं खोलने पड़ेंगे। चिकित्सा शास्त्रमें नवीनता उत्पन्न होगी। वैद्योंका बहुत कुछ उपकार होगा। यह परिवर्द्धित ग्रन्थ ४ वैद्य १ डाक्टर और १ हकीमकी सलाहसे तैयार कराया जाय। इस ग्रन्थके तैयार करानेमें साढ़े तीन हज़ार रुपये ख़र्च पड़ेंगे। छपवानेमें दो हज़ार ख़र्च लगेगा। कुल साढ़े पांच हजारमें दो हजार प्रतियां छप जायँगी। एक एक प्रति २॥-२॥ रुपयेमें भी बेच देनेसे असली लागत वसूल हो जायगी।

नवीन ग्रन्थोंसे साहित्यको भी लाभ।

इस प्रकार आयुर्वेदके चार नये ग्रन्थ प्रकाशित हो जानेसे वैद्यक साहित्यका आज पर्यन्तका एक उत्तम संस्कार हो जायगा। नवीन शक्ति सञ्चारित होने लगेगी।

वर्त्तमान छपे हुए इतने ग्रन्थोंकी फिर विशेष आवश्यकता नहीं रहेगी। केवल २० ही रुपये में वैद्यक शास्त्रका सारा भण्डार एकत्र कर लिया जा सकेगा। द्रव्यकी शिकायत किसीको भी नहीं रहेगी। भविष्यमें तैयार होने वाले वैद्योंके लिये एक ऊंचे दरजेकी पाठ्य-पुस्तकें हो जावेंगी। सबका पाठ एक ही शैलीका रहेगा और वर्त्तमान वैद्योंका ज्ञान बढ़कर उनमें प्रतिद्वन्दियों-की समानता करनेकी शक्ति आ जायगी।

आविष्कारोंकी जांचके लिये सभाकी आवश्यकता।

(३) तीसरा उपाय नवीन आविष्कारोंकी परीक्षाके लिये प्रयोगशाला सहित प्रतिष्ठित विद्वानोंकी सभा स्थापित करना है। परीक्षक सभाकी चाल न रहनेसे लोग अपनी अपनी दवाइयोंकी मनमानी प्रशंसा बढ़ाकर विज्ञापन दे दिया करते हैं। परन्तु उनमें वैसा गुण न होनेसे ठगे जाकर लोग उनसे तथा देशी वैद्यकसे अविश्वसित बनते जाते हैं। ऐसे अविश्वस्त विज्ञापन दाताओंसे बचनेके लिये इङ्गलेण्डके वैद्यक सम्मेलनने हाल हीमें * (Secret

---

* अंगरेजीमें यह पुस्तक लण्डनकी 'वृटिश मेडिकल एसोसियेशन द्वारा' गत वर्ष प्रकाशित हुई है। पोथी बड़े ही कामकी है। इसमें इंगलेण्डमें बिकने वाली पेटेण्ट, वा कहनेको अकसीर गुण रखने वाली, प्रायः अनेक दवाइयोंका पृथक्करण (analysis) कर बताया गया है कि 'उनमें कौन कौनसी दवाई है-

Remedies) नामक पुस्तक छपवायी है। बार बार ठगे जानेसे अब लोग अच्छे अच्छे आविष्कारों पर भी आस्था नहीं करते हैं। इसके लिये लोगोंके मनमें अपने आप विश्वास आजानेके लिये जाँच पड़ताल कर औषधियों-की परीक्षा करनेवाली सभाकी आवश्यकता है। इस सभासे वर्त्तमान वैद्य अपने अपने नवीन आविष्कारों-की जाँच पड़ताल उचित फ़ीस देकर करा सकेंगे। व्यवस्था पत्रके अनुसार गुण पाया जाने पर वे उस औषधका प्रशंसा पत्र पा सकेंगे। यदि कोई विज्ञापन दाता किसी कारणसे अपने आविष्कारकी जांच न करावें तो स्वयं सभा क़ीमत होसे उसकी औषधियां मंगाके परीक्षा करलेगी और उसके यथोक्त गुणदोष ब्यौरेवार सर्व साधारणमें जाहिर करदेगी। ऐसा प्रबन्ध हो जाने पर एककी अनुभव की हुई औषधिसे अन्य लोगभी सुग-मतासे लाभ उठा सकेंगे। अच्छी अच्छी औषधियोंका प्रचार

और किस किस प्रमाण तौलसे डाली गयी है। और उनकी असली लागत क्या बैठती है ? साथ ही भिन्न भिन्न रोगों पर औषधि विक्रेताओंके दिलचस्प इश्तिहारों पर बड़ी खूबीके साथ टीका टिप्पणी लिखी गयी है। चौदह आनेमें अंगरेज़ी बुकसेलरोंके यहां पर यह पुस्तक मिल सकेगी। क्याही अच्छा हो कि इस प्रकारकी हमारे यहा भी कोई पुस्तक लिखी जाय। हमारे देशमें भी कौडियोंकी दवाओंके बडे बडे नाम लिख विज्ञापन बाज़ी द्वारा कोई कोई अठगुणा बारह गुणा ही नहीं २० । ४० गुणा तक ठगते हैं ! अतः ऐसे लोगोंसे बचनेके लिये ऐसी पुस्तक भी बहुत मदद देगी।

बढ़ेगा। लोगोंमें ऐसी औषधियोंसे श्रद्धा उत्पन्न होने लगेगी। रोगियोंको बड़ा सन्तोष होगा और वे सभा द्वारा पास की हुई औषधियां विश्वासके साथ घर बैठे मँगा सकेंगे। वैद्यकविद्याको रसातलमें पहुंचानेवाले धोखे-बाज़ोंकी पोल खुल जायगी। वे अपने आप अन्तर्ध्यान हो जायँगे। सरकार भी विज्ञापन वालों पर कानून बनानेकी अभिलाषा नहीं दर्शावेगी। सचमुच सभाके सरटीफ़िकटका धीरे धीरे लोगोंके मनमें इतना विश्वास और आदर पैठ जायगा कि फिर सभाके प्रशंसा पत्रके बिना बहुत कमही औषध बर्त्ती जाने लगेंगी। इससे स्वयं वैद्योंको तब अपने आपही परीक्षा कराकर प्रशंसापत्र लिये बिना काम नहीं चल सकेगा। ऐसी सभाका ख़र्च फ़ीस द्वारा आगे अच्छे प्रकार चल जायगा पर अभी प्रारम्भ ही प्रारम्भ में ५००। ६०० रूपये की सहायता देनी होगी। यह सभा एक दूसरी सुव्यवस्थित संस्थाकी संरक्षकतामें रहने होसे वास्तविक मनोरथ सफल हो सकेगा।

सम्मेलनसे प्रार्थना।

हे आयुर्वेदके अनुयायियो! येही तीनों साधन हैं कि जिनसे चिकित्सा और निर्माण विभाग अपने आप अलग अलग बन जायंगे। किसीको किसी भी प्रकारका कष्ट नहीं होगा। वर्त्तमान वैद्य स्वयं ऐसा करनेके लिये राज़ी होंगे। स्वयं उन्हें इस प्रकारके प्रबन्ध से बहुत

लाभ पहुंचेगा, और उनकी भावी सन्तानका भी कल्याण होगा। इनसे वैद्यक विद्याकी दिन प्रति दिन उन्नति होने लगेगी, और उज्वल चमत्कार सारे संसारमें पहलेकी तरह फैल जायगा। अतः देशके वर्त्तमान वैद्योंको-सम्पूर्ण हिन्दू जाति को-आयुर्वेदसे प्रीति रखनेवाले सभी सज्जनोंको-राजा महाराजाओंको-चाहिये कि वे इसपर अच्छे प्रकारसे विचार करें, खूब सोचें और निश्चय होनेपर बैठे न रहकर इनको कार्यमें परिणत करें। औषध निर्माणशाला-वैद्यक फ़ार्मेसी-के लिये लिमिटेड कम्पनी की व्यवस्था का प्रबन्ध किया जाना चाहिये। पुस्तकें बनवाई जानी चाहियें। तैयार करनेमें पहिले द्रव्यकी आवश्यकता होगी। यदि हम मेंसे प्रत्येक व्यक्ति एक एक पुस्तक भी तैयार कराने का बीड़ा उठाले, तो सहज हीमें पुस्तकोंका काम हो जायगा। इससे प्रबन्धकर्त्ता की विख्याति होगी और लाभ भी रहेगा। यदि ऐसा न होसके अथवा उचित न जान पड़े तो द्रव्य एकत्र कर काम चलाना पड़ेगा। द्रव्य घर बैठे ही अपने आप एकत्र नहीं हो जायगा। आज का समय यह नहीं है कि चिट्ठी पत्री लिखकर लोगोंसे सहायता पानेकी आशा करें। इसके लिये हमें स्वयं उद्यम करना पड़ेगा। प्रसिद्ध वैद्यों का एक डेप्यूटेशन गांव गांव-नगर नगर-में घुमाके राजा महाराजाओंसे रईस ज़मींदारोंसे, धनी मानी सभी

सज्जनोंसे जैसे हो वैसे द्रव्य संग्रह करना पड़ेगा । तभी हम आवश्यक द्रव्य एकत्र कर सकेंगे। इस प्रकार डेप्यूटेशन द्वारा द्रव्य संग्रह होके पुस्तकोंका काम चल सकेगा तो और भी अच्छा होगा, अन्यथा किसी बैङ्क आदिसे प्रबन्ध कर इसका कार्य आरम्भ हो सकता है। इसमें श्रीसयाजी आयुर्वेद विद्यापीठ और वैद्यक सम्मेलनको सबसे पहले अग्रणी होना चाहिये। क्योंकि वही एक सुव्यवस्थित संस्था है और कोई एकही पुरुष इस कार्यको अच्छे प्रकार सम्पादन भी नहीं कर सकता है । अतः तृतीय वैद्यक सम्मेलनसे प्रार्थना है कि वह वैद्यककी उन्नतिके लिये अवनतिके कारण दूरकर इस निबन्ध पर भले प्रकार विचार करे। इससे सम्मेलनकी उपयोगिता जाहिर होगी, यश मिलेगा और लाभ भी होगा । अन्तमें अब इसे यहीं समाप्त करते हुए भगवानसे मेरी प्रार्थना है कि वे हमें इस कार्यमें सफल करें। इति।"

आपने जैसी लिमिटेड कम्पनीकी आवश्यकता बतलायी है वह बहुत आवश्यक है और यदि कोई कर्म-वीर उत्साही सज्जन इसका भार अपने ऊपर लेनेको तैयार हो तो सम्मेलन उसका समर्थन करेगा। समयके उपयोगी नवीन ग्रन्थों की आवश्यकता सम्मेलन स्वीकार करता है और वह इस कार्यमें सदा सचेष्ट भी रहेगा। किन्तु सम्पूर्ण वैद्योंको भी इस कार्यमें दत्तचित्त होकर

सम्मेलनकी सहायता करनी चाहिये। आपने जैसी पुस्तकों-की आवश्यकता बतलायी है उसके अतिरिक्त एक उत्तम वैद्यक कोषकी भी आवश्यकता है । उसके लिये भी आयुर्वेद प्रेमियोंको प्रयत्न करना चाहिये ।

दूसरा निबन्ध ।

दूसरा निबन्ध श्रीमान परिडत चन्द्रशेखर जी शास्त्री ओझा महोदयका पढ़ा गया। वह नीचे दिया जाता है।

आयुर्वेदका परिशीलन ।

परिवर्तनशील कालके नैसर्गिक तथा प्रबल प्रवाहमें डूबते उतराते हम लोग कहांसे कहां आगये हैं, इस प्रवाहमें पतित होनेके कारण हमारी स्थिति और स्वरूप-में कितना अन्तर आगया है और इस प्रवाहके वेगने हमारी किन प्रिय वस्तुओंसे हमें वियुक्त किया है इत्यादि आवश्यकीय तथा अपनी वर्तमान जाननेवाली बातों पर विचार करनेका सुअवसर हम लोगोंको बड़े सौभाग्यसे प्राप्त हुआ है। इस समय हमको पूर्वोक्त बातों पर विचार करना है तथा देखना है कि इस समयान्तरमें कौन कौनसे रत्नभाण्डार हमसे अलग हो गये हैं; क्योंकि इस कामके लिये अब हम अपेक्षाकृत उपयुक्त हुए हैं। परमेशकी दयासे हमें अन्यान्य विशेष असुविधाकारी बातोंसे सामना करना नहीं पड़ता।

किसी जाति तथा देशकी सभ्यता और उसका अस्तित्व सुरक्षित रखनेके लिये तीन बातोंकी आवश्यकता होती है। वे शक्ति हैं और प्रभुत्व, मन्त्र, उत्साह ये क्रमशः उनके नाम हैं। जिस जातिमें उत्साह नहीं, मन्त्र (विचारनेकी बुद्धि) नहीं और प्रभुत्व (कार्य करनेकी क्षमता) नहीं उसके चिरस्थायी होनेकी कामना असम्भव नहीं तो सुकठिन अवश्य ही है। क्योंकि येही नींव हैं जिन पर जाति और देशकी सभ्यता और अस्तित्व स्थापित किये जाते हैं। जाति या देशकी उन्नति और अवनति इन्हीं शक्तियोंकी समता और विषमता पर निर्भर है। जिस जाति या देशवासियोंमें उचित परिमाणसे ये शक्तियां वर्तमान रहती हैं वह देश तथा जाति स्वर्गीय सौरभसे उद्भासित होती है। अतएव, सर्व प्रथम उन्नतिशील और उत्थानाभिलाषी देश या जातिका लक्ष्य पूर्वोक्त शक्तियोंकी ओर जाता है। उन्नतिशील देश उन्हें विकासित करनेके लिये उद्योगी होते हैं और उत्थानाभिलाषी उन्हें अपनेमें स्थापित करनेके लिये यत्नवान् होते हैं। इसी मूल मन्त्रसे दीक्षित होकर हमारे देशके विद्वान् आज इसके लिये प्रयास कर रहे हैं कि उन शक्तियोंका स्वरूप हम लोग फिर भी एक बार देखलें; क्योंकि उन लोगोंको यह बात विदित हो चुकी है कि कालके प्रवाहसे हम लोग अपने स्थानसे बहुत नीचे आ-

गये हैं। यदि इस समय हम लोग पूर्वोक्त शक्तियोंकी सहायतासे उस वेगका सामना न कर सकें और अपने प्रयत्नसे उसे न रोक सकें तो न मालूम किस भयङ्कर खाड़ीका दर्शन करना पड़े। उन विद्वानोंको यह बात निश्चित रूपसे मालूम हो गयी है कि इस कालके अनिवार्यप्रवाहने हम लोगोंकी कौन कौन सी वस्तुएँ छीन ली हैं, उन लोगोंने अपने पूर्वस्थितस्थानको जान लिया है; अपने गन्तव्यस्थानका मार्ग उन्हें मालूम हो गया है; वे अब जग गये और अपना कर्तव्य भी उन्होंने समझ लिया है।

मानव देह शक्तियोंका भाण्डार है यह कहना मेरी समझसे कुछ अनुचित नहीं होगा। छोटेसे छोटे कार्योंमें भी इसका स्पष्ट प्रमाण हम लोगोंको मिलता है। विचारवानोंको इसका अनुभव होता है कि अनेक शक्तियां हमारे शरीरके द्वारा अप्रत्यक्ष रूपसे कार्य कर रही हैं; परन्तु ऐसा नहीं कहा जा सकता कि बिना शरीरके आश्रय लिये भी वे उसी प्रकार कार्य कर सकती हैं। ऐसा होना असम्भव है, अतएव किसी कार्यकी सिद्धिमें जितनी उपयोगिता उन शक्तियोंकी है उससे किसी प्रकार कम उपयोगिता शरीरकी नहीं है; वे दोनों समान उपयोगी हैं। यही कारण है कि उनका आदर भी विद्वानोंकी दृष्टिमें समान रूपसे होता है, वे दोनों ही बराबर उपादेय समझे जाते हैं। इसी कारणसे शरीर सम्बन्धी बातोंका समावेश धार्मिक

विषयोंमें भी होता है। कालिदास कहते हैं "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" शरीरको हृष्ट पुष्ट बनाये रखना यह पहला धर्मसाधन है; सर्व प्रथम इसका अनुष्ठान करना आवश्यक है; क्योंकि यही सभीका मूल है; इसीके द्वारा और भी धार्मिक क्रियाएं सम्पादित की जाती हैं। इसी कारणसे उन शक्तियोंकी प्राप्तिके लिये-उन्हें विकासित करनेके लिये-शारीरक स्वस्थता पर ध्यान देना विशेष आवश्यक है।

विद्वानोंने शरीरकी उपमा यन्त्रसे दी है, अर्थात अनेक कलपुर्जोंके संयोगसे जिस प्रकार एक यन्त्र प्रस्तुत होता है, उसी प्रकार इस शरीरमें भी अनेक नाड़ी, धमनी, पेशी आदि वर्तमान हैं; जो उचित रूपसे अपने अपने कार्यों में लगी हुई हैं। जिस प्रकार उचित प्रमाणमें काम न करनेके कारण यन्त्रके कलपुर्जोंमें खराबी हो जाती है, उसी प्रकार शरीर सम्बन्धी स्नायु, पेशी, धमनी आदिभी बेकार हो जाती हैं। उचित रूपसे उनका विनियोग न होना ही इसमें कारण है। जब ऐसी शरीरकी अवस्था होजाती है उस समय शरीर अस्वस्थ हो जाता है, शक्तियां किसी काम करनेके उपयुक्त नहीं रह जातीं, यदि आप ऐसे किसी आदमीसे किसी कामको करनेके लिये अनुरोध करेंगे तो यही उत्तर आपको सुनना पड़ेगा कि अजी मुझ दुर्बलसे क्या होगा। इसका अर्थ क्या है? इस उत्तर वाक्य-

का क्या अभिप्राय है ? शरीर और उसमें रहनेवाली शक्तियोंका एक विलक्षण अभेद सम्बन्ध है, शरीर दुर्बल हुआ साथही साथ शक्तियां दुर्बल हुईं; अर्थात् कार्य करनेके लिये अनुपयुक्त हो चुकी अब उसमें वह स्फूर्ति नहीं है जो कार्य सिद्धिका प्रारम्भिक चिन्ह है जिसे उत्साह शक्ति कहते हैं । यही पूर्वोक्त बातका अर्थ है कि मुझमें उत्साह नहीं—मेरी शक्तियोंमें स्फूर्ति नहीं—मैं कैसे किसी कामको कर सकता हूं। इसी दुर्बलताका नाम व्याधि भी है। सततगामी इन्द्रियोंकी गतिमें जब बाधा उपस्थित होती है उसीबाधा-दुःख—के संयोगको व्याधि कहते हैं :-

"तद्दुःखसंयोगो व्याधिरिति तच्च दुःख त्रिविधमाध्यात्मिक माधिभौतिकमाधिदैविकमिति" सुश्रुत।

मैं व्याधित हूं, इस वाक्यको यदि हम दूसरे शब्दों- में साफ साफ समझ लेनेके लिये कहें तो यही कह सकते हैं कि हमारे शरीरमें आजकल शरीरयन्त्रोंका ठीक ठीक परिचालन नहीं हो रहा है; अतएव उनके द्वारा जो जो लाभ प्राप्त होता था वह भी नहीं होता । ऐसी ही अवस्थाका नाम है रोग व्याधि ।

प्राणिमात्रमें मनुष्य विशिष्टचेतन समझा जाता है। अचेतन और चेतनमें भेद है। ये दोनों एक पदार्थ नहीं हैं। चेतन वही है, जिसमें सङ्कल्प शक्ति वर्तमान हो, जो किसी कार्यको प्रारम्भ करे और उसे सिद्ध करनेकी

योग्यता रखता हो। अचेतनोंमें यह बात नहीं; वे चेतनके प्रयत्नसे प्रेरित होकर किसी कामको करने लग जाते हैं परन्तु उन्हें कार्यकी सिद्धि या असिद्धिसे कुछ मतलब नहीं। जितने बलवान् प्रयत्नसे प्रेरित होंगे उतने समय तक वे बराबर काम करते जायंगे; उसमें चाहे कार्य नष्ट हो या दैवयोगसे बन जाय। भात बनानेके लिये आग जलायी जाती है, अग्नि ऐसा ध्यान कभी नहीं रखता कि मैं उतनाही तक जलूं जिससे भात तैयार हो जाय, यदि उसमें लकड़ी अधिक परिमाणमें विद्यमान है तो वह जलता हो जायगा, चाहे आपका भात जल जाय तो जले उसे इससे कुछ मतलब नहीं। यदि लकड़ीकी कमी है या और कोई कारण आजाय तो वह समाधि लगा मुनिवृत्तिधारण कर लेगा, आपका भात भलेही कच्चा रहजाय; परन्तु वह तो हिमालयकी यात्रा ले होगा। क्योंकि वह अचेतन है। कहनेका तात्पर्य यह है कि चेतनका यही स्वभाव है कि कार्योंमें किसी प्रकारके विघ्न आजाने पर उसे हटानेका यत्न करे, रोगोंका प्रतीकार करना ही चेतनता है।

रोगोंका प्रतीकार करनाही चिकित्सा कही जाती है-चिकित्सारुक्प्रतिक्रिया--रोगोंकी प्रतिक्रिया-निरसन करनेका नाम चिकित्सा है। रोग-आरोग्य रोगनिदान और भैषज्य आदि ये ही चिकित्साशास्त्रके प्रतिपादनीय विषय हैं। इसीका दूसरा नाम आयुर्वेद है।

आयुर्वेदकी प्राचीनता।

आयुर्वेदकी उत्पत्ति तथा क्रमविकास अथर्ववेद और कौशिकसूत्रके आधार पर बहुत शताब्दी पहले क्रमसे यहां हुआ है। कुछ लोगोंकी धारणा है कि हिन्दुओं-को आयुर्वेदकी प्राप्ति ग्रीकवासियोंकी कृपाका फल है। ऐसी धारणामें हेतु यही है कि शार्ङ्गधर आदि ग्रन्थोंमें नवग्रहोंसे जो धातुओंकी उत्पत्ति बतलायी गयी है वह ग्रीकवासियोंकी कल्पनाके समान है। इस मतका खण्डन भारतके विद्वान सन्तान श्रीयुक्त राय महाशयने अपने हिन्दू रसायनशास्त्रका इतिहास नामक ग्रन्थमें किया है। यदि इसी एक कारणसे यह कल्पनाकी जाय कि आयुर्वेद हिन्दुओंकी निजकी सम्पत्ति नहीं है तो इस बात पर विश्वास करनेका कोई प्रबल कारण नहीं है क्योंकि धातुओंका उत्पत्तिवाद यदि ग्रीकवासियोंके प्रसादसे हिन्दुओंको मिला होता तो अवश्य ही आयुर्वेदके सभी ग्रन्थोंमें एकही प्रकारका धातुओंके उत्पत्तिवादका पता लगता; परन्तु ऐसा है नहीं; किन्तु इससे विपरीत अवश्य है। शार्ङ्गधरसे पहलेके बने हुए भावप्रकाश आदि ग्रन्थों-में धातुओंकी उत्पत्तिका ऐसा संवाद पाया जाता है कि सप्तर्षियोंके शुक्रसे सोना शिवके वामनेत्रसे निर्गत अश्रुसे रूपा, स्वामिकार्तिकके शुक्रसे तांबा, वासुकीके शुक्रसे सीसा और लोमल दैत्यके शरीरसे लोहा उत्पन्न हुआ

है। मेरी समझमें ग्रीकवासियोंकी कल्पनाको जो हमारे यहां स्थान मिला है, उसमें कारण यही है कि उनसे सम्पर्क होनेके कारण उनकी अच्छी बातोंको हिन्दुओंने ले लिया होगा. यह एक स्वाभाविक बात है, इसे गुण ग्राहकता कहते हैं। जिस प्रकार कटी हुई नाक जोड़नेकी विद्या डाक्टरोंने हमसे ली है। अभ्युदयशील शास्त्रोंके येही लक्षण हैं। यह कारण किसीकी प्राचीनता नष्ट करनेके लिये पर्याप्त नहीं है।

आयुर्वेदकी उत्पत्तिके विषयमें चरकका मत है कि अन्यान्य वेदोंकी अपेक्षा अथर्ववेदसे आयुर्वेदका घनिष्ट सम्बन्ध है। महर्षि सुश्रुतने आयुर्वेदको अथर्ववेदका अङ्ग बतलाया है। पण्डित भावमिश्रने जो आयुर्वेदके क्रमविकासका हवाला दिया है वह इस प्रकार है :-

सर्व प्रथम अथर्ववेदके प्राणभूत आयुर्वेदके प्रचारके लिये ब्रह्मानेलक्षश्लोकात्मक ब्रह्मसंहिता नामक संहिता रची थी। तदनन्तर अश्विनी कुमारोंने अश्विनी कुमार संहिता बनायी; और इन्द्रको आयुर्वेदकी शिक्षा दी। इन्द्रसे आयुर्वेदका अध्ययन कर आत्रेयने आत्रेय संहिता नामक ग्रन्थ प्रणयन किया, इसके अनन्तर अग्निवेश, भेल, जातुकर्ण, पराशर, क्षारपाणि और हारीतने आत्रेय मुनिसे आयुर्वेदका अध्ययन किया और अपने अपने नामसे पृथक् पृथक् संहिता बनायी थी, तदनन्तर इन्द्रसे भार-

द्वाजने त्रिस्कन्ध आयुर्वेद (रोगका निदान, लक्षण और औषध) को पढ़ा, इसके अनन्तर अनन्तदेवके अंशसे उत्पन्न चरकमुनिने अग्निवेश आदि ऋषियोंके निर्मित ग्रन्थोंका संस्कार करके और उन्हींके सार भाग लेकर चरकसंहिता बनायी। धनन्तरीने इन्द्रके आदेशानुसार इस भूमिको अपने जन्मसे कृतार्थ किया और दिवोदास नामक काशी-के राजा हुए; उन्होंने धन्वन्तरि संहिता नामक एक ग्रन्थ बनाया था। महर्षिसुश्रुत अपने पिता महर्षि विश्वामित्र-से प्रेरित होकर वाराणसी गये और वहां उन्होंने आयु-र्वेदका अध्ययन किया। उन्हींका बनाया हुआ सुश्रुतग्रन्थ है। इसके बादसे वाग्भट, चक्रपाणि, इस शास्त्रके पोषक समय समय उत्पन्न होते गये और उन्होंने इसे उचित रीतिसे परिवर्द्धित किया। इसी प्रकार पौराणिक और ऐतिहासिक समयमें इस शास्त्रका विकास हुआ है, जिसका संक्षिप्त संवाद ऊपर दिया गया है।

इसके पूर्वका समय वैदिक समय है। जो बहुत ही पुरातन है। उस समय भी यहां आयुर्वेदका प्रचार था, हाँ यह कह सकते हैं कि उसका रूप दूसरा था; परन्तु था अवश्य ही। इस विषय पर मैं कुछ अधिक न लिख कर केवल यही कहना चाहता हूं कि इस विषयकी सत्यता तथा यथार्थ स्वरूप जिन्हें देखना हो वे कृपया आयुर्वेदका "भैषज्यानि" और "आयुष्याणि" इन प्रकरणोंको देखें।

साम्प्रत्तिक अवस्था।

आयुर्वेदकी साम्प्रतिक अवस्था शोचनीय है यह किसी प्रकार हम नहीं कह सकते; क्योंकि आज भी इस विद्याके पारङ्गत क्रियादक्ष अनुभवशील सद्वैद्योंकी यहां कमी नहीं है। वे प्रचुर परिमाणमें पाये जाते हैं; परन्तु मुझे आन्तरिक वेदनाके साथ कहना पड़ता है कि आज बहुतसे ऐसे भी आदमी आपके समाजमें आजुटे हैं; जो आपके नामको साथही साथ इस परम माननीय और उपयोगी शास्त्रको भी कलङ्कित करनेका दुःसाहस करते हैं। यह उनका दुःसाहस न केवल वैद्योंको ही बदनाम करता है; किन्तु उनके प्रचण्ड पाण्डित्यसे कितनोंको प्राण गँवाने पड़ते हैं, कितने अपने स्वजनोंसे वियुक्त हो जाते हैं। इस समय आप लोग इसको रोकनेका प्रयत्न करें। सद्वैद्य बिचारे बैठे ताकते रहजाते हैं; परन्तु नोटिसबाज हिमालयकी बूटीको बदनाम कर एक ही औषधिसे कल्प-वृक्षके कामोंका ठेका लेकर वैद्यक बाजार अपने हाथ कर रहे हैं; यह क्या किसीके उपकारकी बात है? मेरी समझसे इसके प्रतिकारका सत्वर उपाय होना चाहिये।

कर्तव्य।

मेरी समझसे सर्व प्रथम औषध बनानेकी सुव्यवस्था होनी चाहिये, उन उत्तम उत्तम औषधियोंका प्रचार पुनः

करना चाहिये जिनके बलसे पहले आयुर्वेद सर्वोत्तम समझा जाता था। उत्तम विद्याएं प्रकाशित हों। इनके अतिरिक्त औषधियोंके गुण यदि इस समय न्यूनाधिक अधिक समय होनेके कारण होगया हो तो उसका प्रतिविधान कर्तव्य है. इसकी आप लोग परीक्षा करें। और बहुतसी औषधियां सम्प्रति दुष्प्राप्य हैं, भरसक उन्हें प्राप्त करनेकी चेष्टा होनी चाहिये। नहीं तो स्वयं आप उन औषधियोंकी प्रतिनिधि औषधिका निरूपण करदें। ये काम सर्वसम्मतिसे विद्वान् और पक्व अनुभवी वैद्योंको करने होंगें। और रोगियोंके विषयमें जो आप लोगोंका अनुभव होता जाय उसे भी आप लोग लिपिबद्ध करें तो मेरी समझसे बड़ा उपकार हो। और कमसे कम साल भरमें एक बार किसी स्थानमें बैठकर अपने कामोंकी पर्यालोचना कर लिया करें।

जगत् की उत्साह शक्तिका बढ़ाना वैद्योंका काम है अतः आप लोगोंको यह कहना कि आप लोग "सर्वसन्तु निरामयाः" इस अपने सिद्धान्तको सफल करनेके लिये उत्साहवान् हों, मेरे लिये सर्वथा अनधिकार चर्चा है। अतः मैं स्वयं उत्साहवान् होकर कहता हूं "सर्वसन्तु निरामयाः, निरामयाः"।

चन्द्रशेखर शास्त्री ओझा।

तीसरा कुष्ट विषय पर निबन्ध सुप्रसिद्ध कुष्ट चिकित्सक पण्डित कृपारामजी शर्मा महोदयने पढ़ा। सलकिया हावड़ामें आपका कुष्टाश्रम है। वहाँ कुष्टरोगी रखकर औषधोपचारसे आराम किये जाते हैं। कुष्ट विषय पर आपने अङ्गरेज़ीमें एक पुस्तक लिखी है। उसे जो चाहें आपसे १) कीमत पर मँगा सकते हैं।

तीसरा निबन्ध।

कुष्ट चिकित्सामें सफलता।

सर्व शक्तिमान् परमात्माकी कृपासे आज ऐसा अवसर प्राप्त हुआ है कि जिसके द्वारा असीम आनन्दका सौभाग्य हम लोगोंके हस्तगत हुआ। ऐसा शुभ समय और शुभ स्थान मिलना सौभाग्यका ही कारण समझना चाहिये। श्रेष्ठ पुरुष शुभ अवसरकी ही प्रत्याशा करते और सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध होनेका काल यही शुभ अवसर ही विद्वान लोग मानते हैं। आशा है कि सर्वसज्जन महाशय एक मत होकर अत्यावश्यकीय इस आयुर्वेदका जीर्णोद्धारकर ऐसे अलभ्य शुभ अवसरमें धन्यवादके भागी होंगे। प्यारे बन्धुवर्गो! अल्पायु और अल्पज्ञताके कारण अत्यन्त सूक्ष्मरूप आयुर्वेदकी क्रियाओंके न करनेसे हम लोगोंको सम्पूर्ण शास्त्रोंकी क्रिया अत्यन्त क्लिष्ट ज्ञात होती हैं। ऐसा समझ और सोचकर मैं इस महद्विषय आयुर्वेदमेंसे एक किञ्चित् भाग कुष्टरोग विषय मात्र ही की चि-

कित्सामें आरूढ़ हूं । क्योंकि इस समयके क्रिया कुशल महाशयोंने इस रोगको अत्यन्त घृणित समझ एक स्वरसे असाध्य कहकर इसकी चिकित्साको एक बार ही परित्याग कर दिया है । बहुतोंके मुखारविन्दसे यहां तक सुना कि इस रोगकी चिकित्सा ही शास्त्रकारोंने नहीं कही और कही हुई भी निष्फल दीखती है । इसलिये देखा कि क्रमशः इस भयङ्कर रूप धारण करते हुए रोगसे मैं भी मुख मोड़ूं तो इस रोगकी चिकित्सा भारतवर्षसे एक दम प्रस्थान कर जावेगी । सर्वस्व जाते हुए को देख किञ्चित् भी बचा लेना अच्छा समझकर केवल इसी एकमात्र रोग-की चिकित्साको अत्यावश्यक समझ अल्पबुद्धिके अनुसार जहां तक हो सकता है मैं कर रहा हूं । परमात्माकी कृपासे अनेक बीमारोंको आरोग्यता भी प्राप्त हो चुकी है । जिन मेंसे थोड़े बीमारोंके चित्र और चरित्रका विवरण मेरे संग्रह किये हुए इङ्गलिश भाषाके "कुष्ट और उसकी चि-कित्सा" नामक पुस्तकमें प्राज्ञ लोग स्वतः देख सकते हैं । इतना ही नहीं किन्तु इस विषयमें अनेक वादविवाद भी हो चुके और आज तक उन्हीं तरङ्गोंका मुकाबिला करना पड़ता है । परन्तु शोक है कि मुझे कोई सच्चा सहायक न मिला । यदि सच्चा सहायक एक भी कर पाते तो आजकल बहुत कुछ कार्य्य और भी हो जाना सम्भव था; और प्रत्येक समय आप विद्वज्जनोंके दर्शनोंसे अपनी अभि-

लाषा को पूर्णकर सुखी होते। महाशयो! मैं उस कुष्टरोग-की चिकित्सा प्राचीन शास्त्रोंके अनुसार ही करता हूं। वातरक्त दो प्रकारका तथा कुष्टरोग १८ प्रकारका है। वात-रक्त साध्य, याप्य और तत्काल चिकित्सा न होने या विरुद्ध चिकित्सादि अनेक कारणोंसे वही असाध्य हो जाता है। कुष्टोंमें एक काकणको छोड़कर शेष सब साध्य हैं। कुष्टरोगका निदान चरक संहिताके निदान स्थान अध्याय ५ में विस्तारपूर्वक वर्णित है; इसलिये यहां नहीं लिखा; विद्वज्जन क्षमा करेंगे। कुष्टरोगमें क्रिमि होते हैं इसमें प्रमाण त्वचा आदि चारों अर्थात् त्वचा शिरा, स्नायु और कोमल हड्डियोंको क्रिमि भक्षण करते हैं। ये क्रिमि अत्यन्त सूक्ष्म होनेसे दृष्टिगोचर नहीं होते। चरकसंहिता निदानस्थान अध्याय ५ सूत्र २०। जातिभेदसे वातरक्त दो प्रकारका और कुष्ट १८ प्रकारका कहा गया है। इन दोनोंके विस्तार एकसे मिलते हैं; किन्तु थोड़ा थोड़ा अन्तर शास्त्र-कारोंने ज़रूर माना है। शास्त्रोक्त मतभेदसे कुष्ट सात प्र-कार, अठारह प्रकार तथा असंख्य प्रकारके हैं। मैं औषधि वही सुश्रुत और चरकमेंसे कही हुई काममें लाता हूं; किन्तु पर्य्यटनमें जो योग्य महात्मासे प्राप्त हुई औषधि हैं उनका नाम रुद्रवन्ती और माठी सोमराज इत्यादि हैं। इन औषधिका प्रयोग उन औषधियोंके साथ करनेसे अत्यन्त गुणदायक होता है। जहां तक देखा यही निश्चय हुआ

कि वातादि तीनों दोष कुपित होकर सप्त धातुओंमें प्रवेश करते और अनेक कारणोंसे तप्त रुधिर दोषोंसे बाध्य होकर चार धातुओंमें प्राप्त होकर साध्य रूप चकत्ते या दाने और फोड़ोंके आकार त्वचामें निकल देखनेमें आते हैं। फिर शून्यता प्राप्त होती, चर्म्म याली अत्यन्त कड़ा और मोटा हो जाता या पतला और नाजुक पड़कर किंचित् ठोकर लगने, अग्निमें जलने तथा खुजला देनेसे विखड़कर चर्म्म धीरे धीरे गलने लगता है। यहां तक कि हाथ पैरोंको एक दम गलाकर बेकाम कर देता है। लेख बहुत बढ़ जानेके कारण अति सूक्ष्म इस विषयको कहकर समाप्त करता हूं। शास्त्रज्ञ इतने लेखसे बहुत समझ सकते हैं। डाक्टर हैचन्सन् साहब कोढ़के होनेका कारण और कोढ़का अच्छा होना इस विषयके कथन करनेके लिये विलायतसे हिन्दुस्तानमें आये थे। सन् १९०३ ईस्वीमें कलकत्ता मेडिकल कालेजमें व्याख्यान देते हुए आपने कहा था कि मछलियोंके सेवनसे इस रोगकी उत्पत्ति होती है। व्याख्यान श्रवण करनेके लिये मेडिकल कालेज सभामें मैं भी गया था। साहबका व्याख्यान समाप्त होने पर मैं भी खड़ा होकर इस विषयमें कुछ कहना चाहता था; परन्तु वेम्फोट साहबसे हैचन्सन् साहबने कहा कि यह समय सिर्फ मेरे ही व्याख्यान देनेका है, अन्यका नहीं। इससे मैं न बोल सका। प्यारे मित्रो, साहबके बतलाये

हुए इसी एक कारणसे इस कुष्ट रोगकी उत्पत्ति नहीं; किन्तु इस रोगके उत्पत्ति विषयक और भी बहुत कारण हैं जोकि हमारे सुश्रुत और चरक आदि ग्रन्थोंमें ऋषियोंने बतलाये हैं। वे सब कारण आयुर्वेदज्ञ जानते ही हैं। जिस देशमें मछलियां खानेका प्रचार बहुत है, वहां यह रोग कम और जहां पर मछलियोंके खानेका बिलकुल भी रिवाज या चलन नहीं वहां अधिकतर इस रोगका विस्तार पत्रों और चिट्ठियों द्वारा देखने और सुननेमें आता है; तब साहबके बतलाये हुए इस एक मात्र ही कारणको किस प्रकार मान लिया जावे।

मैं सन् १९०२ ईस्वीमें कलकत्तेमें उपस्थित हुआ। भाग्यवश मुझे उचितवक्ताके सम्पादक स्वर्गवासी पं० दुर्गाप्रसादजी मिश्र भारतवर्षके प्रसिद्ध और योग्य अमृतबाजार पत्रिकाके सम्पादक स्वर्गवासी श्रीमान् बाबू शिशिर कुमार घोष जीके यहां ले गये, और उन्होंने उनसे कुष्ट रोग विषयक चिकित्सा करनेके विषयमें मेरी प्रशंसा की। स्वर्गवासी उक्त शिशिर कुमारजी घोष महोदयने मेरी कुष्ट चिकित्साकी प्रशंसा सुन मुझे अत्यन्त प्रेरणाके साथ कुष्ट रोग विषयक चिकित्सा कर संसारके कल्याणके निमित्त आज्ञा दे बहुत ही उत्साहित किया। उनसे मैंने कहा कि इस समयके चिकित्सकोंकी रायमें यह रोग असाध्य है; इसलिये एक मेरे ही कथनमात्रसे इसका विश्वास प्रत्येक मनुष्यमें होना अस-

स्थव है और मैं ठहरा विदेशी; अतः चिकित्सा करनेके लिये रोगी रखनेको जगह कहां पा सकूंगा। यदि रोगी रखनेका प्रबन्ध आप कर दें तो अन्य सब कार्योंका सम्भाल मैं अपने आप कर लूंगा। यह सुन उक्त महोदयने डाकृर आर. जी. कार प्रधान अलबर्ट अस्पतालसे मुलाकात करा कलकत्ता वेलगछियाके अलबर्ट विक्टर अस्पतालमें रोगी रखनेका प्रबन्ध कर दिया। इतना हो जाने पर मैंने एक बहुत ही सड़े पचे और कीड़ोंसे युक्त ऐसे एक गलित कुष्ट रोगीका हेरखोज कर अस्पतालमें रख उसकी औषधि करना प्रारम्भ किया। ५ महीनेके अन्दर उसको नीरोग्यता प्राप्त हुई; परन्तु इसकी चिकित्सा विषयमें उत्साहित होकर उन्नति करनेका कुछ कार्य्य न हुआ। डाकृरोंको विश्वास नहीं था कि यह रोगी आराम हो गया। वे समझते थे कि यह फिर बीमार पड़ जायगा; परन्तु वह बीमार नहीं पड़ा। फिर भी डाकृरोंने सर्टिफिकेट देनेमें टालटूल की। इसके बाद मैंने इस विषयमें लाट साहबको लिखा। उन्होंने लिखा कि हम डाकृर हार्लली-को लिखते हैं वे प्रबन्ध करेंगे। किन्तु उन्होंने कहा कि आप दवाका नुसखा दे दें तो हम कुछ विचार सकते हैं। मैंने देखा कि ये भेद तो ले लेना चाहते हैं परन्तु उदारता प्रकट करना नहीं चाहते। इसलिये मैंने भी नुसखा बतानेमें टालटूल की। ऊपर जिन हैमल्टन् साहबका

जिकर आया है मैंने उनसे मिलना चाहा परन्तु उन्होंने कहा कि हमें फुर्सत नहीं है। सन् १९०९ ईस्वीमें बम्बईमें मेडिकल कांग्रेस थी। मैंने कांग्रेसके सेक्रेटरीको पत्र लिखकर इच्छा प्रकाशित की कि मैं भी कुष्ट विषयमें बोलना चाहता हूं; परन्तु वहांसे कोरा उत्तर मिला कि आपकी दरखास्त पर कुछ भी विचार नहीं हो सकता; क्योंकि दरखास्त देनेका समय व्यतीत हो चुका! मैं खुद बम्बई गया कि वसीला लगाकर बोलनेका प्रयत्न करूँगा। वहां जाकर मैंने डाक्टर सर भालचन्द्र महोदयसे मुलाकात की और उन्हें अपनी सब बातें कह सुनायीं। उन्होंने मुझे ले जाकर हेल्थ आफिसरसे मिलाया उन्होंने दिलासा दिया कि आपके लिये कुछ प्रयत्न करेंगे परन्तु १२ दिनों तक कुछ भी उत्तर न मिला। अन्तमें उत्तर मिला कि कुष्टाश्रमसे चार रोगी आपको दिये जावेंगे आप उनकी औषधि कर उन्हें आरोग्य कीजिये। मैंने देखा कि वे रोगी बहुत मामूली थे इसलिये मैंने उन्हें अपने हाथमें नहीं लिया। अन्तमें डाक्टरोंने सभाकर चुने हुए चार असाध्य रोगी मेरे लिये छांटकर दिये। मैंने कहा अच्छी बात है मैं दवा तैयारकर एक महीनेमें इन्हें अपने हाथमें लेऊंगा। किन्तु बीचमें ही मुझे उत्तर मिला कि वे रोगी आपको नहीं दिये जावेंगे क्योंकि उनकी चिकित्सा नये ढङ्गसे होगी। इस तरह कहींसे मुझे उत्साह न मिला। मेरा

अनुरोध है कि जो आयुर्वैदिक अस्पताल खुलें उनमें कुष्ट रोगी भी रखे जावें और आयुर्वैदिक पद्धतिसे उनकी चिकित्सा की जावे। मैं भी यथा साध्य सहायताके लिये प्रस्तुत रहूंगा। श्वेत कुष्ट पर खदिरका प्रयोग लाभदायक है श्वेतदाग साफ होने पर कजलीका सेवन कराना उत्तम लाभदायक होता है।

कृपाराम शर्मा,
सलकिया हावड़ा।

इसके पश्चात् आयुर्वेद प्रचारिणी सभाके सहकारी मन्त्री श्रीयुत् बाबू जयकुमारजी जैनी वैद्यने अपना निबन्ध पढ़ा। वह नीचे दिया जाता है:—

पांचवां निबन्ध।

आयुर्वेदकी महिमा।

धन्वन्तरिं धृतकरामृत पूर्णकुम्भम्-
पीताम्बरं सकल सिद्ध सुरेन्द्र वन्द्यम्।
वन्देरविन्द नयनं मणिमाल्य मायु-
र्वेदः प्रवर्तक मनुस्मृति रोगनाशम्॥

प्रथम श्रीधन्वन्तरि भगवानको नमस्कार करके मैं अपनी तुच्छ बुद्धिके अनुसार आयुर्वेदकी महिमाका वर्णन करूँगा, आशा है विद्वन्मण्डली मेरी अशुद्धियोंको क्षमा करेगी।

आजकल भारतवर्षमें आयुर्वैदिक, यूनानीके अतिरिक्त अनेक प्रकारकी पैथीज चिकित्सा वर्त्तमान हैं। ऐसी अवस्थामें किस वैद्यकका महत्त्व सबसे श्रेष्ठ है तथा किनका सहारा लेना अच्छा होगा उसीकी यहां विवेचना करना है।

अति प्राचीन समयसे ही हमारा आयुर्वेदशास्त्र सम्पूर्ण चिकित्सा शास्त्रोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ और भारत सन्तानकी वरन अन्य विदेशीय पुरुषोंकी भी स्वास्थ्य रक्षाका एकमात्र अवलम्ब समझा जाता था। यही नहीं किन्तु यह आयुर्वेद ही था जिससे विदेशीय वैद्योंने अपने अपने चिकित्सा शास्त्रको परिपूर्ण तथा उन्नतिको पहुँचाया था। आयुर्वेदीय चिकित्सा सम्पूर्ण चिकित्साओंका मूल और भारत तथा विदेशीय सन्तानोंकी माताके समान हित साधक समझी जाती थी। प्राचीनकालमें हमारे पूर्व पुरुष, आयुर्वेदीय चिकित्साके प्रभावसे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभ करके एवम् दीर्घ जीवनको पाकर सुखपूर्वक समय व्यतीत करते थे। आधुनिक समयमें विदेशीय वैद्योंके मुखसे दीर्घ जीवनका उपदेश सुनकर हम आश्चर्य समुद्रमें गोते खाने लगते हैं; और सोचने लगते हैं कि यह आविष्कार विदेशीय वैद्य महोदयोंका किया हुआ है; किन्तु वे यदि आयुर्वेदानुकूल स्वास्थ्य पर समुचित ध्यान देते तो कदाचित् यह उनको कहनेकी आवश्यकता न

पड़ती; और स्वतः समझ जाते कि इसकी युक्ति हमारे यहां महर्षियोंने अबसे लखों वर्ष पूर्व ही बतलादी थी। उपवास-के बारेमें बड़े बड़े यूरोपियन तथा अमेरिकन डाक्टरगण अब जो जो सिद्धान्त निश्चित करते जाते हैं, वे सिद्धान्त किन्तु उससे भी बढ़कर आयुर्वेदज्ञ पुरुषोंने अति प्राचीन समयसे बतलाये हैं। यहाँ तक कि उसको पालन करनेके निमित्त धर्मके एक अङ्गमें सम्मिलितकर दिया है। जिससे मनुष्य अवश्य कुछ समयके उपरान्त उपवास करे। इसी तरह दही और दूधके बारेमें जो जो नये नये आविष्कार हुए हैं वे सब उन महर्षियोंने लोगोंके उपकारके लिये सदा गृहस्थीमें किसी न किसी अंशमें वर्तनेकी शिक्षा दे रखी है। श्रिखरन, चरणामृतके भोग क्यों सदा सेवन करने-को धर्ममें शामिल कर दिया है, ईसी तरह तुलसीका वृक्ष घरमें लगाना, जिससे घरका वायु शुद्ध होता है; ताम्रपात्रमें रखा हुआ दूध न पीना जो विष समान हो जाता है इत्यादि अनेक बातें धर्ममें सम्मिलित करके स्वास्थ्यकी रक्षाका उपाय बतलाया है।

आयुर्वेदीय चिकित्साप्रणालीके अनुसार वर्तनेसे प्रथम तो रोग सङ्कट उपस्थितही नहीं होता था; यदि दैवात हो भी तो उसकी सुचिकित्साके प्रभावसे एकबार रोगके निवारण हो जाने पर पुनः उसके प्रकट होनेकी आशङ्का उपस्थित न होती थी और उनको बहुतही कम

रोगकी भयङ्कर मूर्तिके दर्शन करने पड़ते थे आधुनिक समयमें गो कि विदेशीय औषधियोंमें तीव्र प्रभाव होनेके कारण शीघ्रही रोग ऊपरसे तो दब जाता है किन्तु रोगके अवशिष्ट रहनेसे पुनः प्रकट होता है। बहुधा विदेशी औषधियाँ रोगाश्रित अवयव अथवा अन्य अवयवोंको निर्बल-कर देती हैं और अन्य रोगोंको प्रकटकर देती हैं। किन्तु हमारे आयुर्वेदमें यह बात नहीं है। उसकी औषधियोंमें रोगोंको समूल नष्ट करनेकी पूर्ण शक्ति है। वात व्याधि, यक्ष्मा, सन्निपात, कुष्ठ आदि कठिन रोगोंमें प्रायः आयुर्वेदीय ही औषधि समुचित लाभ दिखाती है। महर्षि आत्रेयका वचन है कि औषधि उसीका नाम है जो रोगको मिटाकर अन्यको न प्रकट करे यथा "प्रयोगः शमयेत् व्याधिः योऽन्य रून्य मुदीरयेत् । नासौ विशुद्धः शुद्धस्तु शमयेद्यो न कोपयेत्॥" एलोपैथिक औषधि क्वीनैनसे ज्वर छूट तो अवश्य जाता है; किन्तु भ्रम, कर्णनाद, कर्ण वाधिर्य आदि उत्पन्न होते हैं। जिसको कि एलोपैथिक चिकित्सक स्वयं वर्णन करते हैं। डाक्टर ओअर लिखते हैं कि यदि ऐसा ज्ञात हो कि ज्वरकी बढ़ी हुई ऊष्मा शरीरको भारी हानि पहुँचावेगी अथवा रोगीको मार डालेगी तो उसको घटाने का प्रयत्न करना चाहिये, किन्तु जो ऐसा भय न मालूम हो तो उस गरमीको घटानेका यत्न न करना चाहिये। इसका कारण यह है कि ज्वरकी गरमीको एकदम घटाने-

वाले पदार्थ जैसे ऐसीटेनीलिट, ऐरटीपायरिन और डामरसे तैयार किये जानेवाले प्रयोग बहुत ही हानिकारक होते हैं। यदि ये औषधियां अधिक मात्रामें सेवन कर दी गयी हों, अथवा निर्बल रोगीको देदी जायँ तो शरीरकी गरमी एक दम कम होकर शरीर ठण्डा पड़ जाता है और रोगी बेसुध हो जाता है। ऐसे समयमें यद्यपि डीजीटेलिस, या एमोनिया, विस्की आदि दवाइयां उसको सचेत करनेके लिये उपयोगमें लायी जाती हैं और उससे कार्यसिद्धि भी होती है तथापि बहुधा उससे रोगी मर जाता है। इसलिये पूर्ण आवश्यकताके बिना ज्वरकी गरमीको हटानेकी औषधियोंका प्रयोग करना अच्छा नहीं है। आयुर्वेदीय चिकित्सा पूर्ण होनेके कारण भारतवासियोंको विदेशी वैद्योंका आश्रय नहीं लेना पड़ता था। केवल आयुर्वेदीय चिकित्साके क्रमानुसार चलनेसे सब प्रकारकी आधि व्याधि शान्त हो जाती थीं। क्योंकि विधिवत् प्रयोग की हुई आयुर्वेदकी साधारण जड़ी बूटियां भी अनन्त गुणसे संयुक्त होनेके कारण बड़े बड़े जटिल, जीर्ण और दुस्तर रोगोंको अनायास ही दूरकर देती थीं। जैसा कि देहातोंमें अब भी देखा जाता है, जहाँ न तो कोई वैद्य ही होता है और न डाक्टर। देहाती लोग केवल जड़ी बूटियोंके ही सहारे अपने रोगोंको समूल नष्ट कर लेते हैं। यह भारतवर्ष जड़ी बूटियोंका खजाना है। इन

जड़ी बूटियोंमें इतनी शक्ति है कि वे अपना प्रभुत्व मन्त्र-के तुल्य दर्शानेमें समर्थ हैं। इसके अनेक अनुभविक प्रयोग अब तक विद्यमान हैं। जिनमें एक जड़ी हमारे मित्र पण्डित कालीचरणजी शुक्ल और बा० मनहोनलाल जी वैद्यके पास है; जिसके अवलोकन मात्रसे शीतपूर्वक विषमज्वर तथा बिच्छूका विष शीघ्रही उतर जाता है। सर्पदंश इत्यादिके लिये भी अनेक बूटियां मौजूद हैं। जलोदर, मृगी, सन्निपात, प्लीहोदर, ब्रध्न, विशूचिका, अति-सार ज्वर, अकाल गर्भपात निवारण, आदि अनेकानेक रोगों पर विद्युत समान प्रभाव दर्शानेमें जड़ीबूटी सम्पन्न हैं। यहां तक कि इसीसे लोग सुवर्ण इत्यादि भी बनाते सुने जाते हैं। यदि परिशोध किया जाय तो अब भी हमारे आयुर्वेदीय वैद्य महानुभावोंके पास ऐसी अपूर्व चमत्कृत औषधियां और बूटियां मिल सकेंगी, आजकल इनकी अति आवश्यकता है कि वे सब पर, विदेशीय वैद्योंकी प्रणालीके अनुसार पत्रोंमें प्रकाशित की जाया करें। हर्षकी बात है कि इसीकी पूर्तिके अर्थ श्रीयुत आयुर्वेद पञ्चानन पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य महोदयने अपने वैद्यकके एक मात्र हिन्दी मासिकपत्र "सुधानिधि" में "अनुभविक प्रयोग" शीर्षक एक कालम खोल रखा है। आशा है कि वैद्यवर इस बात पर ध्यान देंगे और इस पत्रकी उन्नतिमें दत्तचित्त रहेंगे तथा इसे अपना

समझ सबके हितार्थ लोकव्यापी बनावेंगे। चरक संहिता आदि ग्रन्थोंके देखनेसे मालूम हो सकता है कि जो जो रोग महा भयङ्कर गिने जाते हैं और जिनके लिये ऐसा माना जाता है कि वे मिट ही नहीं सकते वैसे रोगोंको भी दूर करनेके लिये बहुत उत्तम उत्तम जड़ी बूटियोंका प्रयोग कहा गया है।

श्रीमान् पं० कृपारामजीकी कुष्ट चिकित्साके विषयमें आप लोगोंसे विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनका निबन्ध आप लोग स्वयं सुन चुके हैं और समझ सकते हैं कि बूटियोंमें कितनी शक्ति है।

आयुर्वेद शास्त्र केवल भारतवर्षमें ही सर्वोत्कृष्ट चिकित्सा शास्त्र है, ऐसा नहीं, किन्तु समस्त पृथ्वी भरके चिकित्सा शास्त्रोंमें इसने अत्युत्कृष्ट आसन ग्रहण किया था। और उसकी औषधियां समस्त भूमण्डलको आरोग्यता प्रदान करती थीं।

✓ जिस समय अरब और मिश्र (इजिप्ट) देश अपनी बाल्यावस्थामें थे। जब कि पुराने रोम और ग्रीसवासी सभ्यताके प्रकाशमें भी नहीं आये थे। जब कि आधुनिक सभ्य शिरोमणि पृथ्वीका भूषण स्वरूप योरप घोर अन्धकारसे आच्छादित था, उस समयसे भी बहुत पहलेसे ही हमारा आयुर्वेद शास्त्र अपनी तेज़ किरणोंसे चमक

रहा था। यह वेदका एक अङ्ग है इससे इसके कालका निरूपण करना महान कठिन कार्य है।

लगभग छठी शताब्दीमें Alexander the Great अपने देशवासियों के असाध्य किंवा जटिल रोगोंके शमनार्थ भारतवर्षीय वैद्योंको बुलाकर सदैव बड़े आदरमानसे अपने राज्यमें रखता था, और भारतवर्षीय प्रवर वैद्यगण भारतवर्षीय औषधियोंके प्रतापसे उन रोगियोंको आरोग्यता प्रदान करते थे जिन्हें वहांके वैद्य आरोग्य करनेमें असमर्थ होते थे।

लगभग सातवीं शताब्दीमें बुगदाद देशका राजा खलीफा हारूंरसीद आयुर्वेदीय चिकित्साको सर्वोत्कृष्ट समझकर अपनी शरीर रक्षाके लिये सदैव भारतवर्षीय वैद्योंको अपने राजमन्दिरमें उपस्थित रखता था।

अरबुलतल नामक प्रसिद्ध अर्बी भाषाके ग्रन्थमें लिखा है कि अष्टम शताब्दीमें भारतवर्षके पण्डित लोग बुगदाद राजसभामें उपस्थित होकर आयुर्वेद और ज्योतिष शास्त्रकी शिक्षा देते थे। और उनके यहांके शरक, शश्रुद और नेदान ग्रन्थोंके नामसे प्रतीत होता है कि ये चरक सुश्रुत और निदान ग्रन्थोंको अरबी भाषामें अनुवाद करके नाम रखे गये हैं।

मिस्टर एच. एम. ईलियट साहब लिखते हैं कि लखनऊके एक राजकीय पुस्तकालयमें पशु चिकित्सा

विषयक एक पुस्तक है जिसका गयासउद्दीन मुहम्मदशाह-के समयमें संस्कृतसे अनुवाद हुआ था। इस पुस्तकका नाम "तुर्रतुल मुल्क" है यह सन् ७८३ हिजरी अर्थात् सन् १३८१ ईस्वीमें सलोतर (शालिहोत्र) नामक ग्रन्थसे अनुवाद की गयी थी। इस पुस्तकके ११ भाग और तीस अध्याय हैं (जिसकी सूची इस प्रकार है।

भाग	विषय	अध्याय
१	घोड़ोंके ख़ास नसल	४
२	प्राणशक्ति, सवारी उत्पत्ति	४
३	अश्वालयका प्रबन्ध	२
४	वर्ण और भेद	२
५	दोष	३
६	अङ्ग	३
७	रोग और चिकित्सा	४
८	फस्द खोलना	४
९	पथ्य और भोजन	२
१०	मोटा करनेको भोजन	२
११	दांत देखकर आयु जानना	१
		३०

एक और पुस्तक उसी नामकी मेवाड़के पुस्तकालय-में मिली यह उपरोक्त पुस्तकसे दूनी है और इसमें १६०००

श्लोक थे इसका अनुवाद शाहजहां बादशाहके समयमें अब्दुल्लाखां बहादुर फीरोजजङ्गने किया था।

हकीम जालीनूस अपने रिसालेमें लिखता है कि आयुर्वेदविद्या प्रथम भारतवर्षसे मिसिरमें लायी गयी। पश्चात मिसिरसे यूनान और अरब देशमें गयी। वह यह भी लिखता है कि मेरे गुरू अफलातूंने भारतवर्षमें जाकर काल ज्ञानके ३६ लक्षण और बहुतसे ग्रन्थ पढ़े और उनमेंसे कुछ सार भाग संग्रह करके एक काठकी तखती पर लिखकर सदैव अपने गलेमें कपड़ोंके नीचे पहिने रहता था; और कभी किसीको प्रकट नहीं होने देता था। वह इस विषयको इतना गुप्त रखना चाहता था कि उसने मृत्युके समीप अपनी स्त्रीसे कहकर उस तख्तीको भी अपने साथ कब्रमें गड़वा दिया।

इस तखतीको इस प्रकार गाड़े जानेसे उसके चेलेको अत्यन्त आश्चर्य हुआ और उसने कब्र खोदकर वह तखती निकाल ली। पश्चात् उसने अच्छी योग्यता प्राप्त की और कुछ कालके उपरान्त उसकी देखादेखी अरस्तू आदि तथा उसके शिष्योंने भी भारतवर्षमें आकर आयुर्वेद का अध्ययन किया।

जो पश्चिमी आंखोंसे देखनेवाले हिन्दुस्तानी बिना कुछ जाने बूझे आयुर्वेदकी निन्दा करने लगते हैं वे एक बार अपनी ओर आंख फैलाकर देखें। यही क्यों आज

संसारमें जो नाना प्रकारके वैद्यक और पैथीज़ देखी जाती हैं उन सबोंकी जड़ हमारा आयुर्वेद ही है। क्या अरब वाले, क्या यूनानवाले, क्या मिसिरवाले, क्या बुगदाद वाले, सभीने आर्योंसे वैद्यक सीखा और अपने अपने देशोंके अनुकूल इधर उधर जाकर उसे फैलाया। अभी पांच ही सात वर्ष हुए समाचारपत्रोंसे मालूम हुआ था कि अमेरिकाके सन्फ्रेन्सिसको नगरमें चरक संहिताके अङ्गरेज़ी अनुवादके अनुसार वैद्यक सिखानेके लिये एक कालेज खुला है। यही नहीं किन्तु यूरोपमें भी इसकी सुगन्धि पहुंची है! यह बात सत्य होने पर भी निर्विवाद है कि आयुर्वेदकी प्रशंसा केवल हम लोगोंके ही मुँह से नहीं निकलरही है किन्तु पश्चिमी शिक्षा दीक्षा और विद्याका ज्ञान प्राप्त किये हुए अनेक गुणग्राही देशी विदेशी विद्वान सज्जनोंने इन लोगोंसे भी बढ़कर हमारे आयुर्वेदका गुण कीर्तन किया है जिसका वर्णन इस प्रकार है:—

(१) सुप्रसिद्ध **डाक्टर ओयाज** आयुर्वेदीय चिकित्साके विषयमें विशेष विवेचनाकर एवं युक्ति दर्शाकर कहते हैं:—यथार्थमें सम्पूर्ण चिकित्साओंका मूल भारतवर्षकी आर्यचिकित्सा है और सम्पूर्णसंसार उसका ऋणी है।

(२) **प्रोफेसर T. F. Royal D. R. L. M. G. C.** जोकि प्रथम बङ्गालकी सेनाके डाक्टर थे और एशियाटिक

व मेडिकल व फिजिकल सोसाइटी Edingburg और मे-
डिकल और सर्जिकल सोसाइटी लण्डनके मेम्बर थे;
अपने व्याख्यानमें कहते हैं:—

"हिन्दुओंका आयुर्वेदशास्त्र बहुत प्राचीन है अरब
और यूनानवालोंसे कहीं पहला है। किसी समय अरब
देशमें आयुर्वेद चिकित्साका विशेष प्रचार था। बल्कि
अरबवालोंने आर्य चिकित्सासे ही चिकित्साकी शिक्षा
प्राप्त की थी। अभी तक उस देशमें श्वास रोग पर धतूरे-
के बीज और कृमि रोगमें कौचके बीज व्यवहार किये
जाते हैं।

(३) सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्याशास्त्रके पूर्ण विद्वान
Prof. होरसेहेमेन विलसन M. A. F. R. S. Presi-
dency Medical society Calcutta और Prof. of Sanskrit Uni-
versity College of Art कहते हैं:—भारतवर्षमें पुराने समय-
से चिकित्सा, ज्योतिष और दर्शन आदिके पारदर्शी
विद्यमान हैं। जिस समय यूरूप देशमें शरीर विद्या (Ana-
tomy) का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था उस समय भारतवा-
सियोंने जैसी औषधि चिकित्सा और शस्त्र चिकित्सामें
पारदर्शिता दिखायी थी उसी प्रकार शरीरविद्याकी
उन्नति की थी।

(४) अमेरिकाके अन्तरगत फिलाडेलफियाके डाक्टर
G. H. Clark M. A. M. D. कहते हैं:—यदि इस जमानेके

वैद्य अपने फरमाकोपियासे अर्वाचीन औषधि और रसायनिक पदार्थ निकाल डालें तथा चरक संहितमें कही हुई रीतिसे चिकित्सा करना आरम्भ करें तो प्रेत संस्कार करने वालोंका काम बहुत कम होगा अर्थात् बहुत कम लोग मरेंगें। यही नहीं बल्कि इस पद्धतिका अवलम्बन करनेसे संसारमें चिरकालिक रोगी बहुत कम होगें। अतः यह सिद्ध है कि आयुर्वेदकी अपेक्षा पश्चिमी वैद्यकसे अधिक पिण्ड रोगी बनते हैं।

(५) अमेरिकाके-मिसौरी-कसंससिटीके डाक्टर **जी. सी. क्यासलमन** साहब कहते हैं :—

"बड़े आश्चर्यकी बात है कि जिन शास्त्रीय बातों, औषधियों और अनुमानोंको गत पचास, चालीस, तीस, तथा दूरकी बात नहीं अभी दश वर्षमें हमने ढूंढ़ निकाला है और जिनके विषयमें हम समझते थे कि एक दम नूतन आविष्कार है, वे सब बातें प्राचीन हिन्दू वैद्य और ग्रन्थकार लोगोंको मालूम थीं।

(६) सेण्टलुई—अमेरिकाके **मेयर ब्राद्र्स**का कथन है कि "जिन बातोंको हम नहीं समझते हैं वे हिन्दुस्तानके प्राचीन निवासियोंकी औषधि करनेवाले वैद्योंको अच्छी तरह मालूम थीं। अवश्य ही इस बातको जानकर हम दङ्ग रह गये हैं। आश्चर्य चकित हो गये हैं।

(७) कलकत्तेके सुप्रसिद्ध डाक्टर और छोटे लाट साहबकी चिकित्सा करनेवाले **डाक्टर महेन्द्र लाल सरकार** लिखते हैं:- चरक संहितामें ऐसी बहुतसी बाते हैं जिन्हें इस समयके विद्वान डाक्टरोंको भी सीखना चाहिये।

(८)बर्लिन–जर्मनीके **डाक्टर हर्सवर्ग** लिखते हैं:-- ग्रीक लोगोंको जैसी शस्त्रक्रिया कभी भी नहीं मालूम थी, वैसी शस्त्रक्रिया हिन्दुओंको मालूम थी और वे चीड़फाड़का काम किया भी करते थे। हम यूरोपियनोंको भी वह शस्त्र क्रिया अभी गत शताब्दीमें ही मालूम हुई है और तभीसे यूरोपकी शस्त्र क्रिया एक नये मार्गकी ओर झुकी है। सजीव चमड़ेका जोड़ लगानेकी विद्या (skin grifting) हिन्दू लोगोंकी ही है।

(९) पांडेचरीके **डाक्टर हुइले साहब** कहते हैं:- धन्वन्तरी हिपोक्रेटिसके पहले हुए। उन्हें शीतलाकी टीकाका हाल मालूम था।

(१०) **डाक्टर वाइज़** कहते हैं वैद्यशास्त्रकी सार-भूत और महत्व पूर्ण सभी शाखाओंका हिन्दू तत्व वेत्ता-ओंने बीजारोपण किया और वे इसमें सफल भी हुए।

(११) कलकत्ता मेडिकल कालेजके प्रिन्सपल **डाक्टर ल्युकिस, एम०, डी०, एफ०, आर०, सी०**

साहब कहते हैं:-हिन्दुस्तानी लोगोंसे हमें वैद्यशास्त्र और औषधिके विषयमें बहुतसी बातें सीखने लायक़ हैं।

(१२) जर्मनीके सुप्रसिद्ध रसायनवेत्ता **ई मर्क** साहब अपनी सन् १९०८-०९ सालकी रिपोर्टमें लिखते हैं:—पिछले दश वर्षोंसे औषधिके काममें प्राणिज इन्द्रियोंका उपयोग होने लगा है; परन्तु औषधोपचारकी रीति बहुत पुरानी है। वह इतनी पुरानी है कि इतिहासके एकदम आरम्भ काल अर्थात् पांच हज़ारवर्ष पहिले उसकी उत्पत्ति मालूम पड़ती है। बहुत पुराने जमानेके सभ्य लोग, जैसे हिन्दू, चोनी, मिसरानी और ईरानी लोगोंने अनेक रोगों पर प्राणिज पदार्थोंका उपयोग किया है। सुश्रुतके आयुर्वेदमें (जिसका समय सन् ईसवीसे १४०० वर्ष पहलेका मालूम होता है) नपुंसकता पर नक्र वृषणका उपयोग लिखा हुआ है। तथा पित्तका प्राचीन उपयोग अब तक जारी है।

(१३) कलकत्ता हाईकोर्टके चीफ जस्टिस **सरलारेंस जेनकिंस** साहबने Calcutta National Medical College के विद्यार्थियोंको उपहार बांटते समय कहा था कि "यूरोपियन डाक्टर आयुर्वेदकी ओर प्रकाश्यरूपसे घृणाके साथ देखा करते हैं। साधारण अङ्गरेज़ोंकी समझ भी डाक्टरोंके समान हैं। फरक केवल यह है कि वे जानते हैं कि ज्वर आदि बीमारियोंमें जहां फर्माकोपियाकी सब

औषधि निष्फल हो गयी हैं; वहां आयुर्वैदिक औषधि और उसके पथ्यसे आरोग्य लाभ हो सकता है। यूरोपके विज्ञानवेत्तागण भी अब कहने लगे हैं कि आयुर्वैदिक-शास्त्रमें कुछ सार हो सकता है। वैद्यकशास्त्र चाहे यूरोपियन हो और चाहे भारतीय; वह विशेषतः अनुभव सिद्ध होता है। इसमें सन्देह नहीं कि आयुर्वेदमें अनुभवका जो अनन्त भण्डार भरा हुआ है उससे काम लेना उत्तमनीतिका द्योतक है। इस पर एम्पायर अखबार कहता है:-कि प्रधान विचारपति महोदयका मत सभी विचारशील पुरुषोंको मान्य होगा।

(१४) प्रोफेसर विलसन साहेबकी राय है कि-प्राचीन हिन्दुओंने वैद्यक और अस्त्रचिकित्सामें वैसी ही योग्यता प्राप्त की थी जैसी उन जातियोंने की थी जिनके पाण्डित्यका इतिहास हमको मिलता है। इन लोगोंसे आशा भी ऐसी ही हो सकती है; क्योंकि ये लोग स्वाभाविक धैर्य और ज्ञानके कारण अच्छे निरीक्षक हो गये हैं। इनकी जन्म भूमि इतनी विशाल और उपजाऊ है कि बहुतसी बूटियां और औषधिद्रव्य इनको सहज हीमें प्राप्त हो सकते हैं। कहा जाता है कि ये लोग इसी कारण रोगकी पहिचान और भिन्न भिन्न रोगोंके लक्षणोंके बड़े ज्ञाता हैं और इनका वैद्यकशास्त्र बहुत ही बड़ा है।

(१५) **वीवर साहेब** कहते हैं:—कि ऐसा प्रतीत होता है कि वैद्यक शास्त्रका बड़ी बुद्धिमानीसे प्रयोग किया गया है। वैद्यककी पुस्तकों और उनके बनाने वालों-की संख्या बहुत बड़ी है। आयुर्वेद चिकित्सा सबसे प्राचीन सिस्टम है। इसकी शिक्षा बड़े विद्वान हिन्दू प्रसिद्ध वैद्य धन्वन्तरिने अपने शिष्य सुश्रुतको दी थी। अस्त्र चिकित्सामें भी भारतवासी बहुत निपुण होगये थे। सम्भव है कि इस शाखामें यूरोपियन चिकित्सक आज कल भी कुछ न कुछ उनसे सीख सकते हों, क्योंकि उन्होंने नाक बनानेकी विद्या हिन्दुओं हीसे सीखी है।

(१६) **सर विलियम हण्टर** साहेबका मत है कि भारतवर्षीय वैद्यकमें वैद्यक विद्याके सब अङ्ग सम्मिलित थे। इसमें शरीरकी रचना, इसके गोलक, अस्थि, बंधन, जोड़, कोष्ठ, और नाड़ियोंका वर्णन था। हिन्दुओंके वैद्यक शास्त्रमें बहुतसी औषधियांथीं जो धातुओं, वनस्पतियों और प्राणधारी शरीरोंसे ली गयी थीं। इनमें-से बहुतोंको अब यूरोपियन वैद्योंने ग्रहण कर लिया है। औषधिविद्यामें औषधि बनानेकी भिन्न भिन्न विधियां दी गयी हैं, आरोग्य विद्या, शरीर रचना, और पथ्य-भो-जन पर बड़ा ध्यान दिया गया है। यहांके प्राचीन वैद्योंकी अस्त्र चिकित्सा, साहस और चतुराईसे युक्त है। ये अङ्गछेदन करके, रुधिरको दबाकर वा प्यालेके आकार-

की पट्टीसे अथवा उष्ण तेलसे बन्द कर देते थे। ये पथरी निकालते, पेट और गर्भाशयको चीरते, आंत उतरने, भगन्दर और बवासीरकी चिकित्सा करते, टूटी हड्डी और मोचको अच्छा करते एवम् शरीरसे हानिकारक वस्तुओंके निकालनेमें बड़े प्रवीण होते थे प्राचीन भारतवर्षीय वैद्य नाड़ी-पीड़ाकी भी चिकित्सा करते थे जो भौहोंके ऊपरकी पांचवीं नाड़ी काटनेकी वर्त्तमान विधिके समान एक विधि है। ये लोग अस्त्रोंके बनानेमें बड़ा चातुर्य दिखाते थे और विद्यार्थियोंको काष्ठके तखते पर मोम चढ़ाकर अथवा वनस्पतिके कोष्ठ और नसों वा मृतक शरीरके द्वारा चीर फाड़का काम सिखातेथे। ये बच्चा जनानेकी विद्यामें बड़े दक्ष थे, कठिनसे कठिन चीड़ फाड़ करनेमें भी कभी घबड़ाते नहीं थे और स्त्री तथा बच्चोंके रोगोंकी चिकित्सामें बड़े चतुर थे। रोगोंके निदान, प्रकार लक्षण, चिकित्सा और पहिचानको जानतेथे और यह भी बतादेते थे कि अमुक रोगका अमुक परिणाम होगा। पशु चिकित्सामें भी इन्होंने बहुत उन्नति की थी इसके सिवाय इनके ग्रन्थोंमें घोड़े, हाथी इत्यादिके रोगोंके सम्बन्धमें अबतक मन्त्र पाये जाते है।

(१७) एलफिन्सटन साहबकी राय है कि हिन्दुओंकी अस्त्रचिकित्सा ऐसी ही प्रसिद्ध है जैसी औषधि विद्या।

(१८) मिसेज मेनिङ्ग साहेबा कहती हैं कि हिन्दुओंके चीर फाड़के अस्त्र बहुत ही तीक्ष्ण थे। यहां तक उनसे बालभी चिर सकता था।

(१९) Indian Gazattier India के पेज २२०में लिखा है:- भारतवर्षके वैद्य स्त्री तथा बच्चोंके रोगोंकी चिकित्सामें बड़े चतुर थे। वैद्यक विद्यामें वे रोगके भेद, कारण, लक्षण, चिकित्सा और पहिचान जानतेथे और यहभी बतला देतेथे कि अमुक रोगका क्या परिणाम होगा? पशु चिकित्सामें भी उन्होंने बड़ी उन्नति की थी और हाथी घोड़े इत्यादिके सम्बन्धमें अबतक मन्त्र पाये जाते हैं।

(२०) बहुत दूर न जाइये अभी हाल हीमें ११ जून सन् १९११ ई०को प्रयागके वैद्योंने श्रीमान् लेफ्टीनेन्ट कर-नल एफ. मेकलारेन M. B. I. M. S. F. A. U. सिविल सर्जन महोदयको एक अभिनन्दनपत्र दिया था। जिसके उत्तरमें श्रीमान् सिविल सर्जन महोदय कहते हैं-

"यह बात मैंने जरूर सुना है कि आप लोगोंमेंसे पं० शिवराम पांडे, पं० केदारनाथ चौबे, पं० ठाकुर प्रसाद, पं० वैद्यनाथ शर्म्मा, पं० नारायण दीक्षित, पं० बच्चूराम कविराज नील माधव सेन, पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, पं० बाबू लाल मिश्र, बाबू जयकुमार जैनी, व मनमोहन लाल, और डा० रामेश्वरनाथ चतुर्वेदी आदिने कठिन और जीर्ण रोगोंको आश्चर्यके साथ आराम किया है।

ठाकुर रामेश्वर नाथ चतुर्वेदीने इस वर्ष आठ प्लेगके रोगियोंका इलाज किया। आनन्दकी बात है कि उनमें आठों आराम हुए हैं............जब मैं प्रथम भारतमें आया, उस समय मुझे यह नहीं मालूम था कि आपकी चिकित्साने इतनी उन्नति की है; किन्तु अब अधिकतर परिचय होनेके कारण मुझे खेद होता है कि मैं आप लोगोंकी विद्याके विषयमें इतना ध्यान न दे सका जितना देना चाहिये था। मुझे मालूम हुआ है कि आप लोग रोगोंका निदान तथा चिकित्सा भले प्रकार कर सकते हैं और आप लोगोंकी जीर्ण रोगकी चिकित्सा भी बहुत अद्भुत है। श्वास, जलोदर, अपस्मार, मृगी, रीढ़के रोग, और उत्पादन शक्तिके अभावके लिये आप लोग बहुत सफलताके साथ समय, देश और लोगोंकी प्रकृतिका विचार कर चिकित्सा करते हैं।

भारत औषधियों और बूटियोंसे सम्पन्न है। यहांकी सहस्रों औषधियां सरकारी औषधीय पुस्तकमें लिखी हुई हैं। मुझे विश्वास है कि समय पाकर और भी जैसे जैसे परिचय बढ़ता जायगा तैसे तैसे हम दोनों समुदाय वाले एक दूसरेसे सहायता पावेंगे। हम लोग एक दूसरेसे बहुत कुछ शिक्षा पा सकते हैं। क्योंकि हम दोनों समुदाय वालोंका लक्ष्य एक ही है अर्थात रोगोंको नष्ट करना है।" इत्यादि।

एक बात सबसे अधिक हर्षकी यह है कि उक्त श्रीमान सिविल सर्जन महोदयने डाकृर रामेश्वर नाथ चतुर्वेदीको एक सार्टीफिकेट भी दिया है जिसमें कि उन्होंने प्रशंसा करते हुए कहा है कि डाकृर चतुर्वेदीने इस वर्ष शहरके आठ मेंसे आठों और दिहातके ७५ फी सैकड़ा प्लेगके रोगियोंको आराम किया है। यह बात सुनकर वैद्य महाशयोंको और भी हर्ष होगा कि डाकृर चतुर्वेदी महाशयने प्लेग रोगियोंको आयुर्वैदिक औषधियोंके संयोगसे आराम किया है। आयुर्वैदिक वैद्योंके लिये यह बात कम खुशीकी नहीं है।

जौनपुरके सब जज श्रीयुक्त प्रेम बिहारी लालका जिन्होंने कि गतवर्षसे प्लेग रोगका अनुभव, परिशीलन और आलोचन किया है कथन है कि एलोपैथीका इस पर कुछ उपयोग नहीं होता है; किन्तु आयुर्वैदिक होम्योपैथिक अथवा यूनानीसे फी सैकड़ा ८० बल्कि ९० तक रोगी अच्छे हो सकते हैं।

इत्यादि प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि हमारा आयुर्वेद शास्त्र सम्पूर्ण चिकित्सा शास्त्रोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ है जिस तरह संसारमें महासागर अनन्त रत्नोंका भण्डार है। उसी तरह हमारा आयुर्वेदशास्त्र भी सब तरहके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्यका देनेवाला रत्नोंका भण्डार है। हमारा आयुर्वेद शास्त्र जिस गम्भीर सत्यके ऊपर

प्रतिष्ठित है उस प्रकार अन्य चिकित्सा शास्त्रोंकी नीव दृढ़ नहीं है। इसका कारण यह है कि आयुर्वेद शास्त्र उन त्रिकालदर्शी महर्षियोंके अन्वेषणका अपूर्व फल है जिनका ज्ञान भूत, भविष्य और वर्त्तमान इन तीनों कालको हस्तामलकवत् अवलोकन करता था। हमारा आयुर्वेदशास्त्र कपोल कल्पित नहीं है क्योंकि शास्त्रकारकी उत्कृष्टतासे शास्त्रकी उत्कृष्टता होती है।

बिना प्रमाणके किसी बातको मानलेना सचमुच ही निरर्थक है। अतएव यूरोपीय चिकित्साकी समीचीनताके विषयमें कुछ आर्य ग्रन्थोंके प्रमाण लिखना अवश्य है। जब तक रोग सहज होता है, जब तक रोग जड़ नहीं पकड़ लेता है, जब तक बल, मांसका क्षय नहीं होता है तब तक रोगको दूर करनेके लिये अनेक डाक्टर समर्थ होते हैं; किन्तु जब रोग सांघातिक स्वरूप धारण करता है, जब शरीरगत रस, रक्त, मांस, मज्जा आदि सबधातु विशेष रूपसे विकृत हो जाती हैं उस समय रोगको दूर करनेके लिये केवल आयुर्वेदका सहारा लेना पड़ता है। अतएव आयुर्वेदीय चिकित्सा सर्वोत्कृष्ट पदपर स्थित है. ऐसा बार बार कहने पर भी अत्युक्ति न होगी। अब भी यदि आयुर्वेद शास्त्रकी अच्छी तरह आलोचना की जाय तथा समस्त शिक्षित समाज आयुर्वेदीय चिकित्साका अनुसरण करें तो सम्पूर्ण जगद्वासी अवश्य मुक्तकण्ठसे

आयुर्वेदकी श्रेष्ठता स्वीकार करके इसके एकान्त पक्षपाती होंगे। चरक संहितामें कहा है :—

त्रिविधं खलु रोग विशेष ज्ञानं भवति, तद्यथा आप्तोपदेशः प्रत्यक्षमनुमानश्चेति त्रिविधत्वोस्मिन् ज्ञान समुदाय, पूर्वमाप्तोपदेशात् ज्ञानं, ततः प्रत्यक्षानुमानाभ्याम् परीक्षोपपद्यते, किं ह्यनुदिष्टपूर्वप्रत्यक्षानुमानाभ्यां परीक्षमाणो विद्यात्।

अर्थात रोगका ज्ञान आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष और अनुमान इन तीन प्रकारसे होता है। इन तीनों उपायोंमें-से, प्रथम आप्तोपदेशके द्वारा, रोगका ज्ञान होता है, फिर प्रत्यक्ष और अनुमानके द्वारा, परीक्षा होती है। किन्तु जो पहिले ही आप्तोपदेश द्वारा नहीं जाना गया है, उसकी प्रत्यक्ष और अनुमानके द्वारा किस प्रकार परीक्षा हो सकती है? आप्तोपदेशके द्वारा किस प्रकार ज्ञान प्राप्त होता है सो दिखाना जरूरी है। आप्तगण कहते हैं कि यह रोग और यह रोगका प्रकोप है। इस प्रकार रोगका पूर्व रूप, रूप, साध्यासाध्य लक्षण आदि प्रथम आप्तोपदेश द्वारा जानकर पश्चात् प्रत्यक्ष, अनुमानके द्वारा रोगकी परीक्षा आरम्भ करतें हैं। यथा राजयक्ष्माके पूर्वरूपमें माधवाचार्य लिखते हैं :—

श्वासाङ्ग मर्द कफ संस्रव तालुशोष,
वम्याग्निमांद्यमद पीनस कास निद्राः॥

शोषे भविष्यति भवन्ति सचापि जन्तुः ।
शुक्रे घृणो भवति मांस परोरिरस्सुः ॥
स्वप्नेषु काक शुक, शल्लकि, नीलकण्ठा ।
गृद्धास्तथैव कपयः कृकलास्वकाश्च ॥
ते वाहयन्ति सनदीर्विजलाश्च पश्येत् ।
शुष्कांस्तरुन्पवन धूमदवार्दितांश्च ॥

जैसे राजयक्ष्माके उत्पन्न होनेके पहले रोगीको श्वास अङ्गोंका टूटना, कफका गिरना, तालूका सूखना, बीम होना अग्निमाँद्य होना, नशा सरीखा मालूम देना, पीनस, खांसी, निद्रा, आंख सफेद, स्वप्नमें काक शुकादिका दर्शन अथवा उनपर सवारी, मांस खाने, स्त्री प्रसंगादिकी इच्छा, इत्यादिका ज्ञान होता है; परन्तु बिना आप्तोपदेशके उक्त वृत्तान्तको किस प्रकार जान सकते हैं और रोगीके निकट तत्सम्वन्धी विषय किस तरह पूछ सकते हैं। यदि हम आप्तोपदेशके द्वारा पहिले ही यह बात जान लें कि राजयक्ष्माके पूर्व रूपमें उपर्युक्त बातें होती हैं, तब तो निश्चित लक्षण प्रतीत होते ही स्वप्नादि सम्बन्धी बातें रोगीसे अच्छी तरह मालूम करके राजयक्ष्माका सहजमें निर्णय कर सकते हैं।

आप्तगण कहते हैं "असाध्यो बलवान यस्त्र केग सीमन्त कृजज्वरः" अर्थात् जिस ज्वरमें रोगीके बालोंमें गांठें सी पड़ जायँ वह ज्वर अत्यन्त बलवान और असाध्य

जानना। हम यदि आप्तोपदेशके द्वारा इन अरिष्ट लक्षणों-को नहीं जानते तो रोगीकी परीक्षा करनेके समय उसके बालोंकी ओर कभी लक्ष्य न देंगे। इसके अतिरिक्त और भी ज्वरके असाध्य लक्षण सधवाचार्यने लिखे हैं जिससे अनायास ही कालज्ञान मालूम हो जाता है। तथा और भी आप्तगण कहते हैं:--

वायुः पित्तं कफश्चोक्तः शरीरे दोष संग्रहः ।
मानसः पुनरुद्दिष्टो रजश्च तम एव च ॥

अर्थात् वायु पित्त और कफ़ ये तीन शारीरिक दोष और रज, तम ये दो मानसिक दोष हैं। इन सब शारीरिक और मानसिक दोषोंके विकृत होनेसे सब प्रकारके शारीरिक और मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। यदि आप्तोपदेशके द्वारा पहले हीसे यह तत्त्व न मालूम हो, तो वात, पित्त, कफ़ ये शारीरिक दोष और रज और तम ये मानसिक दोषोंके विषयमें किस प्रकार जान सकते हैं। अतएव इनके प्रकोप और शमनादिकी जानकारीके बारेमें सर्वथा अन्धकार होनेसे अन्य अन्य चिकित्साशास्त्रों-ने ऊपर कहे हुए वात पित्तादि दोषोंके विषयमें कुछ भी उल्लेख नहीं किया है।

रोगोत्पन्न होनेसे पहले ही रोगोंको कहने वाले आप्तोपदेशका परिहार करके, प्रत्यक्ष और अनुमानके

द्वारा रोगके ज्ञानको कहना कहां तक साहात्म्य सम्भव हो सकता है। आयुर्वेदाचार्य महर्षिगण कहते हैं:-

मिथ्याहार और विहारके द्वारा वात पित्तादि दोष वर्द्धित होकर रस रक्तादि सप्त धातुओंको विकृत करके अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं। इन मुख्य दोषोंके विषयमें अच्छी प्रकारसे परिचय न होनेसे रोग और ठीक ठीक चिकित्साका ज्ञान होना कैसे सम्भव हो सकता है। परन्तु आयुर्वेदज्ञ वैद्य प्रथम आप्तोपदेशके द्वारा दोषोंको जानकर चिकित्साके विषयमें बिन्दुमात्र भी विचलित नहीं होते हैं। यदि किसी समय रोग न भी निश्चय हो सके तो वे दोषोंके अनुसार भी चिकित्सा करनेमें समर्थ होते हैं। यथा महर्षि चरकाचार्य कहते हैं:- विकार नाम कुशलो न जिहीयात् कदाचनम्। नहि सर्व्व विकाराणाम् नामतोऽस्ति ध्रुवास्थिति॥ अर्थात् जो कभी किसी रोगका नाम समझमें नहीं आवै तो वैद्यको उसमें लज्जित नहीं होना चाहिये। क्योंकि यह बात नहीं कि शास्त्रमें सब रोगोंके नाम लिखे ही हों। अतएव रोग अनन्त हैं उन सबोंका ग्रन्थोंमें भी विवरण लिखना सर्वथा असम्भव है। इस विषयमें चरकमें कहा है:-

सएव कुपितो दोषः समुत्थान विशेषतः।
स्थानान्तर गतश्चैव जनयन्त्या मयान बहून्॥

तस्माद्विकार प्रकृतिरधिष्ठानान्तराणिच ।
समुत्थान विशेषांश्च वुद्ध्वा कर्म्म समाचरेत् ॥

एक दोष कुपित होकर कारण विशेषसे शरीरके भिन्न भिन्न स्थानोंमें जाकर नाना प्रकारके रोगोंको पैदा करते हैं। इसलिये रोगकी प्रकृति, स्थान और निदानकी विशिष्टता पर विशेष ध्यान रखकर चिकित्सा करनी चाहिये। फिर कहते हैं:- यथा सुकन्यः सर्वदिन्तु परिपतन्तः स्वच्छायां नाति वर्त्तन्ते, तथा स्वधातु वैषम्ये निमित्तः सर्व विकारा वातपित्तकफानाति वर्त्तन्ते। वात पित्तकफानान्तु पुनः समुत्थान संस्थान प्रकृति विशेषान अभिसमीदय तदात्माकानपिच सर्वं विकारांस्तानेवोपदिशन्ति वुद्धिमन्तः॥ जिस प्रकार पत्ती समस्त दिशाओंमें परिभ्रमण करने पर भी अपनी छायाको उल्लङ्घन करनेमें समर्थ नहीं होते हैं, उसी तरह सम्पूर्ण रोग स्वधातुके विकृत होने पर भी वातपित्त और कफको उल्लङ्घन करनेमें समर्थ नहीं होते हैं। विद्वानोंने वात पित्त और कफका निदान, लक्षण और प्रकृतिको ठीक ठीक समझकर सब प्रकारके रोगोंको इन्हीं तीनों दोषों अर्थात् वायुपित्त और कफके अन्तरगत किया।

अतः देश, काल और पात्रके भेदसे रोग चाहे किसी प्रकारका नवीन आकार क्यों न धारण करे किन्तु वह वातज, पित्तज, कफज, द्वन्दज अथवा त्रिदो-

पज इनमेंसे किसी न किसी तरहका अवश्य होगा। आयुर्वेदीय चिकित्सक नवीन रोगोंको देखकर कदापि भयभीत नहीं होते हैं। इसका कारण यह है कि महर्षियों-ने समस्त रोगोंको वात, पित्त और कफ इन्हीं तीनों दोषोंके अन्तरगत स्थित करके जगतका महान उपकार किया है। कूट मुग्दरमें कहा है कि संसारमें केवल तीन रोग हैं और उनके शमनार्थ केवल वातज, पित्तज और कफज ये ही तीन प्रकारके रोग उत्पन्न हो सकते हैं और उनके शमनार्थ कटु, अम्ल, मधुर, कषाय, तिक्त और क्षार ये ही ६ रस अर्थात् औषधियां हैं। रोग जिस दोषकरके उत्पन्न हो, उसके शमनार्थ इन रसों मेंसे, उस दोष अथवा दोषोंके शमनकर्त्ता रस अथवा रसोंका सेवन करावै।

प्रायः मनुष्य ऐसा भी कहते हैं कि जिस प्रकार डाक्टर लोग थर्मामिटर, स्टेथस्कोप आदि यन्त्रोंके द्वारा रोगको सहजमें निर्णय करलेते हैं उसप्रकार वैद्यगण नहीं कर सकते हैं। यह बात युक्ति सङ्गत नहीं प्रतीत होती। थर्मामेटरसे केवल ऊष्माकी अधिकता वा न्यूनता अवश्य मालूम हो जाती है; किन्तु सम्भव है कि यह किसी अंशमें कभी असत्य भी हो जावे। यथा—बगलमें लगानेसे ऊष्मा-का टेम्परेचर कुछ होता है; मुहमें लगानेसे कुछ होता है। एक थर्मामिटरसे टेम्परेचरकी डिगरी कुछ मालूम होती है, दूसरेसे कुछ। ऐसी अवस्थामें किस स्थान और यन्त्रकी

बात स्वीकार करनी चाहिये। यही नहीं किन्तु थर्मामेटरसे केवल ऊष्मा ही प्रतीत हो सकती है। वह किसी कारणसे हो, दोषोंका निर्णय कदापि नहीं हो सकता है। वहिर्वेगी और अन्तरवेगी ज्वरको लेकर थर्मामेटर लगाइये। उसमें ज्वरकी सत्यता मालूम करनेमें क्या अवस्था होगी–कफज ज्वरमें यदि थर्मामेटरकी उष्णता अधिक भयी तो शीतोपचारसे क्या अवस्था होगी। इत्यादि किन्तु आयुर्वेदशास्त्रके ज्ञाता नाड़ीके द्वारा ही थर्मामेटरका काम निकाल लेते हैं और उसके साथ ही दोषोंका भी यथार्थ निर्णय करके, दोषोंके अनुसार औषधोपचार करके यशके भागी होते हैं। जीर्ण ज्वरादिमें थर्मामेटरसे नाड़ीकी अपेक्षा कहां तक रोग निश्चय हो सकता है सो सब ही जानते हैं।

राजयक्ष्मा रोगमें डाकृर लोग स्टेथस्कोप यन्त्रके द्वारा रोगका यथार्थ निश्चय कर लेते हैं; किन्तु आयुर्वेदज्ञ महर्षियोंने उसीको नाड़ी परीक्षाके द्वारा गतिके तारतम्यसे रोगका सिद्धान्त निश्चय किया है। क्योंकि नाड़ी परीक्षाके द्वारा केवल स्पर्शमात्रके तारतम्यसे रोगका निर्णय करना जितना क्लिष्ट और सूक्ष्म है उतना स्टेथस्कोपके द्वारा वक्षस्थल या हृदयकी परीक्षा करके शब्दके तारतम्यको जानना कठिन नहीं है। इसके लिये उन महर्षियोंने एक और भी सुभीताकर दिया है कि प्रत्येक रोगके इस

प्रकार वैशेषिक लक्षण वर्णन किये हैं कि जिनके द्वारा नाडीके बिना स्पर्श किये ही वैद्यगण यक्ष्मादि रोगोंका निर्णय सहज हीमें कर सकते हैं।

राजयक्ष्मामें उसका पूर्वरूप रूपादि लक्षण और साध्यासाध्य विचारको वर्णन करके इस रोगका निश्चय करना कितना सहज कर दिया है। राजयक्ष्माके कतिपय नामोंका वर्णन करते हुए कहा है कि:—संशोषणाद्रसादीनां शोष इत्यभिधीयते। क्रियाक्षय करत्वाच्च क्षय इत्युच्यते बुधैः। अर्थात् रस रक्तादिका शोषण होनेसे शोष और क्रियाके क्षय होनेसे क्षय कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि रस, रक्त, आदि धातु शोषको प्राप्त हो जायगी और शरीरकी अभ्यन्तर इन्द्रियोंके कार्यका क्षय अर्थात नाश हो जायगा अथवा यों कहिये कि जब अभ्यन्तर कार्यकारिणी इन्द्रियां अपना काम न कर सकेंगी तब वह लक्षण स्वयम् ही इस रोगमें उत्पन्न हो जायगा। जिनको कि डाक्टर लोग यन्त्रके द्वारा वक्षस्थलको देखकर जान लेते हैं।

इसके त्रिरूप, षट्रूप, और एकादश रूपके द्वारा रोगकी परीक्षा तथा मांस वलक्षय, अतिसार, अरुचि, अग्निमान्द्य, शोथ आदि लक्षणोंके द्वारा ऋषियोंने उसका असाध्यत्व विचार वर्णन करके और भी सहज कर दिया है।

अन्तर विद्रधि (भीतरी फोड़ा) को भी उसके वाह्य विद्रधिके अतिरिक्तविशेष लक्षण, होनेसे आयुर्वेद चिकित्सक पहिचान लेते हैं। यथाः—

> वस्तौकृच्छ्रं, क्लोम्न्युदन्यां, पार्श्वंस्तम्भं तु वृक्कयो-
> पायावपानविट्रोधं कुक्षावनिलजारुजः।
> नाभ्यांहिक्कां, हृदिश्वासं, प्लीहिश्वासा प्रवर्तनम्,
> यकृत्यजस्रं कसनं, वङ्क्षणेतु करिग्रहम्।
> स पक्वो वामयेत् ऊर्ध्वं नाभेः सञ्चारयेदधः॥

अर्थात् वस्तिमें होनेसे मूत्रकच्छ्रता, पिपास स्थानमें होनेसे बारम्बार प्यास, वृक्कस्थानमें पसलियोंका जकड़ना, गुदा स्थानमें होनेसे अपानवायु और मलका अवरोध, कुक्षिमें होनेसे वात सम्बन्धी रोग, नाभिमें होनेसे हुचकी, हृदयमें होनेसे श्वास, प्लीहा स्थानमें होनेसे श्वासकी रुकावट, यकृतमें होनेसे निरन्तर खांसी, वङ्क्षणमें होनेसे कमरका बँधना इत्यादि लक्षण वाह्य विद्रधिके लक्षण संयुक्त प्रतीत होते हैं। जब नाभिके होनेवाली विद्रधि पक जाती है तब राद संयुक्त रक्तकी वमन होती है और जब नाभिके नीचे होनेवाली विद्रधि पक जाती है तब राद और रक्त संयुक्त गुदाके मार्ग मल गिरता है। इन लक्षणोंसे बिना यन्त्रके अवलम्बसे ही अभ्यन्तर विद्रधिके जाननेमें सुविधा होती है।

शरतकालमें उत्पन्न पित्त ज्वरमें प्रायः टेम्परेचर १०४ तथा १०५ डिग्री तक बढ़ जाता है और उसमें ज्वरकी तीव्रता, प्रलाप, जीभमें पीलापन, अत्यन्त तृषा, और मल पतला पीला आदि होने लगता है। ऐसे रोगीको देख कर वैद्य सहज हीमें उसे प्राकृतज्वर मानकर चिकित्सा करते हैं और भयभीत नहीं होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि"प्राकृतः सुखसाध्यस्तु वसन्तः शरदुद्भवः"–इसी तरह मूत्र मार्गसे शर्करा निकली देखकर उसे कफ जनित प्रमेह जान लेते हैं। जो सुखसाध्य होता है। क्योंकि कहा है "साध्या कफोत्था दश पित्तजा षट्याप्यान साध्याः पवनः चतुष्काः।"

पशुचिकित्साके विषयमें पश्चमीय चिकित्सकोंको अति उन्नतिके शिखर पर देखकर प्रायः लोग कहते हैं कि आयुर्वेदमें इसका वर्णन नहीं है; किन्तु चरक सुश्रुतादि ग्रन्थोंके देखनेसे यह भ्रमदूर हो सकता है। यही नहीं किन्तु इस विषय पर शालिहोत्र आदि महान ग्रन्थ पड़े हैं। जिसका अनुवाद अन्य विदेशीय वैद्योंने अपनी भाषामें किया है। जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है।

✓आयुर्वेदका रसायनशास्त्र केमिस्ट्री बड़े महत्वका है। रसरत्नसमुच्चय देखनेसे ज्ञात हो सकता है; कि इस विषयके कितने सिद्ध पुरुष होगये हैं। इस विषयके ऊपर दर्जनों ग्रन्थ निर्माण किये गये थे जिनमेंसे अब अनेक

ग्रन्थ अप्राप्य हैं। हर्षकी बात है कि अनेक खोजी पुरुष इस कार्य में दत्तचित्त हैं।

बङ्गालके Prof. प्रफुल्लचन्द्रायने हिन्दू रसायनशास्त्रका इतिहास (History of thc Hindu Chemistry) दो भागोंमें प्रकाशित किया है जिसमें हिन्दू रसायनशास्त्रका पूरा वर्णन है–

Prof. जगदीशचन्द्र बोस, श्रीयुक्त माधव मैरालसुरतकर, श्रीयुक्त त्र्यम्बक गुरुनाथ काले, श्रीयुक्त शिवकरबापू जी तलपदे इत्यादि महानुभावोंने भी अनेकानेक खोजकर निबन्ध, पुस्तक इत्यादिक लिख डाले हैं। इस विषयमें विशेष न कहकर केवल इतना और कहना है कि आयुर्वेदपञ्चानन पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल सम्पादित "सुधानिधि" में "भारतीय रसायनशास्त्र" शीर्षक लेख पढ़नेसे विस्तार पूर्वक हाल मालूम हो सकता है। भारतीय रसायनशास्त्र अलग पुस्तक रूपमें भी मिलता है।

आयुर्वेदके वाजीकरण तन्त्र, कौमार भृत्य, अगदतन्त्र इत्यादि भी देखने योग्य हैं।

हिन्दू राजाओंके राजत्वकालमें विशेषतः वनस्पतिकी चमत्कारिक औषधियां काममें लायी जाती थीं; किन्तु आवश्यकता होनेसे शस्त्रक्रिया भी की जाती थी। वनस्पतिकी औषधियों पर इतना ध्यान दिया जाता था कि आजकल बात बात पर जिन रोगों पर शस्त्रक्रिया

की जाती हैं वे उस समय जड़ी बूटियोंके सेवन कराने अथवा लगानेसे अच्छी की जाती थीं। एक समुदाय उन लोगोंका भी था जो शस्त्रक्रियामें बड़े पारङ्गत थे।

सुश्रुत संहिताके देखनेसे मालूम हो सकता है कि आजकलके नये सुधरे हुए ढंगकी शस्त्रक्रिया वाले भी उसको अच्छी तरह पढ़ें तो वे भी उसकी उत्तम योजनाके लिये उसका मान किये बिना न रहैं।

अन्तमें यह बात कहकर मैं अपने लेखको समाप्त करता हूं कि आयुर्वेद हमारा है; अपनी वस्तुको चाहे वह कैसी ही हो ग्रहण करने योग्य है।

जयकुमार जैनी वैद्य।
प्रयाग।

छठा निबन्ध।

हमारे वैद्यककी अवनतिका कारण।

[पण्डित वैद्यनाथ शर्मा राजवैद्य प्रयाग लिखित]

आज हमारे लिये बड़े ही आनन्दका अवसर है देश देशके वैद्यक विद्या प्रवर, आयुर्वेद विशारद यहां इस तीर्थ राजकी पावनभूमिमें एकट्ठे हुए हैं। इस समय जब देशके सब लोग बुलन्द एक़बाल वृटिश सरकारके राम राज्यमें अपनी अपनी उन्नति कर रहे हैं तब भारतवर्षके प्राचीन और आर्य्य जातिके अनुकूल आयुर्वेद विज्ञानका

अधःपतन देखकर किस देश दशा सम्मार्गके आंसू नहीं आवेगे।

इस समय हम लोगोंको यह विचारना चहिये कि इस देशके पुरातन वैद्यकशास्त्रकी इस अवनतिके क्या कारण हैं; और क्यों आज उन्नतिके इस चढ़ते युगमें यूरोपकी प्रभावशालिनी शक्ति इङ्गलिश सरकारकी स्वतन्त्रता पा कर भी हमारे देशका यह पुरातन भैषज्यशास्त्र अस्तप्राय हो रहा है।

पहला कारण तो यह है कि इनदिनों राज सरकारकी ओरसे अङ्गरेज़ी डाक्टरीका ही प्रचार है और राजकी ओरसे जिसका प्रजामें प्रचार होता है उसकी बढ़ती और सन्मान उस देशके लिये स्वाभाविक बात है। इस कारण जब भारतवर्षमें अङ्गरेज़ी डाकृरीका प्रचार उन्नतिके शिखरपर पहुंच गया है, तब इस देशकी पुरातन चिकित्सा प्रणालीका अवनत होना ही अवश्यम्भावी है।

दूसरी बात यह कि इस देशमें पुरातन चिकित्सा प्रणालीकी शिक्षाके लिये कोई विद्यालय या पाठशाला भी नहीं है जहां शिक्षार्थियोंको शिक्षा दी जाय इस कारण इस प्राचीन विद्याकी उन्नतिका द्वारा बन्द हो गया है।

तीसरा कारण यह कि डाक्टरीका प्रचार और उसकी शिक्षा आदिका समुचित प्रयत्न देखकर देशके लोग अपने यहांकी पुरातन चिकित्सा प्रणाली पर ध्यान नहीं देते।

इन्हीं सब कारणोंसे आयुर्वेद विद्याका प्रचार बहुत घट गया है और देशके लोगोंकी रुचि धुनबांधे हुए डाक्टरी चिकित्सा प्रणालीकी ओर चली जा रही है और इसी अवसर पर अहितकी देशी विदेशी दवाइयोंका गड्ड मड्ड करके पूर्वापर ज्ञानसे हीन आयुर्वेद विद्याका अपमान करनेवाले अज्ञ अपने देशके लोगोंका विश्वास आयुर्वेदसे हटाते जाते हैं।

आज इस सभामें बड़े बड़े सुयोग्य आयुर्वेद धुरन्धर उपस्थित हैं और देशभरके सुविख्यात और अनुभवशाली वैद्योंका यहां समागम है। मैं अपनी लघुमतिके अनुसार इस समय आयुर्वेदके प्रचारकी कामना और देशकी कल्याण कामनासे निवेदन करता हूं कि आप लोग एक मत होकर आयुर्वेदकी उन्नति और प्रचारका सुप्रबन्ध और सदुद्योग करें।

सातवां निबन्ध।

भरतखण्डकी देशी औषधियोंके गुण।

[पं० कामताप्रसाद दुबे बिलासपुर लिखित]

(१) इस भारतखंडमें अबतक जितने वैद्यराज हुए हैं, सनातनसे अनेक धन्वन्तरि होगये और दिन दिन होते

जाते हैं, वे सब इस भरतखंड हीमें जन्म गये हैं। जितनी वैद्यककी पोथियां हमारे भारतरत्न भूमिमें हैं; सम्पूर्ण पोथियोंमें भारतकी ही उत्पन्न जड़ी, बूटियों, पत्तियों, वट वृक्ष, आदिक छोटी मोटी वस्तुओंके प्रयोगसे संसारके समस्त रोग मिटानेके लिये औषधियोंका पाठ बतलाया है; अब तक घर घर उनका उपयोग किया जाता है। गांव गांव खेड़ों खेड़ोंमें अपढ़ स्त्रियां और अपढ़ मनुष्य भी समय पर बीमारी होनेसे, उन छोटी औषधियोंके द्वारा रोगनाश किया करते हैं। ऐसा कोई स्त्री, पुरुष, बालक न निकलेगा जो थोड़ी औषधियां न जानता हो। जङ्गलों और बनोंमें रहने वाली जितनी जंगली जातियां हैं वे सब उत्तम जड़ी बूटियोंको जानती हैं, और उन्हींका उपयोग करती हैं। इन औषधियोंकी बात यहां वाले सब जानते हैं। बल्कि यहांकी जड़ी बूटियोंकी बात अन्यत्र दूर दूर देशोंमें प्रख्यात है। इन बूटियोंके लिये, विलायत, अमेरिका, जापान वाले तरसते हैं। यहांसे बहुतसी जड़ी बूटियां उन देशोंको प्रतिवर्ष सैकड़ों मन चली जारही हैं। उन देशोंमें ऐसा जल, पवन नहीं है कि भारतके समान औषधियां उपजा सके, भूमि वहांकी ऐसी शक्तिवाली नहीं जैसी कि भारत की है। यह बात अनेक बड़े बड़े डाक्टर लोगोंने अपनी पुस्तकोंमें लिखी है। यहां की औषधियोंकी प्रशंसा प्रथमसे आज

तक होती चली आरही है। जैसा आयुर्वेद भारतका बढ़ा-चढ़ा है और था, वैसीही प्रशंसा अनेक डाक्टरगण अपनी अनुमतिमें देरहे हैं। भारतकी यह प्राचीन विद्या है। इस विद्यामें जैसे इस देशमें विद्वान थे और हैं वैसे वैसे आज भूमंडलमें अन्यत्र नहीं हैं, न थे। ईशा मसीहको भारतसे ही अनेक अनुभूत औषधियां प्राप्त हुईथीं। ये सब बातें सब लोग जानते हैं। अब प्रश्न इस बातका होता है कि भला फिर भारतके लोग यहांकी औषधियोंका उपयोग दिन दिन क्यों घटा रहे हैं? इसका उत्तर आपही मनमें दीजिये। बड़ेही आश्चर्यकी बात है कि हमारे यहां जो औषधियां काममें लायी जाती हैं, जैसे सोंठ, धनियां, जीरा, नमक, अजवाईन, चिरायता, दूध, दही, माठा, (जिसका पहिले भारतमें पानीके सदृश भंडार था आज हम जिसका नाश कर रहे हैं) हल्दी, आंवला, हर्र, बहेरा, आदिक और सुनिये पत्ता व जड़ियोंके, नाम नोम, बबूल, सुनगा, रूसा आदि, हमारे आगे पीछे, चारों ओर बाग़ बगीचे, खेतोंमें हमारी औषधियां लगी हैं; आवश्यकता पढ़ने पर तुरन्त प्राप्त कर लीजिये। औरभी विशेषता हमारी औषधियोंके विषयमें यह है कि औषधियोंके प्राप्त करनेके लिये द्रव्यं आपको कुछ भी नहीं लगाना पड़ता; सुगमता पूर्वक और बे मूल्य औषधियां मिल जाया करती हैं। हमको हमारे पूर्व वैद्योंके लिये करोड़ों

असंख्य धन्यवाद देना चाहिये कि उन्होंने रोग नाशके लिये इन वस्तुओंसे ही अनेक, आयुर्वेद ग्रन्थ भर दिये हैं। यदि हम उनका उपयोग न करें, तो फिर हमारे सदृश और कौन मूर्ख होगा? जब उनका उपयोग नहीं करेंगे तब अवश्यही हमारा पैसा दुगना, चौगुना अंगरेजी दवाइयोंके खरीदमें जावेगा! समयपर औषधि न प्राप्त कर सकें, दूसरेका मुँह ताकना पड़े, उनसे गुण भी न होवे। और जब हम यहांकी औषधियोंको काममें नहीं लायेंगे ग्रन्थ बे काम होंगे; विद्या डूब जावेगी-लाखों वैद्य भूखों मरने लगेंगे, तनिक फुन्सी हुई तो हमें डाक्टरके बंगले दौड़ना होगा; आदि आदि बहुतसी बातें हैं। फिर हम अपने चारों ओरकी लताओं और पत्तियोंका पहिचानना भूल जावेंगे, हमारे लिये उनका उगना व्यर्थ होगा, माता अपने पुत्रोंके लिये ये औषधियां उत्पन्न करती है और हम उनका अपमान करेंगे तो वे हमसे रुष्ट होकर यहांसे सदाके लिये विदा हो जावेंगी! माताको रुष्ट न करो ऐसा करते समय हमको थोड़ा लजाना चाहिये। और अब हम ऐसा न करेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा करनी चाहिये, तुम कैसे पुत्रहो, कि भारतमाताकी गोदमें बैठकर अपनी माताका दूध न पीकर अन्य माताका दूध पीते हो! हमको अन्य माताका दूध पिलाया जायेगा तो अवश्यही हम अपनी माताके विरुद्ध होंगे। साइन्स, पदार्थ विज्ञान,

वैद्यक शास्त्र सिद्ध करते हैं कि जैसी माताका दुग्धपान करेंगे, वैसेही गुण, अवगुण पुत्रमें माताके सदृश ही होंगे। आप ध्यान पूर्वक विचार लीजिये इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हम आप होरहे हैं, अतः निर्णय कर लीजिये।

(२) और देखिये, जिस भूमि पर जो मनुष्य उपजते हैं उनको उसी देशकी उत्पन्न हुई औषधियां लाभ पहुंचातीं हैं। जिस प्रकृतिकी भूमि है उसी प्रकृतिके मनुष्य होते हैं। भूमिकी जैसी प्रकृति होगी उसी प्रकार प्रकृति जल, पवन, वायु, अन्न, और औषधियोंकी होती है। भारत भूमिकी प्रकृति व उसके ऊपरके जन्मे हुए निवासियोंकी प्रकृति ठीक वैसी है। यहां समशीतोष्णता है। गरमी, सरदी, जाड़ा, समान है। तो कहिये जिस भूमि पर केवल सरदीही पड़ती वहांकी औषधियां किस प्रकार उष्ण भूमिकी प्रकृति-वालोंके अनुकूल हो सकती है? कभी नहीं-कदापि नहीं। यही कारण है कि अङ्गरेज लोग, भारतकी औषधियोंका कम उपयोग करते हैं। चाहे यहांकी ही औषधियां हों; किन्तु जब तक अपने देशके जल, पवनसे संस्कार नहीं कर लेते हैं तब तक काममें नहीं लाते। यह बात उनके ही सिद्धान्तसे हमको सीखना चाहिये, मान्य करना चाहिये और उसी भांति वर्तना भी चाहिये।

(३) हमारे यहांकी औषधियोंका सस्तापन तो देखिये, उदाहरणके लिये हमारे यहांका चिरायता लीजिये

और नीम लीजिये और अङ्गरेज़ी दवा कुनैन लीजिये। एक दमड़ीके चिरायतेमें कई मनुष्य आराम होंगे। दमड़ी भी नहीं लगती है; देहातोंमें घर घर कोलों और बाड़ियों-में लगा रहता है और नीम तो कहीं मोल लेनेको जाना ही नहीं है। अङ्गरेज़ी कुनैन १ पैसेमें १ पुड़िया लेनेसे एक ही दिनके लिये होगी, कई पैसेकी जब खा जावेंगे तब कहीं लाभ होगा, और कुनैन पास नहीं होगी तो ढूंढना पड़ता है कि कहां मिलेगी। फिर कुनैनसे नुक़सान भी भारतके लोगोंको होता है। उष्ण होनेसे धातु विकार उत्पन्न हो जाते हैं! और चिरायता है तो पत्ती वनस्पति देखनेमें न कुछ वस्तु; पर गुण ऐसा है कि रुपयोंकी दवा एक ओर और चिरायता एक ओर; तथा उससे शरीरको हानि भी नहीं पहुँचती। नीमके तो अद्वितीय गुण हैं। अन्य देशवाले इसे बहुत प्यार करते हैं। पर यह वहां लगती ही नहीं है। यहांके लोग कहा करते हैं कि पत्तियों व रुखरियों, लकड़ियोंमें क्या है? कुछ दम नहीं है? देखनेमें रूखापन, व भद्दापन, सुन्दरता अङ्गरेज़ी दवाइयोंकी सी नहीं। नीमकी पत्तीको पीस डालिये या पानीमें पका डालिये और फिर शोधन यन्त्रसे शोधिये, तब आपको मालूम होगा कि इसमें जानदार कौन कौनसे पदार्थ मिश्रित हैं। विलायती डाकृरोंने खोज की है कि उसमें पारा है। अब देखा आपने कि पत्तियोंमें कैसा अद्भुत पदार्थ भरा

हुआ है। ऐसां ही अन्य पत्तियों और लकड़ियोंमें क्या क्या न भरा होगा। पर शोक कि आजकल हमारे वैद्यगण ठीक ठीक जङ्गली पत्तियों और लकड़ियोंको नहीं पहचानते हैं या परिश्रमके डरसे आलसके मारे इधर उधरकी मिट्टी पत्थर काष्ठ कूट काटकर भेज देते हैं और रोगियोंको दे रहे हैं; जिसके कारण भारत भूमिकी जड़ी बूटियों परसे विश्वास उठता चला जा रहा है, और लोग दिन दिन उपयोग करना त्याग करते जाते हैं, और वैद्योंको बदनाम करते हैं कि भारतके वैद्य, वैद्य नहीं लुटेरे हैं। ऐसा धन एकत्र करके क्या करोगे? इस कलङ्कसे भारतकी वैद्यक विद्याके ऊपर रही सही लोगोंकी श्रद्धा अन्तमें चली जावेगी और फिर आपके कारण हम न इस घाटके रहेंगे और न उस घाटके। इसलिये अब वह समय आया है कि ऐसा कहने वालोंके मुखारविन्दमें कालिका पोत दीजे कि "इन लकड़ियों" में क्या है? अभी भारत माताकी गोदमें इस दोषको मिटानेके लिये सैकड़ों बालक खेल रहे हैं कि वे लोग अपनी माताकी प्रसन्नतार्थ बूटियोंका प्रभाव बतानेके लिये जन्म गये हैं। यह वही भारतभूमि है कि जहां पर रणमें जब लक्ष्मण जी मूर्छित हुए थे तब तुरन्त ही सुषेण नामी वैद्यने सजीवन पत्तीका रस निचोकर तत्काल लक्ष्मण जीको सचेत किया था। वह भारत भूमि कहीं चली नहीं गयी है और न वह अमृत स्वरूपी लता। अतएव भारतवासि-

योंको चाहिये कि फिरसे एक बार अपनी पताका फहरा दें जैसे कि पूर्व पुरुषोंका वैद्यकका डङ्का आकाश पाताल और भूमण्डलमें सर्वत्र बजकर यशस्वी हो रहा है। यही मनुष्यजीवनका धर्म है, नहीं तो मृत सदृश धन कमानेको लाखों जीव नित्य मरते और पैदा होते जाते हैं ही।

कामता प्रसाद दूबे, बिलासपुर [म. प्र.]।

आठवां निबन्ध।

आयुर्वेदीय चिकित्सालयोंकी आवश्यकता।

[पं० वृद्धिचन्द्र जी शर्मा लक्ष्मणगढ़ सीकर.]

निःसन्देह आयुर्वेद विद्या धर्म, अर्थ, काम, मोक्षके मूल कारण आरोग्यरक्षाको सुरक्षित रखनेके लिये सर्वोत्कृष्ट विद्या है।

ज्ञानकोटिमें मनुष्योंको सर्वाङ्गपूर्ण करनेको जिस प्रकार वेदके षडङ्ग शिक्षा, काव्य, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, और ज्योतिषके पढ़नेकी आवश्यकता है उसी प्रकार प्रत्यक्ष शरीरावयवोंकी सुरक्षाके लिये ऋग्वेदका उपवेद आयुर्वेद बना है कि जिसके अनुसार चलनेसे मनुष्य सब विद्याओंके पढ़ने योग्य पारिश्रमिक शक्ति सम्पादन कर यशस्वी हो सकता है। जैसे वेदोंको जाननेके लिये उसके छः अङ्ग रचे गये हैं वैसेही शरीर रक्षाके लिये शल्य, शालाक्य, कौमारभृत्य, काय चिकित्सादि अष्टाङ्ग आयुर्वेदको भी

महर्षियोंने रचकर जगका उद्धार किया है। विशेष दुःखकी बात है कि संस्कृत विद्याके ह्रास होनेके कारण आयुर्वेदीय महाविद्याकी भी हीनता हो रही है। और जिससे भारत वासियोंको बहुत कुछ शारीरिक हानि उठानी पड़ती है।

आप जानते हैं कि वर्त्तमान समय भारतमें रोगोंकी इतनी प्रबलता हो गयी है कि जिसका कुछ ठिकानाही नहीं है।

जब हम विचार करते हैं कि इस रोगवृद्धिका कारण क्या है तब हमको यही ज्ञात होता है कि खाद्य पदार्थोंकी अश्रेष्ठता ही मुख्य कारण है। खाद्यपदार्थोंमें ऐसे पदार्थ सम्मिलित रहते हैं कि जिनके खानेसे हृष्टपुष्ट मनुष्योंके शरीरमें भी नाना प्रकारकी व्याधियां उत्पन्न होजाती हैं। इन व्याधियोंको रोकनेके लिये दो बातोंकी आवश्यकता है और वह यह है कि प्रथम खाद्य पदार्थोंमें अपवित्र और रोगकारी पदार्थोंका जो समावेश रहता है उसका अवरोध किया जाय; परन्तु इस कामको करनेमें हमको सफलता तभी हो सकती है कि जब इस कार्यमें सरकार गवर्मेन्ट सहायता दे। बिना सरकारी सहायताके कृतकार्य होना दुस्साध्य है। दूसरा कारण यह है कि सदा औषधियोंका सुप्राप्य होना। जब मनुष्योंको शुद्धौषधियां मिलती रहती हैं तब रोगादि उत्पन्न नहीं हो सकते।

यद्यपि इस समय सरकारने बहुतसे शहरोंमें अस्पताल खोल रखे हैं। इसके लिये हम सरकारके कृतज्ञ हैं। तब भी स्पष्ट रूपसे कहना पड़ता है कि उनसे यथार्थ लाभ सर्वसाधारणको नहीं पहुंच सकता। मुख्य कारण यही है कि विदेशोंकी बनी हुई औषधियां हमारे देशके मनुष्योंको लाभकारी नहीं हो सकतीं। क्योंकि चिकित्साके पूर्व इन बातोंके देख लेनेकी नितान्तावश्यकता है कि देश, बल, वय, रोग, और औषध रोगीके अनुकूल है कि नहीं। विदेशी दवाइयां बहुमूल्य होती हैं वे हमारी प्रकृतिके प्रतिकूल होनेसे आशानुरूप फलप्रद नहीं हो सकतीं।

अतः उचित है कि प्रत्येक शहर और ग्राममें धर्मार्थ सुचिकित्सालय स्थापन किये जाँय। उनमें श्रेष्ठ वैद्योंके द्वारा अच्छे रसादिकोंका प्रयोग किया जाय। ऐसे औषधालयोंके खोले जानेसे ग़रीब भारतवासियोंका बड़ा उपकार होगा। दातव्य औषधालय चिकित्सालयोंके अभावसे न जाने कितने गरीब मनुष्य रोग ग्रसित होकर कुत्सित कालके कराल दंष्ट्रा जालमें पड़कर असमयहीमें अपने प्यारे पुत्रकलत्रादिको छोड़कर इस लोकसे सदाके लिये लम्बी यात्रा कर जाते हैं। इससे बढ़कर असाधारण दुःखको निर्मूल करनेके लिये उचित है कि प्रत्येक शहर और ग्राममें आवश्यकताके अनुसार छोटे बड़े आयुर्वेदीय दातव्य औषधालय चिकित्सालय स्थापन किये जायँ। आशा है

इस विषयमें विशेष आन्दोलन कर आप सफलता लाभ करके भारतवासियोंका परमोपकार करेंगे।

नवां निबन्ध।

प्लेगसे बचनेके सरल उपाय।

[राय पूरनचन्द जी पटना]

प्लेग एक प्रकारका कीड़ा है, जिसको परमेश्वरने "पादसंघर्षण" नामक बिषके खानेके लिये पैदा किया है। पादसंघर्षण विष और प्लेगके कीड़े इनका विस्तार-पूर्वक हाल प्लेग दर्पण नामक पुस्तकमें लिखा जायगा। अभी उससे बचनेके सरल उपाय लिखे जाते हैं।

१—जब जिसके घरमें चूहे मरने लगें तब प्लेगके कीड़ोंका उस घरमें पैदा हो जाना निश्चय जानो।

२—चाहे साफ़ सुथरे घरोंमें अथवा मैले कुचैले घरोंमें चूहे कहीं न भी मरे हों तो भी मरे हुए चूहोंकी ऐसी बू किसी समय मालूम पड़े और फिर ग़ायब हो जावे तो घरमें प्लेगके कीड़ोंका विद्यमान रहना निश्चय जानो।

३—जिस नगरमें प्लेग बहुत दिनों तक रह कर पुराना हो गया हो वहां ऐसी दशामें मरे हुए चूहोंकी जगह जलते हुए मुरदेकी ऐसी बू आने लगती है। ऐसी दशामें भी उस घरमें प्लेगके कीड़ोंका होना निश्चय जानो,

किन्तु नये कीड़ोंके बनिस्बत इनमें विषका ज़ोर कुछ निर्बल होता है और ऐसी आशा होती है कि प्लेगका जल्द अन्त होनेवाला है।

अब इससे बचनेका उपाय यह है कि उस घरको उसी क्षण छोड़ कर आप अन्यत्र चले जावें तो अति उत्तम है।

यदि आपसे घर छोड़ना न बनपड़े तो सहज और सरल उपाय उससे बचनेका यह है कि ऐसे घरोंकी ज़मीन और छतोंपर अर्थात् जहां जहां आदमियोंका पैर पड़ता हो चूना पुतवा देवें। दीवारोंको पोतना कुछ ज़रूर नहीं है, और प्लेगका प्रकोप बना रहनेकी दशामें १०, १२ दिनों बाद फिर चूना पुतवा देवें। ऐसा करनेसे पाद-संघर्षण विष और प्लेगके कीड़े दोनोंका नाश हो जावेगा। और उस घरमें चूहोंका मरना एक दम बन्द हो जावेगा और फिर घरके रहनेवाले आदमियोंको प्लेगका भय नहीं होगा। किन्तु इस बातका पूरा ध्यान रखा जावे कि कोई कोठरी या कोई स्थान चूना पुतनेसे बञ्चित न रह जावे नहीं तो चूनेका पुतवाना व्यर्थ हो जावेगा। यदि मुहल्लेके लोग एक राय होकर अपने मुहल्लेकी गलियोंमें चूना पुतवा सकें तो उस मुहल्लेमें प्लेगके प्रकोप होनेका भय नहीं रहेगा। इस पर पाठक गण फिर ध्यान देवें कि चूना घरोंकी ज़मीनमें पुतवाना होगा छतों पर जिस-पर आदमी चलते फिरते हों उसको भी चूनेसे पुतवा दो।

यदि लोग मेरी इस बातको मानकर काम करेंगे तो अवश्य ईश्वरकी कृपासे प्लेगके भयसे बच सकेंगे। इसमें विशेष ख़र्चकी ज़रूरत भी नहीं है। केवल रुपये आठ आने ख़र्चसे चूना पोता जा सकता है।

इस बातका भी सदा ध्यान रखना ज़रूर है कि प्लेगके दिनोंमें नंगे पैर घरोंमें या गलियोंमें कोई नहीं चलने फिरने पावें। यह बात आप लोगों पर विदित ही होगी और जो नहीं जानते होवें उनके जाननेके लिये लिखे देता हूं कि प्लेग जब आता है तब पहिले चूहे मरने लगते हैं उसके बाद घरके दाई नौकर बीमार होते हैं. तब घरकी स्त्रियोंमेंसे कोई बीमर पड़ती है; और उसके बाद घरके मरदों पर आफ़त आती है। इससे साफ प्रकट है और येही बात ठीकभी है कि प्लेगके कीड़ोंके काटनेहीसे बीमारी होती है। और चूंकि प्लेगके कीडे जमीनमें पैदा होते हैं और उसमेंभी खासकरके सर्द जमीन और अंधेरी कोठरियोंमें उनका असर अधिक होता है और चूहे ऐसीही जगहोंमें रहते हैं इस लिये पहिले उन्हींपर प्लेगका असर होता है। दाई नौकरोंको जो सदा नंगे पैर रहते हैं, ऐसी जगहमें झाड़ू बहारु देनेको जाना होता है इसलिये चूहोंके बाद इनकी पारी आती है। और तब घरकी औरतों पर जो नंगे पैरों चलनेवाली हैं उन्हींको पहले यह बीमारी होती है, जो लोग हमेशा

जूता पहने या खड़ाऊँ पहने चलते फिरते हैं उनको इस बीमारीका डर कम रहता है। इसीलिये प्लेगके दिनोंमें नंगे पैर नहीं चलना चाहिये। इस बात पर भी पूरा ध्यान जरूर रखना चाहिये। किन्तु इसमें एक कठिनाई यह है कि हम लोगोंकी स्त्रियां जिनको सदा नंगे पैर चलने फिरनेकी आदत है और रसोंई करनी पड़ती है उनके लिये इस नियमका पालन करना बड़ा कठिन होगा। इस नियमको मुसलमानोंकी स्त्रियांही सहजमें पालन कर सकती हैं। प्लेगके दिनोंमें देखा गया है कि मुसलमानोंके बनिस्बत हिन्दू ही अधिक मरते हैं और उनमें भी औरतेंही अधिक। यह भी देखा गया है कि हिन्दुओंमें भले आदमी जो सदा जूता खड़ाऊं पहने फिरते हैं वे लोग नीचे जातियोंकी बनिस्बत बहुत ही कम मरते हैं। बस जब ऐसी दशा उपस्थित है और जबकि हिन्दू औरतोंको नंगे पैर चलनेसे बाज रखनेका कोई दूसरा उपाय नहीं है तब यह बहुत जरूर है कि घरोंकी जमीनको चूनेसे पुतवा देवें। मैंने खुद इसकी परिक्षा ली है कि जमीन पर चूना पुतवा देनेसे चूहोंका मरना मौकूफ हो गया। और जब चूहे नहीं मरेंगे तब आदमी क्योंकर मरेंगे।

जो लोग घर छोड़कर चले जाते हैं और अपने घरोंकी रक्षाके लिये पहरेदार अपने अपने दरवाजोंपर बैठा

जाते हैं, ऐसा देखा गया है कि प्लेग पहरेदारोंही को हड़प करना शुरू करदेता है। बस उन लोगोंको भी चाहिये कि घर छोड़कर अपनी जानकी रक्षाके लिये भलेही वे दूसरी जगह चले जावें पर अपने घरोंमें पहरेदारोंकी प्राण रक्षाके लिये चूना जरूर पुतवा देवें। ईश्वरकी कृपासे उन लोगोंके प्राणकी रक्षा अवश्य होगी।

म्यूनिसिपलिटी अगर इधर ध्यान देवे और शहरोंमें जब प्लेगके आनेका गुमान होने लगे उस समय जिधरसे प्लेगकी चढ़ाई शुरू हो उधरकी गलियों और सड़कों पर थोड़ी दूरतक चूना पुतवा देवे तो मेरा ऐसा अनुमान है कि प्लेगका आना उस शहरमें रुक जा सकता है।

दशवां निबन्ध।

सम्मेलनको सन्देश।

[पण्डित मनोहर लाल वैद्य बिन्ध्याचल]

(१) यद्यपि प्लेगके विषयमें बहुत लोगोंने अपने अपने मतानुसार ग्रन्थ बनाये और बनते भी जाते हैं, परन्तु अभी तक यह निश्चय न हुआ कि इसको हमारे वैद्यवरोंने वैद्यशास्त्रानुसार क्या निश्चय किया है अर्थात् इसका निदान (कारण) क्या है।

वैद्य महाशयोंने कोई सन्निपात, कोई अग्नि रोहिणी, कोई विसर्प, कोई महामारी इत्यादि नामोंसे मान कर अपनी अपनी अनुमति औषधि और उपाय लिखे हैं। हकीम महाशयोंने भी अपनी अपनी रायमें ताऊन (ओबा) सरसाम छूत कहा है। परन्तु जब तक कारण दृष्टिमें नहीं उपलक्षित होता तब तक कार्यकी प्राप्ति असम्भव है। यदि कहा जाय कि निदान ठीक है, तो इससे बचनेके वास्ते क्या कर्तव्य है. और क्या औषधि होनी चाहिये? यदि आप कहैं कि यह भी बतला दिया गया है तो इतनी विशेष मृत्यु क्यों होती है? मेरी समझमें इस महा कठिन कालके कराल करबालसे बचनेके लिये एक ग्रन्थ सर्वदेशीय बनना अत्यावश्यक है और ग्रन्थ बन जाने पर चार प्रान्तोंके चार वैद्य जो कि सम्मेलनसे योग्य समझे जायँ उनके स्वीकार करने पर छपाकर योग्य मूल्य पर सम्पूर्ण प्रजाके सुखके लिये वितरण किया जाय, और प्रति वर्ष सम्मेलनमें वैद्य महाशय जो जो बातें नवीन इस महामारीके विषयमें अनुभव करें, अपने लेखोंके द्वारा सम्मेलन समितिके अधिष्ठाताके पास भेजते रहैं। सभा उसपर विचार करके पुनः छपाकर प्रकाशित करे, ऐसा प्रति वर्ष इसके विषयमें विचार करते रहनेसे अवश्य इस रोगसे बचनेका उपाय हस्तगत हो जायगा। इसलिये इस सम्मेलन द्वारा इस महा कार्यके लिये वैद्यवरोंसे परामर्श कर-

नेका निश्चय किया जाय, कि वे इस विषयमें अपना अपना विचार प्रत्यक्ष प्रमाण और अनुमानोंसे सिद्ध करके आगामि समितिके अधिवेशनार्थ तैयार कर अधिष्ठाताके पास उक्त पते पर भेज देवें।

(२) हर एक नगरके सद्वैद्य तथा हकीम महाशयोंको सभासे समाचार पत्रों द्वारा सूचना दी जाय कि वे अपना अपना नाम तथा पताके सहित लिखकर उक्त पते पर सभाके मुख्याधिष्ठाताके पास भेज दें जिससे कि आगामि वैद्यक सम्मेलनमें अधिवेशनोंकी कार्यवाही तथा चिकित्सकोंकी अनुमति भेजनेमें और विज्ञवैद्योंका चुनाव तथा उनके द्वारा सहायता पानेके हेतु नामावली बनानेमें सुगमता हो।

(३) हर एक राजा महाराजाओंके यहां वैद्य हकीम रहा करते हैं। उन महाराजाओंसे भी सम्मेलन प्रार्थना करे कि वे सम्मेलनके समय पर अपने अपने चिकित्सकोंको भेजनेकी कृपा कर अपनी हार्दिक महानुभूति इस वैद्यकसम्मेलनमें प्रकट करें जिससे कि इसके स्तम्भ स्थायीहों।

(४) हर एक वैद्यसे मेरी प्रार्थना है कि वे अपने अपने प्रान्तोंमें होनेवाली औषधियोंका पूरा परिचय सम्मेलन द्वारा प्रकट कर एक दूसरे वैद्यको सहायता देवें। क्योंकि बहुतसी औषधियां प्रायः लुप्तसी हो रही हैं।

(५) यद्यपि हमारी सरकार गवर्नमेण्टने अपनी कृपासे छापेका प्रचार करके बहुतसे ग्रन्थोंके छप जानेका प्रबन्ध कर दिया है तब भी कितने ग्रन्थ अभी तक बिना छपे पाये जाते हैं। सभा यदि योग्य समझे तो लोकोपकारार्थ उनकी प्राप्ति तथा छपवानेका उद्योग करे।

(६) इस सम्मेलनमें यह भी निर्णय हो जाना योग्य होगा कि इस समय कौन कौन ग्रन्थ वैद्यकके तथा उसके साथ साथ कुछ संस्कृतके पढ़नेसे वह विद्यार्थी वैद्यगणनामें हो सकता है।

(७) वैद्योंके विक्रयार्थ पेटेण्ट औषधियां भेजने पर यदि उसके गुणोंकी सत्यताकी जांच करके सनद देनेका प्रबन्ध सम्मेलन द्वारा हो तो भारतीय सद्वैद्योंको क्या ही लाभ होगा।

(८) इस वैद्यकसम्मेलनके वास्ते एक वृहत् कोष और दफ़्तरकी आवश्यकता है जिसके लिये भी सभा द्वारा प्रबन्ध होना चाहिये। और जिसके लिये हर एक नगरमें एक वैद्य तथा हकीम सभासद् चुने जायँ।

(९) सम्मेलनकर्ता श्रीमान् अधिष्ठातासे सविनय प्रार्थना है कि सम्मेलन होनेके पूर्व ही इसका विज्ञापन समाचार पत्रोंमें दे दिया जाय कि इस सम्मेलनमें जो चिकित्सक आवेंगे उनके ठहरनेके लिये योग्य स्थान (मकान) दिये जायँगे ऐसा होनेसे अन्य देशवासी अपरिचित वैद्य

जानेमें कदापि आगा पीछा नहीं करेंगे और वैद्यकसम्मे-
लनके लिये प्रस्तुत रहेंगे।

आशा है कि यह मेरा लेख बहुत ही सूक्ष्म श्रीमान्-
की सेवामें भेजा जाता है। स्वास्थ्य ठीक न होनेके कारण
सम्मेलनमें उपस्थित नहीं हो सका, क्षमा कर कृपया मेरे
लेखोंको सभामें पढ़े जानेकी आज्ञा देकर अनुगृहीत की-
जिये। और सभा द्वारा कार्य जो कुछ हो उसका विवरण
मुझे भेजकर बाधित करिये तो बहुत कृतार्थ होऊंगा।

ग्यारहवां निबन्ध।

आयुर्वेदोन्नतिकी आवश्यकता और उद्योग।

[दीवान विन्ध्यवासिनी प्रसाद वर्मा—शिकारपुर चम्पारन]

यह विषय प्रायः सब पर प्रकट है कि संसारमें
मनुष्य क्या पशु पक्षी आदि जीव जन्तु भी अपनी प्राण-
रक्षा और सुखके लिये यथाशक्ति यत्न करता है। यदि
शरीरमें कोई कष्टकर रोग रहा तो यह सारे सुखका आ-
धार वा आगार देह दुःखका भार जान पड़ती है, यदि
नीरोग देह रहे तो दरिद्र और कैदी भी हँसता और
गाता है और यदि रोगी रहा तो राजा क्या सम्राट

(बादशाह) भी रोता है। और सारा साम्राज्य (बादशाहत) उसके लिये तृणके समान भी उपकारक नहीं जान पड़ता बल्कि और जवाल मालूम होता है।

इसीलिये भूमण्डलके सभी सभ्य निवासियोंने पहले पहल चिकित्साशास्त्र पर विशेष यत्न किया है और उन सब यत्नशील सभ्योंमें हमारे भारतवर्षीय त्रिकालदर्शी ऋषि मुनियोंका यत्न सर्वतोभावसे सराहने योग्य है जिनके धर्मग्रन्थ वेदके साथ ही साथ आयुर्वेद (वैद्यक शास्त्र) का भी धर्मग्रन्थके समान मान बढ़ा; जिन ग्रन्थरत्नोंके इस समय लुप्त होने पर भी चरक सुश्रुतादिके संहिता ग्रन्थ भूमण्डलके सभी चिकित्सा ग्रन्थोंसे उत्कृष्ट और देदीप्यमान हैं। इन्हीं आयुर्वेद ग्रन्थोंके आधार और अनुवाद पर अरबकी हकीमी और उससे डाक्टरी चिकित्साकी सृष्टि हुई।

प्राचीन समयसे जिस प्रकार इसकी पूर्ण उपकारिता और सारवत्ता चली आती है इस समय भी सब चिकित्सा प्रणालीसे उत्तम है, और यही बड़े बड़े डाक्टरोंकी भी सम्मति है।

इधर आजकल जहां जाइये, जिधर देखिये भारतके दुर्भाग्यवश वहीं रोगोंका प्रबल उत्पात देख पड़ता है। इसके प्रतीकार वा रोकके लिये प्रत्येक जिलामें यद्यपि गवर्नमेण्टकी ओरसे कुछ न्यूनाधिक ४ या ५ हास्पिटल

और डाकृर अवश्य ही नियुक्त हो चिकित्सा करते हैं तथापि इतने बड़े देशकी जनताके लिये यह थोड़ा प्रतीकार हिमालयके बर्फ गलानेके लिये अग्निकण (चिनगारी) के समान तुच्छ और अकिञ्चित्कर है।

इससे अधिक इस उष्ण (गर्म) देशके निवासियोंके लिये शीतप्रधान देश विलायत आदिकी उत्पन्न डाकृरी औषधियां बहुधा हानिकारिणी ही होती हैं । और पुरानी जटिल बीमारी तो डाक्टरी चिकित्साके द्वारा छुटती ही नहीं बल्कि और* दृढ़ हो जाती हैं, जो प्रायः सर्ववादिसम्मत है ।

इसके अतिरिक्त बहुतसे ऐसे हिन्दू अब तक वर्तमान हैं जो डाक्टरी दवाको अशुद्ध और मद्यमिश्रित होनेके भयसे उसकी विशुद्ध औषधियोंको भी हाथसे छूते तक नहीं, चाहे प्राण ही क्यों न चला जाय ।

यों विविध रीतिसे आयु रहते भी जो सहस्र सहस्र भारतवासी औषध बिना या इसके कुव्यवहारसे मरते हैं उनकी रक्षाके लिये आयुर्वेदकी वृद्धि आवश्यक है । और जब तक नगर नगर और अच्छे अच्छे ग्राम ग्राम सद्वैद्यों-

---

* कलकत्तेके डाक्टर शिरोमणि कविराज गणनाथ सेन एम० ए० एल० एम० एस० महोदयने जो वैद्यकमें भी पारंगत हैं डाक्टरी औषधके द्वारा पुराने रोगका न छूटना ही नहीं बल्कि दृढ़ हो जाना, बलपूर्वक दिखाया है ।

का प्रवेश और औषध वितरण न होगा तब तक इस त्रुटि (टूटी) की पूर्ति (भरती) न होगी और हम लोगों के इस उद्योगका मुख्य उद्देश्य भी इस त्रुटिकी पूर्ति करना ही है।

इधर देखिये तो सकड़ों ऊंचे दर्जेके पढ़े लिखे लोग भी जीविकाके बिना नौकरीके लिये मारे मारे फिरते हैं और गवर्नमेण्टको भी विविध रीतिसे नौकरीके लिये तङ्ग करते हैं। कितने वकालत और मुख़्तारीकी ओर दौड़ते हैं। परन्तु सर्वत्र कामकी कमीसे लाचार हो लौटना पड़ता है। उधरसे हताश हो उदर पीड़ासे कुकार्यमें लग जाते और कितने धन और अन्नादिके बिना अत्यन्त कष्टभोगकर अन्तमें संसारका त्याग करते हैं। ऐसे लोगोंकी अवस्था देखकर सभी दयालु चिन्ताशील जन दुःखी एवं भीत हो रहे हैं।

ऐसी अवस्थामें यदि यह वृत्तिहीन मण्डली आयुर्वेद (वैद्यक) पढ़कर वैद्य बन सके तो न कि केवल अन्न आदिका उपार्जनकर अपने और परिवारके प्राण बचा सकेगी बल्कि उन लोगोंके भी प्राण बचा सकेगी जो समय पर उपयुक्त और उचित औषधि न पाकर असंख्य लोग रोगके कारण प्राण देते हैं और उनके परिवारकी भी रक्षाकर सकेगी जिनकी रोगके कारण या रोगीके मरणसे अत्यन्त भयङ्कर दशा उपस्थित होती है। तथा

देशके शासकों (हाकिमों)का भी यह वैद्यक पठितमण्डली उनकी प्रजाकी प्राणरक्षा आदि अनेक प्रकारसे उपकार कर सकेगी।

इन्हीं सब कारणों और अवस्थाओंको विचार कर श्रीयुत पण्डित चन्द्रशेखरधर शर्मा (मिश्र) जी महाशयने रतमाला, बगहा, जिला चम्पारनमें श्रीशालग्रामी नदी और प्रसिद्ध सिद्धपीठ तीर्थ श्रीगण्डकी चण्डीकी पुण्यभूमिमें आयुर्वेदीय श्रीचन्द्रोदयौषधालय पाठशाला स्थापित की है जहां और और संस्कृत ग्रन्थोंके अतिरिक्त छात्रोंको आयुर्वेद भी पढ़ाया जाता है। तथाच आयुर्वेदीय सूत्र रूप बातोंको आधुनिक चिकित्सा विज्ञानबलसे बढ़ाकर और कई एक सन्दिग्ध नवीन रोगोंका विशेष विवरण अन्यान्य चिकित्सा प्रणालीसे बढ़ा वा संगृहीतकर समझा दिया जाता है।

इसी प्रकार माधवनिदान आदि, रोगके निदान वा निर्णयके ग्रन्थोंमें जो आजकलके कई नये रोगोंका विवरण नहीं है वा अपूर्णप्राय है उन्हें डाक्टरी आदि मत और परीक्षासे ठीक और पूर्णकर प्रायः प्राचीन ग्रन्थके सायही बनाकर और चिकित्सा प्रकारमें भी इसी प्रकार वृद्धिकर तथाच आजकल औषधोंके नाम और गुण और परीक्षामें भी जो घोर उत्पातरूप गड़बड़ी हो रही है उसे भी ठीक कर औषधोंके छिपे गुण भी प्रकाश कर

संस्कृत श्लोक और हिन्दी भाषानुवाद सहित एक उत्तम और अद्वितीय पूर्ण ग्रन्थ उक्त पण्डित जीके द्वारा तयार हो रहा है। जो ग्रन्थकारके संस्कृत और हिन्दीके एक अच्छे कवि होनेके कारण और भी उत्तमतर हो रहा है व होगा जिसके आशयसे वैद्यकके विद्यार्थी परिचित किये जाते हैं।

इस ग्रन्थमें औषधोंके वे सब प्रयोग भी लिखे जाते हैं जिन एक ही एक औषधप्रयोगके जाननेवाले एक एक अद्वितीय वैद्य बन चिकित्सा कर रहे हैं, जिस रीतिको वैद्य लोग दो दो वर्ष सेवा करने पर भी नहीं बतलाते हैं। ऐसे वैद्योंसे धर्म और यशका उपदेश दे तथा बड़े लुब्धकोंको (लालचियोंको) रुपये भी देकर विषयका संग्रह होता है और जैसी प्रयोगज्ञ वैद्योंकी सम्मति होती है उनका नाम भी ग्रन्थमें प्रकाशित कर दिया जाता है।

साथ ही सन्दिग्ध और अलभ्य औषधियोंकी वाटिका लगाकर उनकी पहिचान ठीक करायी जाती है; रोगियों-की अवस्था ठीक आंखसे दिखलाकर उनको चिकित्सामें प्रवीणता सिखलायी जाती है जो शतशः चिकित्सार्थ समागत रोगियोंके द्वारा सुलभ होता है।

परन्तु यह विभाग इसके प्रचारकके इच्छानुसार अभी ठीक उन्नत नहीं हुआ है। कारण यह कि वह अकेले

ही कहां तक कर सकते हैं; यद्यपि दिन रात अपनी जीविकाका काम छोड़ इसी कार्य्य में लगे रहते हैं।

आपके औषधालयोंमें समागत रोगियोंसे उनके देने पर भी कुछ भी फीस या दाम नहीं लिया जाता बल्कि औषधिके सिवा असमर्थ रोगियों को, तथा आवश्यकतावश सपरिवार समर्थ रोगियोंको भी भोजन आदि भी दिये जाते हैं।

अब प्रधान लक्ष्य विषय यही है कि विद्याकी वृद्धि तथा धार्मिक भारतीय सुजनों और साधारणजनोंको भी अकाल मृत्युसे बचानेके लिये तथा देशका धन देशमें रहने, वृत्तिहीन समाजको वृत्तिमार्गप्रदानार्थ, नयी चाल पर मेडिकलकालेजोंमें जैसी पढ़ाई होती है, उनके बहुतभागोंको स्वीकृत कर आयुर्वेदके पुराने और नये उपकारक क्रमके साथ अन्यान्य सामयिक उन्नतिके कृत्य मिलाकर अच्छे सद्वैद्य निकालने के लिये हम "वैद्यक कालेज" खोलना चाहते हैं। और इसीको तब तक पाठशालाके स्वरूपमें खोल भी दिया है। वैद्यक शास्त्री पण्डित आदि मासिक वेतन पर मँगाकर काममें लगाये हैं और श्रीगणेशायनमःका यहींसे प्रारम्भ होता है।

यहांतक तो इसके कार्य्यकर्त्ताके अधीन जो काम था किया, अब आगे इस देशके सुजनोंके ज्ञान विचार और उत्साह पर निर्भर है। अबतक इसके प्रचारक और

लोगोंसे सहायता लेना उचित नहीं समझते थे (यद्यपि सर्वसाधारणकी सहायताके बिना इस कामकी पूर्णोन्नति नहीं हो सकती थी) क्योंकि उनने सभाके परोपकारक कार्य्यमें देख लिया था कि भारतवर्ष आजकल यहां तक अभागा बन गया है कि अच्छे काममें भी सहायता लेने वा सहायता करनेसे भी यहांके निवासी दूषित करते हैं—परन्तु इधर राजा साहब बस्ती श्रीपाटेश्वरी प्रताप नारायण सिंहजी बहादुर और राजा साहब महसो श्रीनरेन्द्र बहादुर पालके प्रथम राजा पड़रवना-ने कुछ ऐसी बातें इसकी उन्नतिके विषयमें कीं कि प्रचारकका भी ।विचार कुछ परिवर्तनोन्मुख होने लगा और इधर माननीय मिस्टर जे० एच० वर्नार्ड कलक्टर और मैजिस्ट्रेट जिला चम्पारनने मिस्टर सी० फेलडर साहब बहादुर कमिश्नर पटनाके सहित बहुत कुछ उत्सा-हित कर इस कामकी उन्नति करनेकी पूरी सम्मति और वचन दिये। तदनुसार इसके प्रचारकको भी हिम्मत और उत्साह हुआ और अब आप लोगोंसे सहायताके प्रार्थी हैं।

मैं भी एक छोटासा जमीदार हूं उक्त पण्डितजीके उद्योगको देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ अपने वहां भी एक औषधालय खुलवाया और वैद्यक कालेजके काममें भी तन मन धनसे साहाय्य करनेमें सन्नद्ध हूं और आप लोगों

से भी प्रार्थना करता हूं कि इस काममें यथाशक्ति सहायक होवें।

यदि आप प्रतिष्ठित वैद्य वा कविराज हैं तो आपका तो यह खास काम ही है। यदि डाक्टर लोग मिलकर उद्योग न करते तो क्या कभी डाक्टरीकी इतनी उन्नति होती? और यदि पूर्व समयके ऋषि मुनि आजकलके महानुभावोंकी भांति गुरुचेला होते तो क्या आजतक आयुर्वेदकी चर्चा रहती? कभी नहीं। आज दिन विदेशी चिकित्सा आप लोगोंको दबा रही है—डाक्टर लोग दिन दिन उन्नति करते जाते हैं—आज एक डाक्टरने अमेरिकामें नयी उपयोगी बात निकाली, वह कलही प्रकाशितहो यूरोपकी डाक्टरमण्डलीमें प्रयुक्त वा व्यवहृत होने लगी। और यहाँ आप जिस प्रयोगको जानते भी हैं, ऐसे छिपाते हैं—ऐसे छिपाते हैं कि आपके बेटे और पोते तक नहीं पाते, आपके साथही गुण भी भूगर्भमें नष्ट हो जाता है। यों क्रमशः गुणगण विहीन हो भारतके साथ ही साथ आपके वैद्यवर्गकी भी अधोगति होती जाती है। आइये अपने सच्चे आर्य्यपनको दिखाइये। जिस भारतवर्षमें विदेशीयचिकित्सा डाक्टरीके कोड़ियों दर्जनों कालेज बने हैं उसी भारतके सन्तान और वैद्योंके जीते ही—वैद्यकका एक भी कालेज नहीं? आप जोर दीजिये, तन मन धनसे अपने भावी सन्तान और सम्मान एवं भारत पर दया

कर अपनी विद्या बुद्धिसे वैद्यक कालेज खोलिये। यदि ईर्ष्यालु प्रकृति हो तो जलिये मत, संसारके निस्तारका ईश्वर यत्न करता ही है आपके दुर्भावसे क्या होता है? केवल बदनामी और पापके भागी होंगे।

यह ख्याल भी न करेंगे कि बहुत वैद्य बढ़ेंगें तो मेरी जीविका जायगी। जिस विद्याके अधिक विद्वान् होते हैं उसकी प्रतिष्ठा और अङ्गपुष्टि होती है साधारण लोग गौरवकी दृष्टिसे उसे देखकर सम्मानित कर व्यवहार-में लाते हैं। थोड़े हीमें देख लीजिये। यदि दश पांच ही डाक्टर होते, तो डाक्टरीकी महिमा भूमण्डलव्यापिनी नहीं होती न इतना प्रचार होता। इसके अतिरिक्त लाखों वैद्योंसे भी वैद्यककी आवश्यकता पूर्ण न होगी। उधर मेडिकल कालेज और यूनानी तिब्बके मदर्सोंसे डाक्टर व हकीम बढ़ते ही जाते हैं घटते केवल वैद्य-व्यवसायी ही हैं। अतः अपने उद्देश्य कालेज स्थापनको पूर्णकर अपनी उन्नति करें।

यदि आप डाक्टर या हकीम हैं तो हमें समझाना नहीं पड़ेगा। आप खुद जानते हैं कि "चिकित्साविज्ञान" के तीन रेल मार्गके द्वारा नयी नयी चालें लेकर एक ओरसे डाक्टर—एकसे हकीम और एक ओरसे वैद्य आकर रोग प्रतीकार विज्ञानके विषमस्थलमें परस्परके सब सहायक

होते हैं। यदि कोई मार्ग रुका तो विज्ञानमें वह न्यूनता आवेगी जिसका पूरा होना किसी प्रकार सम्भव नहीं। रोगका आराम करना सबका कर्तव्य है। उसी आरोग्यताका प्रधान साधन वैद्यककी सहायता कर आप अपनी और देशकी उन्नति और रक्षा कीजिये।

यदि आप धनी हैं तो इस काममें धनको लगाकर प्रसन्न होवें। यदि धर्मको भी कोई चीज समझते हों तो इसके बराबर कोई धर्म वस्तु प्यारी नहीं है। सो प्राण हीके बचानेके काममें आप सन्नद्ध हो प्राणदान करते हैं। एक ही रोगीके प्राणदान वा आरोग्य करनेसे स्वर्ग मोक्ष होता है। फिर देशके देशको नीरोग करनेके यत्न करने, वैद्य बनाकर उनके परिवारकी पालना करनेके पुण्यका कहीं ठिकाना है? सो भी यह परम्परा (सिलसिला) न जानें कितने हजारों वर्ष तक स्थिर (कायम) चली और बढ़ती जायेगी। फिर बतलाइये इस अनन्त अतुल पुण्यके शतांशमें भी कुछ और पुण्य है?

यदि देशहितैषी होवें तो देखें जापानके लोग अपने देशके हितके लिये सबसे परम प्रिय अपने प्राण पर्य्यन्त देना कुछ नहीं समझते। आर्थर बन्दरका मुहाना बन्द करनेको कितने देशहितैषियोंने प्रार्थना की थी, जहां जहाजके साथ डूब मरना या उस बिधवा विचारीकी सुबुद्धि और देशहितैषिता पर ध्यान दो जो तेज छुरेसे

अपनी छाती छेद (विदीर्ण) कर—मरती मरती अपने एक मात्र पुत्रसे कह गयी कि "ले बेटा इसी छुरेसे शत्रु-संहार कर"। इतना कहकर प्राणत्याग किया। (जापानमें यह कानून वा राज-नियम है कि जिस विधवाको एकही पुत्र होता है वह पुत्र लड़ाईमें नहीं जाने पाता विधवा-की सहायताकी दृष्टिसे घर पर ही रहता है इसी लिये विधवाने अपने प्राण देकर पुत्रको लड़ाईमें जानेके योग्य बना दिया।)

४० वर्षके भीतरही जापानकी उन्नति देखो जो पहले हिन्दुस्थानसे भी अवनत वा खराब था और अब जैसी कुछ इसने उन्नति की है, सब पर प्रकट है। भारतवर्ष अङ्गरेज महाराजकी सुनीति और सुशिक्षामें रहकर भी कुछ न सीख सका। यदि कुछ सीख सका है तो मद्यपान आदि दुर्गुण मात्र—गुणकी ओर देखिये तो लज्जासे शिर नीचा करना पड़ेगा। औषध हीके विषयमें देखिये भारत-में इतने डाक्टर हैं परन्तु यदि विलायतसे बनकर औष-धियां यहां न आवें तो हिन्दुस्तानी डाक्टर खाने बिना ही मरजायँ और इन्हीं डाक्टरी दवाओंको जापानी लोगोंने यूरोपके टक्करकी तय्यार करली है।

अब कहिये आपको भी अपने देश और आयुर्वेदके हितके लिये कुछ करना फर्ज है ?

यदि आप हिन्दू हैं तो हिन्दूको परोपकारके समान कोई कर्तव्य नहीं है। यदि आप मुसलमान हैं। तो आपके मजहबमें भी परोपकार सबसे भारी सवाबका काम है और कृस्तानी मजहब और आर्य्यसमाज आदि हिन्दू मतके नये समाजोंने तो परोपकारके बीड़े ही उठाये हैं। यदि आप नास्तिक हैं तब तो संसारसुखका चरम साधन शरीरका नीरोगत्वविधायक और देशसुदशाका उन्नायक आयुर्वेदोन्नति आपको सबसे प्रथम करणीय है। यदि आप भारतके राजा महाराजा हैं तो आप लोग चाहें तो छन भरमें ऐसे सैकड़ों काम पूर्ण हो जावें। सच पूछिये तो आपही सबकी असावधानता अथवा अनुग्रह न करनेसे भारत रसातलको चलाजा रहा है।

आप हीके कुलमें शिवि आदि महाराज होगये हैं। जिनने अपने प्राणतक भी परोपकारमें दे दिये हैं और कितने ऐसे भी राजा हुए हैं जो अपने सर्वस्व राजपाट, सम्राट या बादशाहको परोपकारार्थ दे दिये हैं तो क्या अब आप लोगोंसे हमें कुछ आशा सम्भव है?

अगर आप अङ्गरेज हैं तो हमें कुछ कहना ही नहीं है क्योंकि आपही की बदौलत भारतवर्षकी रही सही विद्या बच रही और उन्नति भी कर रही है। सब गुणोंके साथ साथ आपकी विद्या विज्ञान-प्रियताके गुणकी दुनिया कायल है और सारा संसार इससे लाभ उठाताहै।

यदि आप देशके शासक (हाकिम) हैं तब यह काम खास आपही का है। प्रजाकी रक्षा और प्रबन्ध प्रथम परमेश्वर दूसरे धरणीश्वर (राजा) हीके हाथ और कर्तव्यमें हैं। हम लोगोंके इस यत्नको समझनेवाले भी ठीक ठीक यही दोनों शासक हैं और इन्हींकी कृपासे जो कुछ होगा सो ही होगा। आप चाहें तो बातों ही से कितने बड़े बड़े लोगोंको इसका सहायक बना सकते हैं परन्तु अगर खयालमें आजाय।

यदि आप पत्र सम्पादक हैं तो आपसे क्या कहें आप तो परोपकार वा देशोपकारके ब्रती ही हैं। अगर और नहीं तो अपने अपने पत्रोंमें निरन्तर खयालकर वचनामृत (आर्टिकल) के प्रेषणप्रचार प्रयोगसे इन दीन दरिद्र मुमूर्षु भारतवासियोंके प्राण बचानेका पूर्णपणकर स्मरण रखें।

और अगर आप उन दुष्टोंमें हैं जिन्हें और लोगोंको भी परोपकार करते देखनेसे भी मिरगी आती और नानी मरती है तो आप अपना स्वभाव क्यों बदलियेगा। जो आपकी मौज हो वही कीजिये और औरोंको असगुन दिखानेको अपनी नाक ही कटा लिया कीजिये। सृष्टिके आरम्भसे आज तक आपके यशोवर्णनपूर्वक सभी सुजन तथा कविगण समझाते आये पर आप बाज न आये तो अब क्यों बाजीसे चूकियेगा।

और यदि ईश्वर न करें कहीं आप उन मक्खीचूस कंजूसोंमेंसे हैं जिन्हें सत्कर्ममें कुछ खर्च करनेसे शिरपीड़ा और अपस्मार होता है तब आपसे भी हम लोग कुछ नहीं चाहते । हमारी सुनी बातको अनसुनी कर दीजिये आपका व्यर्थ और तुच्छ धन आपहीको मुबारक होवे। हमारे दानवीर बुद्धिमान् सुजन समाज जीते रहें और उनका बेटा जीवे--जो बिना सुकर्ममें खर्च करनेके चैन ही नहीं पाते--और समीचीन दानहीसे प्रसन्न होते हैं ।

लेख अब बहुत बढ़ गया—सुजनोंसे इशारा ही काफी है ।

इस लेखको चाहै जो पढ़जाय परन्तु जो सुजान जितना ही बुद्धिमान् और विज्ञ है—उतनीही बड़ी आशा केवल उनहीसे है—आशा है कि इस उचित आशाफलदान-से आश्वासन अवश्य देवेंगे । और जिससे जो बन पड़े छोटीसे छोटी सहायतासे लेकर बड़ीसे बड़ी सहायता भी यथाविभव देनेसे त्रुटि न करें ।

हे उदार सुजन महाशयो! काम बड़ा भारी व्ययसाध्य है और आपहीका है हमलोग केवल सेवकके समान काम बजा लाने वाले कर्मचारी मात्र हैं जिसमें पूर्ण हो सो आपही करैं ।

बारहवां निबन्ध ।

एक डाक्टरकी सम्मति ।

मुझे बड़ा हर्ष हुआ कि हमारे सूबेके विद्वान लोग भी अब अपने अपने कार्योंकी ओर ध्यान देने लगे हैं । यह अत्यन्त आवश्यक है कि आप लोग इस चिकित्साकी ओर पूरा पूरा ध्यानदें और आयुर्वैदिक चिकित्साको उन्नतिदें । हममें से (मेरा मतलब डाक्टरोंसे है) बहुत कम लोगोंको संस्कृत इतनी अच्छी आती है कि हम लोग पूरी तरहसे इसकी सहायता कुछ कर सकें । मुझे इस बातके कहनेमें जराभी सङ्कोच नहीं है कि बहुतसे रोगों पर हमारे देशकी औषधियां बहुत अच्छी हैं और शीघ्र रोगमें अपना गुण दिखाती हैं । मूत्र संबन्धी, यकृत, प्लीहा सम्बन्धी और आंतोसे संबन्ध रखनेवाली औषधियां और वात सम्बन्धी रोगोंमें (आतशक, गठिया, वाईके दर्द वगैरहमें) और स्त्रियोंके अनेक रोगोंमें, तथा पुराने बुखारोंमें, संग्रहणी इत्यादिमें तो कहीं कहीं बड़ा ही गुण दिखलाती हैं ।

मैं ऊपरकी बातें अपने स्वयं अनुभवसे कहता हूं । मैंने निदान किया और मैंने अपने मित्र वैद्योंको इन रोगियोंको औषधियां देते और रोगियोंको अच्छा होते देखा है। मैं और मेरी सम्मतिमें वे डाक्टर जिन्होंने इन औषधियोंका कभी प्रयोग किया होगा अथवा देखा

होगा यह बातें अवश्य मानेंगे। **मेरे ख्यालमें बम्बई-का रजिस्ट्रेशन एक्ट बुरा नहीं है क्योंकि वह आपको मूर्ख बने हुए वैद्यों वा डाक्टरों-से घृणा पैदा करवावेगा*** आपमेंसे विद्वान वैद्य कदापि इस बातकों अच्छा नहीं समझते होंगे कि आपके सामने एक वह मनुष्य जिसने केवल एक अमृत सागर हिन्दीकी) मोल लेकर एक चूरण वालेकी दुकान खोल दी हो। राजवैद्य कहलावे यद्यपि धीरे धीरे कुछ वर्षों बाद करते करते उसकोभी कुछ आजावेगा किन्तु वह इस दोषसे तो कदापि नहीं बच सकता :—

"शतमारी भवेद्वैद्यः
सहस्रमारी तु वैद्यराट" इत्यादि

अब आप इन दोषोंको स्वयं दूर नहीं करना चाहते तो गवर्नमेंट लोगोंको हानि पहुंचते हुए देखकर इसका उपाय स्वयं करती है।†

यहां यहभी बतादेना चाहिये कि आज कल सर्कारी अस्पतालोंमें सर्कार स्वयं बहुतसी देशी बूटियोंसे काम

---

* यदि सुयोग्य वैद्योंका भी नाम रजिस्टरमें दर्ज किये जानेकी व्यवस्था होती तो हम आपकी रायसे सहमत हो सकते थे। —मन्त्री.

† ठीक किन्तु यह भी तो देखना चाहिये कि एक दुष्टको दबानेमें पचास निरीह सज्जन तो नहीं मारे जाते? —मन्त्री.

लेने लगी है। आप लोगोंको चाहिये कि आप उनके गुणोंको अच्छी रीतिसे समझ करके उनका प्रयोग करें फिर अवश्य उनका प्रचार बढ़ता जावेगा। आपसे प्रार्थना है कि आप लोग यदि मुझसे कहीं कहीं भिन्न मत हो तो मुझे क्षमा करें। मैं जो कुछ कहता हूं आपके हित हीके लिये। मैं आपको संक्षेप रीतिसे अपनी क्षुद्र बुद्धिके अनुसार उन्नतिके कुछ उपाय बतलाता हूं।

हमको अपने प्राचीन गौरवका स्मरण रखते हुए नीचे लिखी बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिये :-

(१) हमको संस्कृत पूरी तरह पढ़ना चाहिये और फिर बंगाल, मदराज़, पंजाब, महाराष्ट्र, नैपाल, जम्मू और इस देशके सब संस्कृतमें निपुण वैद्योंकी सहायता लेकर पुस्तकोंको हिन्दीमें फिरसे अनुवाद करना चाहिये।

(२) बूटियोंके शुद्ध नाम (संस्कृत ही नाम रहे), स्थान जहां वह अधिक जङ्गलकी तरह मिलती हों वा पैदा होती हैं, उन्हीं वैद्योंके द्वारा मालूम करना चाहिये।

(३) हमको सब बनियों और अत्तारोंकी औषधियों पर हमेशा भरोसा नहीं करना चाहिये।

(४) हमको औषधियोंको नियत समय, ऋतु, नक्षत्र इत्यादिमें जमा कराना चाहिये। जैसा व्याघ्रनखी उत्तरा फालगुणी नक्षत्र में।

(५) और इनसे जल्दी तय्यार होने वाली सब रोगोंकी औषधियां (गोली, चूर्ण, अवलेह, पाक इत्यादि) हमेशा ठीक रीतिसे तय्यार मिलनी चाहिये।

(६) हमको अपनी कुछ पुरानी चिकित्साएं जिनसे देशको हानि पहुंच रही हो छोड़ देनी चाहिये और अंगरेजी चिकित्साको ग्रहण कर लेना चाहिये। जैसे आँखसे मोतिया निकालनेका नया तरीका क्योंकि पुरानी रीतिसे सतियोंसे कहीं कहीं लोगोंको नुकसान हो जाता है।

(७) हमको अन्य देशकी नयी नयी बातें जो शारीरकसे (तन्दुरुस्तीकी हालतमें) ताल्लुक रखती हैं सीखनी चाहिये। और इसी तरह अनेक वैद्यक संबन्धी साईन्सेज (विज्ञानोंको) जैसा पदार्थविदय रसायन इत्यादि सीखना चाहिये। इसके अतिरिक्त इन्द्रियोंके रोगकी दशाभी मालूम होनी चाहिये (पैथौलौजी) निदानकी नयी नयी रीतियां सीखनी चाहिये; आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये चिकित्सालयों और विद्यालयों इत्यादिकी विद्यार्थियोंके लिये आवश्यकता है।

डा० प्रसादीलाल झा एल. एम. एस. कानपुर।

सम्मति और सहानुभूति।

यह बात पहले कही जा चुकी है कि इस सम्मेलनकी कल्पना और तैयारी एक पक्षके भीतरकी है। इसलिये

इतना समय नहीं मिल सका कि दूर दूरके वैद्योंके पास पहलेसे ही निमन्त्रण पत्र पहुँच जाता। यही कारण है कि मदरास, उड़ीसा, गुजरात, आदि दूर स्थानोंके वैद्य इच्छा रहनेपर भी सम्मेलनमें योग नहीं दे सके। समीपी प्रान्तोंके वैद्य महोदय भी जो दिहातोंमें रहते हैं शीघ्रतासे आनेमें समर्थ नहीं हो सके। तथापि सम्मेलनको इस बातसे सन्तोष है कि हमारे देशके बहुसंख्यक आयुर्वेद प्रेमी नरेश, महात्मा, रईस और वैद्य गण हृदयसे इस सम्मेलन-की सफलता चाहते थे। जिसका आभास निम्न लिखित तारों और सहानुभूति और सम्मतिके पत्रोंसे मिलता है। निबन्ध पाठ होनेके पश्चात ये सम्मेलनमें पेश किये गये। इन सब महोदयोंको सम्मेलनने आदर पूर्वक धन्यवाद दिया। आप लोगोंकी सहानुभूतिसे सम्मेलनको बहुत आशा और सन्तोष प्राप्त हुआ है। कई तारोंमें भेजने वाले सज्जनोंका नाम न रहनेसे उनका उल्लेख नहीं हो सका ऐसे सज्जन क्षमा करें।

तार और पत्र।

श्रीयुत पं० एस हरीदत्त भिवानी—उपस्थित नहीं हो सकूँगा, सभाकी सफलता हृदयसे चाहता हूं।

श्रीयुक्त ठाकुर गङ्गाप्रसाद तिवारी कोलम्बो लङ्का—समयाभावसे उपस्थित न हो सकूंगा, जिसका बड़ा दुःख है। सभाके कामोंसे मेरी सहानुभूति है।

श्रीयुत भीषराज रामकिशोनाथ सूरत—विलम्बसे सूचना पानेसे सभामें उपस्थित न होनेका बड़ा दुःख है। सम्मेलनके कार्यसे मेरी पूर्ण सहानुभूति है।

श्रीयुत पं० गोपालाचार्लू मदरास--मैसूर दरबारमें उपस्थित होनेके कारण इस सभामें उस्थित होनेमें असमर्थ हूं; जिसका दुःख है। सभाकी पूर्ण सफलता चाहता हूं।

श्रीयुत कालीचरण कविराज कलकत्ता—अभी कलकत्ते पहुंचा हूं; शोक है कि उपस्थित न हो सकूँगा। मेरी पूर्ण सहानुभूति है।

वैद्य रत्न आयुर्वेदाचार्य लक्ष्मीराम स्वामी जयपुर—अनिवार्य कारणोंसे उपस्थित नहोसका, शोक है। सम्मेलनके कार्यसे मेरी पूर्ण सहानुभूति है। सभाके प्रत्येक कार्यकी सफलता चाहता हूं।

पं० हजारी लाल वैद्य सिरसा—उपस्थित न हो सकूंगा। मेरी पूर्ण सहानुभूति है।

पं० जानकी लाल त्रिवेदी जयपुर—अनुपस्थितिका क्षमा प्रार्थी हूं। कार्यवाही स्वीकार है।

महन्त लक्ष्मण दास नरसिंह देवला—मेरी सर्व सम्मतिके अनुसार ही सम्मति है। ईश्वर आपके कार्यमें सफलता दे।

श्रीयुत प्रसन्नोदत सांभर—उपस्थित न होनेका शोक है। सभाकी सफलता हृदयसे चाहता हूं।

पं० सोहन लाल शास्त्री मथुरा—वर्षाके कारण सभामें उपस्थित न हो सकूंगा। हमारी सभाके सभ्य सम्मेलन की सम्मतिसे सहमत हैं।

श्रीयुत साहेब दयाल शर्म्मा अमृतसर—सभामें उपस्थित होनेमें असमर्थ हूं। जिसके लिये बड़ा शोक है।

जी. एम. शर्म्मा कलकत्ता—रोगके कारण उपस्थित नहीं हो सकता। कृपया मेरी हार्दिक सहानुभूति स्वीकृत हो।

व्यास पूनम चन्द तन सुख वैद्यआयुर्वेद पञ्चानन व्यावर—हृदयसे सम्मेलनकी सफलताका इच्छुक हूं। सभाके सम्पूर्ण प्रशंसनीय उद्देश्योंमें सम्मलित हूं। सहानुभूति रखता हूं। आशा है कि वैद्यक लेबोरेटरी स्थापन करने और हमारे निबन्धमें बताये हुए आधुनिक रीतिपर ग्रन्थ-निर्माण करनेका प्रस्ताव उपस्थित किया जायगा। मैं हर प्रकारसे सहायतार्थ प्रस्तुत हूं।

वैद्यक सम्मेलनके प्रयत्नके लिये आपलोगोंको धन्यवाद है। इसके प्रत्येक कार्यकी सफलता चाहता हूं। मित्रकी स्त्रीकी बीमारीके कारण उपस्थित न हो सकूंगा। सम्मेलनको हर प्रकारसे आज्ञानुसार सहायता प्रदान करनेको प्रस्तुत हूं। ऐसी अवस्थामें अनुपस्थितिका क्षमा प्रार्थी हूं।

पण्डित गङ्गाधर शास्त्री भट जयपुर—अनुपस्थिति क्षमा हो। सम्मेलनकी कार्यवाहीसे मैं सहमत हूं। इस कार्यसे मेरी सहानुभूति है।

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी श्री रामकृष्णानन्द गिरिजी महाराज वाघम्बरी—प्रयाग.

मैं अस्वस्थ होनेके कारण सम्मेलनमें उपस्थित न हो सकूंगा; किन्तु मैं आशीर्वाद करता हूं कि सम्मेलन सफलता पूर्वक हो। आयुर्वेदकी उन्नतिके कार्यमें सम्मिलित होना और सहानुभूति प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं। जिस आयुर्वेदसे आरोग्यता और जिस आरोग्यतासे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारो साधन सुलभ होते हैं; उसकी उन्नति देखकर किसे आनन्द नहीं होगा। आप उत्साह पूर्वक कार्य करते जायँ। परमेश्वर अवश्य सहायक होगा।

सेक्रेटरी यच. यच. दी महाराज गायकवाड़ बरोदा—निमंत्रणके लिये हिज हाइनसकी तरफसे धन्यवाद है। महाराजा साहब आज कल योरोपमें हैं इस लिये वे उपस्थित नहीं हो सकते हैं। किन्तु सम्मेलनकी प्रत्येक सफलताको चाहते हैं; और इसके उत्तम सार्वजनिक कार्यसे हार्दिक सहानुभूति रखते हैं।

प्राइवेट सेक्रेटरी यच. यच. दी ठाकुर साहेब गोंडाल नरेश| गोंडाल—निमंत्रणके लिये, धन्यवाद है,

महराजा साहेब इस समय योरपमें हैं; अतः ऐसी अवस्था-में सहानुभूति प्रकट करनेके सिवाय इस विषयमें कुछ नहीं किया जा सकता है।

श्रीमान् कुमार सरयूप्रसाद नारायण सिंह बहादुर रईस बरांव स्टेट प्रयाग.

अच्छी बात है, आप सम्मेलन कीजिये; इस कार्यमें मेरी पूर्ण सहानुभूति है। मैं भी यथाशक्य सहायतामें तत्पर रहूंगा।

चन्द्रशंकर नरहरी शङ्कर वैद्य सूरत--सभाके प्रस्ता-वोंका पूर्णतया अनुमोदन करता हूं। प्रतिवर्ष सम्मेलन होनेमें पूर्ण सहानुभूति है। सभाका कार्य करनेमें बड़ा आनन्द समझूंगा।

रामनाथ वैद्य पो० बड़ा ग्राम बनारस--समया-भावसे सम्मिलित होनेसे वञ्चित रहा। सम्मेलनमें जो प्रस्ताव पास होंगे वे मुझे भी स्वीकार हैं और, मैं प्रत्येक दशामें इससे सहानभूति प्रकट करता हूं।

वैद्य रत्न पं० हरिप्रसाद शर्म्मा आयुर्वेदीय औषधा-लय सहानपुर---पुत्र जन्य शोकाग्निसे दग्ध थाही किन्तु इसी अवसर पर कान्याके उत्पन्न और मृत्यु होनेसे तथा गृहणीके अति क्लेशित होनेसे उपस्थित न होसका। सम्मे-लनके कार्योंसे सहानुभूति है। (शोक)

हकीम भगवानदास स्वामी घाट मथुरा--मेरी इस सदनुष्ठानसे हार्दिक सहानुभूति है। अस्वस्थ होनेके कारण उपस्थित नहो सकूंगा।

कविराज हरिनाथ शर्मा कविरत्न, और कविराज माधवचन्द्र शर्मा तर्कतीर्थ कलकत्ता।

मान्यवर महोदयाः!

कृपापरैर्यः प्रहितः प्रसादोः,
मूर्द्धनाधृतः साञ्जलिना मयासः॥
आयुष्मना केन न धारिवेदः,
उन्नाम्यते नैव प्रचार्य्यतेवा॥ १॥
कार्य्येषु दक्षैः परिचालितायाः,
विश्वानुकम्प्ये विहिते सभायाः॥
विज्ञाप्यते सन्मतिरस्ति नित्यं,
अकिंचनेनापि मया भवत्सु॥ २॥
यावार्षिकी पर्व्वतराजपुत्र्याः,
पूजा शरत्काल समुद्भवा स्यात्॥
तत्साधनार्थं स्वगृहं यियासुः,
शक्तो न यातुं समितौ सुदीनः॥ ३॥
संगम्य गङ्गा यमुना च यत्र,
परस्परं जीवनतः समेता॥
अवश्यमस्मिन् मिलिताः सुवैद्याः,
प्रवाहतः कार्य्यकरा भवेयुः॥ ४॥

कृष्णलालखजांचीहवेली खर्गपुर मुंगेर अनुपस्थिति क्षमाहो, सहानुभूति है।

त्रिपाठी छत्रपालशर्मा राजातारी।

श्रीमान्सन्निज वैद्यताजितसुरा धीशाग्र्य वैद्योत्तम-
श्रीतीर्थेश गृहो बुधोत्तम जगन्नाथाभिधानः कृती॥
आयुर्वेद विवृद्धिसंरतमना गोष्ठी समुल्लासको।
नन्देन्नित्यमलं विशिष्ट सुकुल प्रख्यात वंशयांशुमान्॥ १॥
दयादलन्ते सितयाश्विनस्य ब्राह्मयामिनेसाय मुपेतमत्र।
तदन्ति गोष्ठी दिवसस्यसत्त्वाद् यन्नाग तिर्थे समये ज्ञसत्त्या॥
सद्वैद्य विद्या बहुवृद्धि नन्द्यो ह्यसततांयोतितरामनिन्द्यः।
तत्रत्यसत्सूरि विचारचारु विचित्र निष्कर्षइहा पिशाद्यः॥ २॥
वसुरसाङ्क धरामितवैक्रमे इषसितेशशिनोह्नि शिवा तिथौ।
लिपिरियं कलितालिताऽस्त्वलं बहुमुदे भवताम्महतांहृदि॥

व्यास गणेशप्रसाद् शर्मा वैद्य सीतापुर—इस कार्यके लिये धन्यावाद है। आयुर्वेदिक परीक्षा कौंसिल करनेका प्रयत्न किया जाय।

रामप्रसाद शर्मा वैद्य विद्यासागर मथुरा—मैं एक सप्ताह पूर्वसे बाहर था अतः पत्र २७ को मिला इससे पहुँच नहीं सकता-मेरी सम्मति भी सम्मेलनके प्रस्तावों-में समझी जाय। हिन्दी संस्कृतमें वैद्यक ग्रन्थ प्रचारार्थ एक कम्पनी खुलनी चाहिये। जिससे सस्ते दामोंमें ग्रन्थ-

प्रचलित किये जायँ। भारतव्यापी महासभा स्थायी होनी चाहिये।

पं० चन्द्रशेखर वैद्य दलमऊ—कारणवश उपस्थित न हो सकूंगा। सभाकी कार्यवाही लिखियेगा। आपके उद्देश्योंसे मैं सहमत हूं।

पं० सोमेश्वरदत्त शुक्ल एम. ए. (प्रीवियस रईस) मसूरी--अस्वास्थ्य और अन्य कारण उपस्थित होनेसे उपस्थित होनेमें असमर्थ हूं। आपके कामोंसे सहानुभूति है।

महावीरप्रसाद मालवीय कोंढ़—अवकाश न मिलनेसे उपस्थित होनेमें विवश हूं सभासे पूर्ण सहानुभूति है।

पं० रघुवरदयाल वैद्यशास्त्री कानपुर—सम्मेलनके कार्योंसे मेरी सहानुभूति है।

आ० मा० ज्योतिषरत्न पं० जीयालाल चौधरी सम्पादक प्रकाशक मासिकपत्र फर्रुखनगर जिला गुरदासपुर--अनाथालय हिसारको जारहा हूं अतः उपस्थित न हो सकूंगा प्रयागमें अधिवेशन होना बहुतही उत्तम कार्य है। तन मन धनसे इससे सहानुभूति है।

गङ्गाप्रसाद राजवैद्य उचहरा—अस्वास्थ्यके कारण उपस्थित नहीं हो सकता हूं किन्तु तन मन धनसे सम्मिलित हूं।

वैद्यवर पं० छोटेलाल व बाबूलाल शर्म्मा छिपरामऊ—वै० भि० पं० शिवराज शर्माके देवलोक जानेके कारण उपस्थित न हो सकूंगा सब विषयोंमें सम्मिलित हूं।

जगन्नाथ पुच्छरत अमृतसर पञ्जाब-सम्मेलनके लिये बधाई है। कार्यकी सफलता चाहता हूं।

श्रीब्रजमोहन मिश्र राजवैद्य दरभङ्गा-पञ्चमीको माता-का श्राद्ध है अतः उपस्थित होनेमें असमर्थ हूं। मेरी आन्तरिक कामना और ईश्वरसे प्रार्थना है कि सम्मेलन सफलतापूर्वक समाप्त हो।

कविराज श्रीविनोदलाल सेन कलकत्ता-दुर्गादेवीजी-की प्रत्येक वर्ष घरमें पूजा होती है। हम लोग सकुटुम्ब गृह-को चले जाते हैं अतः अनुपस्थिति क्षमा योग्य है। देवी जीसे प्रार्थना है कि उद्देश्योंमें सफलता प्रदान करें और मेरी इससे पूर्ण सहानुभूति है।

पं० गङ्गादत्त पन्त काशीपुरी-इस वर्ष उपस्थित नहीं हो सकता। कार्योंसे सहानुभूति है।

पं० पदुमप्रसाद पण्डा वैद्य विन्ध्याचल-उपस्थित न हो सकूंगा। सभामें जो बातें स्वीकृत हों उसमें सम्मि-लित समझा जाऊं। और बा. विनायक सिंह राजवैद्य सम्मलित समझे जायँ।

चौधरी के० विश्वराज धन्वन्तरि एम० डी० यस० सी० कानपुर-मेडिकल रजिस्ट्रेशन एकृके प्रस्ताव पर आप जो पास करें उसके साथ मेरी सहानुभूति है।

भैरोदत्त असापा पो० धामणगांव बरार-निमन्त्रणके लिये धन्यवाद है, बाहर रहनेके कारण पत्र विलम्बसे

प्राप्त हुआ अतः उपस्थित न हो सकूंगा क्षमा किया जाऊं। सभाके सम्पूर्ण महाशयोंका जो मत है वह मुझे मान्य है।

पं० श्रीनिवासाचार्यस्वामी वैद्य अलवर-राजपूताना-वैद्यकका एक बड़ा कालेज खोला जाय, गवर्नमेन्टके प्रबन्ध-से उसमें परीक्षा नियतकी जाय सम्भव है कि गवर्नमेन्ट प्रार्थना करने पर अवश्य सहमत होगी। आनेको सर्वथा उद्युक्त रहने पर भी समयाभावसे सम्मिलित न हो सकूंगा। इससे सर्वथा सहमत हूं।

श्रीदत्त शर्म्मा वैद्य भिवानी पञ्जाब-आयुर्वेदकी उन्नतिके विचारमें हर समय संलग्न हूं इससे हार्दिक प्रेम है। गत वर्ष दिल्लीके सम्मेलनमें गया था पर कार्यवाहीसे वञ्चित रहा क्योंकि उसकी कार्यप्रणाली उर्दूमें थी। एतराज भी किया पर उसका कोई असर नहीं हुआ इस सभाका कार्य्य दो दिनकी चिल्लाहटके तरह न होना चाहिये। वैद्य लोग रङ्गबिरंगे नोटिस देकर उन्नतिके बजाय वैद्यकको रसातल पहुंचा रहे हैं। इसके लिये उचित प्रबन्ध होना चाहिये, सभाके लिये तन मन धनसे उद्योग करूंगा समयाभावसे उपस्थित न हो सकूंगा।

पं० लीलाधर वैद्य बुलन्द शहर-बिलम्बसे सूचना मिलनेसे उपस्थित न हो सकूंगा; कार्योंसे सहानुभूति है।

रामचन्द्रशर्म्मा श्रीमद्गोकुल-उपस्थित न हो सकूंगा; सम्मेलनकी सफलता चाहता हूं।

वैद्य भूषण पं० कृष्णचन्द्र शर्म्मा दाधीच रतलाम-इस कार्यसे पूर्ण सहानुभूति है।

वैद्यशास्त्री दीनानाथ शर्म्मा दिल्ली--सेवामें उपस्थित होनेको सर्वथा कटिबद्ध था। किन्तु आवश्यक कार्यवश इसबार आगमन न होगा। पं० सूर्यप्रसाद वाजपेयीजीके उपस्थित होनेसे सन्तोष है। वे पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। आपके कार्योंमें मेरी भी सहानुभूति है।

पं० गङ्गादत्त शर्म्मा वैद्य जेवर बुलन्दशहर--कार्य-वश उपस्थित नहीं हो सकता। सम्मेलनके कार्योंसे मेरी सहानुभूति है।

पं० केशवदेव स्वामी शास्त्री रामपुर--राजकीय कार्य-से बिलकुल ही अवकाश नहीं है। इसलिये उपस्थित न हो सकूंगा। सम्मेलनसे सहानुभूति है।

श्रीयुत रामप्रसादजी नागपुर--सभाके कार्य्योंमें पूर्ण सम्मिलित हूं।

श्रीयुत गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्री छुईखदान स्टेट--दुर्गा पूजाकी यहां छुट्टी नहीं मिलती अतः अनुपस्थिति क्षमा करनेकी कृपा कीजिये। ईश्वर आपको सफलता दे।

श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद मुदर्रिस मढ़पुरा फर्रुखाबाद-छुट्टी नहीं है; कार्य्योंकी सफलता चाहता हूं।

श्रीयुत सदाशिवराय अभ्यङ्कर बिठूर--सभाकी स-म्मति मेरी भी सम्मति है।

श्री० कविराज के० के० सेन गुप्त भिषग्रत्न कलकत्ता--मेरी सम्मेलनके साथ पूर्ण और हार्दिक सहानुभूति है। भारतवर्षके समस्त वैद्योंको एकत्रित किया जाय। पत्र २४ को मिला अतएव सम्मिलित न होनेका बड़ा दुःख है। क्षमा कीजिये, कृपया सभाकी कार्य्यवाहीसे सूचित कीजियेगा और कार्य्यकर्ताओंमें सम्मिलित कीजियेगा। भविष्यमें इसमें कार्य करनेको अपना गर्व समझूंगा।

पं० नन्दकिशोर शर्म्मा, वैद्य फुलहट्टी बाज़ार आगरा—स्वास्थ्य ठीक न रहनेके कारण उपस्थित न हो सकूंगा। क्षमा कीजियेगा।

पं० शिवनारायण द्विवेदी नागरपाड़ा जयपुर—इन दिनों स्वास्थ्य बहुत बिगड़ा है। नित्य ज्वर आता है। खेद है कि उपस्थित न हो सकूंगा, क्षमा प्रार्थी हूं।

पं० धरणीधर वैद्य सदर बाज़ार सागर—कार्य विशेषसे सम्मेलनमें उपस्थित न हो सकूंगा इसके। साथ हार्दिक सहानुभूति है, आयुर्वेदप्रचारिणी सभा प्रयागका उद्योग सराहनीय है।

पं० सिद्धेश्वरी जी बनारस—मेरा सम्प्रति समय अति निकृष्ट दशाको पहुंच गया है। सकल बन्धु विच्छेद द्वारा मेरी किसी कार्यमें सोत्साहप्रवृत्ति नहीं होती है। इससे क्षमापणीय हूं।

धर्म्ममार्त्तण्ड पं० काशीनाथ वामन लेले वाई—समयाभावसे उपस्थित होना नहीं बन पड़ेगा, आयुर्वेदका प्रचार और उसकी अड़चनें दूर करनेके विषयमें सभाके उद्देश्य बहुत ही उत्तम हैं, सभाके उद्देश्य और कार्य्योंसे मेरी पूर्ण सहानुभूति है. ।

श्रीयुत बद्री सिंह वर्म्मा अटिया उन्नाव—सभाके प्रस्तावोंसेमेरी पूर्णतया सहानुभूति है । कार्यवश उपस्थित नहीं हो सकता हूं । अतः क्षमाका प्रार्थी हूं ।

कविराज श्री हेमचन्द्र सेन कलकत्ता—परम पूजनीय महामहोपाध्याय पितृदेव श्री विजयरत्न सेनके नामका निमन्त्रण आया; किन्तु खेद है कि उनका २१ सितम्बर को देहान्त हो गया, क्षमा कीजियेगा योग्य कार्य लिखियेगा ।

पं० छोटेलाल वैद्य कर्वी बांदा—बीमार हो जानेके कारण सभामें उपस्थित नहीं हो सकता, क्षमा कीजियेगा ।

श्रीयुत चुन्नीलालजी मथुरा—अपने ग्रन्थोंके साथ हिन्दीकी मेटरियामेडिया, एनाटमी आदि पढ़ाई जायँ, ये पुस्तक मँगाकर सभामें रखी जांय, लघुत्रयी वृहत्रयी-के भरोसे पर ही काम न होगा । पदार्थविज्ञान आदि-की पुस्तकें हिन्दीमें सम्मिलित की जायँ, बिना सर्जरी सीखे अभिप्राय सिद्ध नहीं हो सकता ।

पं० बोधराम शर्म्मा राजवैद्य नोहर जमाना–विशेष कार्यवश सम्मेलनमें उपस्थित नहीं हो सकता। सहानुभूति है।

पं० सत्यनारायण प्रसाद तिवारी वैद्य भीरा गोविन्द पुर रायबरेली–अनुपस्थितिके लिये दुःख है। कार्योंसे पूरी सहानुभूति है।

श्रीयुत पण्डित शिवनाथजी शर्मा लखनऊ–कार्यवश सभामें आ नहीं सकता इसकी क्षमा प्रार्थनाका देना उचित समझता हूं।

पण्डित गोपाल रामचन्द्र विवलकर वैद्य नासिक––नवरात्रिके कारण उपस्थित न हो संकूगा। सभाके कार्य्यसे पूर्ण सहानुभूति है। मुझसे सम्मेलनकी जो सेवा हो सकेगी, अवश्य करूंगा।

आ० घनानन्द पन्त ऋषिकुल हरिद्वार–सभाके सब कार्योंमें हार्दिक सहानुभूति है। कार्यवश अनुपस्थितिकी क्षमा मांगता हूं।

श्रीयुत् पं० मुरलीधर शर्म्मा फर्रुखाबाद–तिब्बी-कान्फरेन्समें सम्मिलित होनेके लिये जो बात सभामें निश्चय हो उसे सूचित कीजियेगा।

वैद्य भूषण पं० नारायण दत्तशर्म्मा सदर बाजार मेरठ–सम्मेलनसे पूर्ण और हार्दिक सहानुभूति है। ईश्वर कृपासे सम्मेलन सफलता पूर्वक होवे।

पं० हजारी लाल शर्म्मा वैद्य सिरसा पञ्जाब—सभाके साथ सहानुभूति प्रकट करता हूं। कार्यवश उपस्थित नहीं हो सकता।

श्रीयुत् रामरत्न पाल वैद्य नसीराबादकी छावनी--

अनिवार्य कारणसे उपस्थित न हो सकूंगा, जिसका अत्यन्त शोक है। सभाकी कार्यवाही छपने पर भेजियेगा। सम्मेलनके साथ मेरी सहानुभूति है।

श्रीयुत् गयाप्रसाद पाठक वैद्य संडला—माताका स्वर्गवास होजानेसे उपस्थित न हो सकूंगा (आपके इस दुःखमें सम्मेलन समवेदना प्रकट करता है। मन्त्री) सम्मेलनसे पूर्ण सहानुभूति है। सम्मेलनका विवरण भेजियेगा। सहायताको प्रस्तुत हूं।

पं० विन्ध्येश्वर नाथ वैद्य चौपटिया लखनऊ—समयाभावसे आगमन नहीं हो सकता है। सभाकी सम्मतिसे मेरी सहानुभूति समझी जाय।

पं० गदाधर शर्म्मा वैद्य चौक लखनऊ—पत्र विलम्बसे मिला मैं अन्यत्र जा रहा हूं; अतः अनुपस्थितिका क्षमा प्रार्थी हूं। सभाकी ओरसे जो कार्य्य निश्चित हों उनमें मेरी अनुमति है।

पं० जगदीश दत्त शर्म्मा भिवानी हिसार—आपके मन्तव्योंसे पूर्ण सहानुभूति है; किन्तु दुःखकी बात है कि अपने पिता पं० देवदत्तजीके स्वर्गवास हो जानेके कारण

उपस्थित नहीं हो सकूंगा (सम्मेलन हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता है--मन्त्री)।

आयुर्वेद महोपाध्याय पं० वासुदेव शास्त्री ऐनापुरे गिरगांव बम्बई–पत्र विलम्वसे मिलनेके कारण अवकाश न मिलनेसे अनुपस्थिति क्षमा की जाय। सभाके प्रस्तावों और मन्तव्योंसे पूर्ण सहानुभूति है। रजिस्ट्रेशन एक्टका विरोध अवश्य होना चाहिये। यदि आप ऐसा करें तो बम्बईकी वैद्यक सभा आपकी कृतज्ञ होगी।

पं० सीताराम जी दुबे रईस प्रोप्राइटर औषधालय एस. आर. दुबे जी ज्योंती मैनपुरी–इसी अवसर पर औषधालयमें कार्याधिक्य हो जानेसे सेवामें उपस्थित न हो सकूंगा। सम्मेलनके कार्योंसे मेरी सहानुभूति है। ईश्वर कृपासे कार्य सफलता पूर्वक हो।

त्र्यम्बक गुरुनाथ काले वैद्य पनवेल–यह समय सम्मेलनके लिये बहुत जरूरी है। इस समय आनेका समय नहीं यह बहुत खेदकी बात है, लेकिन मेरा सब दिल उधर ही है।

कविराज एस. सी. सेन कविरञ्जन राजवैद्य लखनऊ— निमन्त्रण पत्रका धन्यवाद; घरसे बाहर हूं, आ नहीं सकता। कार्योंकी सफलता चाहता हूं।

श्रीयुत ज्ञानेन्द्रदत्त शर्मा वैद्य सीतापुर—सभाके सम्पूर्ण कार्योंमें हार्दिक सहानुभूति रखताहूं और उसकी सेवाके लिये तन, मन, धनसे उद्यत हूं।

श्रीयुत डाक्टर महेन्दुलाल गर्ग मथुरा छावनी—शोक है कि मैं प्रयाग न आसकूंगा। उचित होगा कि हिन्दू यूनीवर्सिटीके स्थापकोंको आश्वासन दिया जाय कि सम्मेलन चेष्टा करैगा कि वैद्यक विभागके लिये एक खास चन्दा किया जाय। जब यूनीवर्सिटीसे पास करके वैद्य बनैंगे, -तब सरकार उनका अवश्य आदर करेगी।

पं० उमाशङ्कर शर्म्मा उपेन्द्र एल. एच. कालिज पीलीभीत—सम्मेलनके उत्सव पर आनेको चित्त बड़ा लालायित हो रहा है; किन्तु कार्य प्रतिरोधक हो रहा है। आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये उपयोगी ग्रन्थ बनाये जायँ। वैद्योंकी एक सूची बनायी जाय और उनको अन्य वैद्यों-के आये हुए अनुभूत नुसखे ज्ञात कराये जायँ। इसके साथही अनुभूत योग भेजनेवालों को १० अनुभूत योग सम्मेलन दे।

पं० रामदयालु शर्म्मा वैद्य अजमेर—मेडिकल रजिस्ट्रेशन ऐक्ट पर मेरा भी पूर्णरूपसे विरोध है। सभासे एक रिजोल्यूशन बम्वई सरकारको भेजा जाय।

आयुर्वेद मार्तण्ड पं० चिरंजीव लाल शर्म्मा वैद्य मेरठ—कतिपय आवश्यक अड़चनोंके कारण उपस्थित पूर्वक सेवासे वञ्चित रहूंगा। मेरी इससे हार्दिक सहानुभूति है। हमें शुद्ध हृदयसे व्यक्तिगत स्वार्थको स्थान न देते हुए

एकमात्र आयुर्वेदोन्नतिको लक्ष्यमें कर उत्साह पूर्ण उद्योग करते रहना चाहिये ।

पं० कृपाराम कुष्ट चिकित्सक हावड़ा—आशा है कि प्राचीन आयुर्वेद ग्रन्थोंकी भाषा टीकाएं इस अवसरमें ठीक करनेका प्रयत्न अवश्य होगा--हो सका तो स्वयं उपस्थित हूंगा ।

श्रीयुत बाबू महाबीरसिंह धर्म्म कुसुमाकर कानपुर--स्थानीय आवश्यकीय कारणोंसे उपस्थित न हो सकूंगा । सम्पादक महाशय "पूर्ण" सम्मेलनसे सहमत है ।

श्रीयुत कल्याणसिंह वैद्य अजमेर—सम्मेलनके साथ पूर्ण महानुभूति है । रजिस्ट्रेशन एक्टके विषयमें सरकारसे अवश्य प्रार्थना की जाय । भारतवर्षकी प्रत्येक सभाएं मिलाकर एक सार्वदेशिक आयुर्वेद प्रचारणी सभा बनायी जावै और उसकी भिन्न प्रान्तोंमें शाखा सभाएं रहैं ।

वैद्य शास्त्री दीनानाथ शर्म्मा देहली—परमावश्यक कार्यसे आगमन न होगा । इस कार्यमें तन, मन, धनसे कटिबद्ध हूं । सभाकी सम्मतिसे सहमत हूं । भारतवर्षके प्रसिद्ध वैद्योंको योग्यतानुसार उपाधि प्रदान कर नाम दर्ज करके सर्वमहाशयोंके नामसे प्रार्थनापत्र न्यायाधीश गवर्नमेंटके पास भेजना आवश्यक है ।

पं० चन्द्रिकाप्रसाद वैद्य पो० विधनू कानपुर--सभाके नियमोंमें एक यह भी नियम होना योग्य है कि आयुर्वेद

प्रचारणी सभा प्रयाग द्वारा प्रमाणपत्र प्राप्त महानुभाव ही इस सभाके अधिकारी व सभासद हो सकें। सभाके इस प्रस्तावके स्वीकृत करनेसे मैं सभाका अवैतनिक उपदेशक होकर सभाके उद्देश्योंका और आयुर्वेदके सिद्धान्तका प्रचार यथा समय करूंगा।

पं० भूपनारायण जी शर्म्मा हतगाम-- इस अवसर पर छुट्टी नहीं अतः आना दुःसाध्य है, बड़ा दुःख हुआ। आपका परिश्रम सफल हो।

आयुर्वेदमार्तण्ड पं० शिवदयाल शर्मा वैद्य ग्राम धरसंगदपुर--स्त्री पुत्र दोनों बीमार हैं अतः सभाकी सेवा न करसकूंगा। इस सम्मेलनके साथ मेरी सहानुभूति है।

महोपदेशक चन्द्रशेखर शास्त्री राजवैद्य बिन्दकी जिला फतेहपुर--सहानुभूति है; हर समय शक्त्यानुसार मदद करूंगा। साप्ताहिक पत्र निकालनेका प्रबन्ध किया जाय।

आयुर्वेद पञ्चानन पं० भवानीशङ्कर शर्म्मा नीमच-सभासे सहानुभूति है। वैद्योंकी बृहत् कमीटी होकर आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये डिपूटेशन द्वारा चन्दा एकत्र किया जाय और एक बृहत आयुर्वेदीय महाविद्यालय खोला जाय अथवा हिन्दू यूनीवर्सिटीसे शामिल इस विद्यालयको कायम किया जाय। पाठ्य क्रम ऐसा नियत किया जाय जिससे वैद्यविद्या और डाक्टरी दोनों में निपुण हों। परीक्षा लीजाय और योग्यतानुसार पदक

प्रदान किये जायँ महाराजोंसे प्रार्थना की जाय कि वे ऐसे परीक्षोत्तीर्ण वैद्योंको अपने राज्यके औषधालयमें नियत करें। मेडिकल रजिस्ट्रेशन ऐक्टका खण्डन भारत सरकार तक पहुंचाया जावे।

पं० चन्द्रशेखर शुक्ल वैद्य सनिगवां कानपुर--उत्तम औषधियोंको खोजकर एक सामयिक आवश्यकतानुसार नवीन ग्रन्थ सविस्तर मातृभाषा हिन्दीमें लिखेजांय। जो वैद्य जिस विषयका उत्तम ज्ञाता हो उसको वही विषय लिखनेको दिया जाय। अंग्रेज़ीकी इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिकाके तुल्य ग्रन्थ बनाये जांय। एक समिति स्थापन की जाय जोकि औषधियों और क्रियाओंको सरल रीतिसे प्रकाशित करे। नितान्त प्रयोजनीय कार्यसे सम्मेलनमें उपस्थित न हो सकूंगा; किन्तु इससे सहानुभूति है। शक्त्यानुसार सेवाके लिये तत्पर हूं।

पं० ब्रजमोहन अवस्थी वैद्य पो० कमालपुर जिला सीतापुर—आवश्यकीय कार्यसे विवश होकर सम्मिलन न होसका। क्षमा कीजिये।

पं० गोपाल मिश्र शर्म्मा वैद्य गया--सभासे सहानूभूति है। हमारे भ्राता उपस्थित होंगे।

पं० हजारीलाल शर्म्मा सिरसा हिसार--इस समय सम्मेलन संक्षेपसे किया जाय। देहली दरबारके समय

देहलीमें किया जाय तो अच्छा है। कार्यवश उपस्थित न हो सकूंगा।

पं० ब्रजभूषण अग्निहोत्री सिरसा हिसार—वैद्यक पाठशाला तथा औषधालय खोले जायँ। औषधियोंके पहिचानकी व्यवस्था की जाय। वार्षिकोत्सवका समय नियत रूपसे न हो। छुट्टी न होनेसे आनेमें असमर्थ हूं। इससे सहानुभूति है।

पं० ताराचन्द दुबे बिलासपुर—स्वास्थ्य ठीक न होनेके कारण उपस्थित न हो सकूंगा। सम्मेलनके कार्यों से मेरी सहानुभूति है। ऐसा प्रयत्न कीजिये कि देशवासियोंका झुकाव अपने देशकी सस्ती जड़ी बूटियोंकी औषधियोंकी ओर आकर्षित हो।

पं० गङ्गाधर शास्त्री जयपुर-देशी विदेशी ग्रन्थोंसे उपयुक्त ग्रन्थ बनाये जायँ।

पं० साहेब दयाल शर्मा आयुर्वेद मार्तण्ड राजवैद्य अमृतसर-अभी मृत स्त्रीका कृत करके हरिद्वारसे आया हूं, छोटे छोटे बच्चे हैं। अतः आनेमें इस समय असमर्थ हूं। सहानुभूति है। स्वर्गीय शङ्करदाजो शास्त्री पदेके चलाये हुये ढङ्ग पर कार्य किया जाय।

श्रीश्यामा प्रसन्न सेन शास्त्रिणः कलकत्ता—क्लेशके कारण आनेमें असमर्थ हूं। मेरी इससे पूर्ण सहानुभूति है। जो सनातन आर्य गौरव भास्कर लुप्तप्राय हो रहा है, उसका

पुनरुद्धार देखकर किस आर्यसन्तानको आनन्द नहीं होगा ? ईश्वर आपका उद्देश सफल करे।

पं० चन्द्रशेखर शास्त्री पो. बगहा चम्पारन—अनिवार्य कारणसे उपस्थित न हो सकूंगा। इससे सहानुभूति है। वैद्यक कालेज स्थापित किये जायँ। कष्टसे प्राप्त होनेवाली औषधियोंको प्राप्त करनेका प्रबन्ध किया जाय।

पं० हरिशङ्कर शर्मा वैद्य मऊ, वाजिदपुर दरभङ्गा—संस्कृत बङ्गला आदि की पुस्तकें हिन्दीमें उलथा की जायँ। ग्राम ग्राममें प्रति मास सभा हो जिसका केन्द्र प्रयाग हो, मासिकपत्र निकाला जाय। औषधालय स्थापित किया जाय।

पं० शिवचन्द्र जी वैद्य हरिद्वार—अमृतसरके हिन्दू कान्फरेन्सके जलसेके कारण न आसकूंगा। वहां आयुर्वेद-विषयमें प्रस्ताव पेश करनेकी अभिलाषा है। मेरी पूर्ण रीतिसे सहानुभूति है। इसकी उन्नतिका प्रबन्ध करूंगा। मैं एक आयुर्वेदोद्धारक कम्पनी बना रहा हूं।

रघुनाथ दास पटना—आनेमें अशक्त हूं। अपना प्रतिनिधि भेजा है।

पं० रामचीज पांडे अरवल-स्वास्थ्य ठीक न रहनेसे आनेमें असमर्थ हूं। मेरी इससे सहानुभूति है।

सम्पादक साधु बड़ोदा—अस्वास्थ्यके कारण स्वयं अनुपस्थित होकर प्रतिनिधि भेजा है।

पं० गोविन्द माधव मिश्र कलकत्ता—आनेकी चेष्टा करूंगा। मेरी पूर्ण सहानुभूति है। सेवा करनेमें त्रुटि न करुंगा।

श्रीयुत पं० एस. राम चन्द्र जनरल सेक्रेटरी आल इण्डिया हासपिटल असिस्टेण्ठ सर्जन असोसियेशन चिक पेट बङ्गलोर—निमन्त्रणके लिये धन्यवाद। दुःखसे कहना पड़ता है कि मैं इस अवसरपर आ न सकूंगा। सभाकी सफलता चाहता हूं।

हकीम बैजनाथ मुरादाबाद—इस अवसर पर अवश्य आता; किन्तु कुछ झंझटोंसे न आसका; कार्योंसे सहानुभूति है।

भोगी लाल, त्रिकम लाल वकील सम्पादक धन्वन्तरि गुजरात-ऐसे मङ्गलमय समयमें मैं अवश्य आता किन्तु कुछ अनिवार्य कारणोंसे सम्मेलनमें उपस्थित सज्जनोंके दर्शन न कर सकूंगा। सम्मेलनमें जिन विषयोंकी चर्चा होने वाली है वे बहुत उपयोगी हैं; उनके साथ मेरी सहानुभूति है। परमेश्वर परिश्रम सफल करे।

पं० वच्चूप्रसाद शर्मा रघुनाथपुर सारन—देशमें इतने वैद्य हैं परन्तु आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये आपके समान किसीका ध्यान नहीं है। समयाभावसे उपस्थित नहीं हो सका। इसके लिये मैं दुःखित हूं।

पं० रामचन्द्र दीक्षित नोहर हिसार—मैं आनेके लिये तैयार था किन्तु अकस्मात अड़चनमें फँस गया। सभाके कामोंसे मेरी सहानुभूति है।

पं० राजा राम द्विवेदी तिलसहरी कानपुर—अस्वस्थ हो जानेके कारण नहीं आसका। सभाके कार्यसे मेरी सहानुभूति है।

कविराज क्षीरोद चन्द्रसेन गुप्त कविरत्न कलकत्ता—दुर्गापूजाके कारण स्वयं उपस्थित नहीं हो सकूंगा। किन्तु हृदयसे सम्मेलनकी सफलता चाहता हूं। मेरी समझमें अष्टाङ्ग आयुर्वेदके उद्धार और प्रचारका प्रयत्न होना चाहिये। आपका प्रयत्न प्रशंसनीय है।

पं० हरिनाथ शर्मा पनवेल सतारा—परमात्मासे प्रार्थना है कि आपका उद्देश्य सफल हो; और उन्नति पूर्वक आपका काम हो। आपका विचार प्रशंसनीय है। मैं नहीं आ सका इसके लिये क्षमा चाहता हूं।

वैद्य गौरीशङ्कर मणि शङ्कर शर्मा वैद्यभूषण खम्भात—आपका वैद्यकविद्या विषयक प्रेम और प्रयत्न देख अन्तः-करणसे प्रसन्न हुआ। बाहरी आघातोंसे आयुर्वेद जर्जर हो रहा है इसकी रक्षा करनी चाहिये। आपकेसे दृढ़ निश्चयी पुरुषोंकी देशको आवश्यकता है। सम्पूर्ण वैद्यों-को सहायता करनी चाहिये। समय कम रहनेसे मैं उप-स्थित नहीं हो सका। ईश्वर सम्मेलनको सफलता दे।

चि. चू. दामोदरगोविन्द वराड़पांडे भण्डारा—सम्मेलनके कार्योंसे मेरी सहानुभूति है। समयकी न्यूनतासे स्वयं उपस्थित नहीं हो सका।

पं० महेशानन्द शर्मा नन्द प्रयाग—ईश्वर सम्मेलनको सफलता सम्पन्न करे। शिलाजीतको लेकर दूकानदार लोग बड़ी ठगाई और फ़रेब करते हैं। सम्मेलन सर्वसाधारण-के जाननेको यदि शुद्ध शिलाजीतका निर्णय छाप दे तो उत्तम हो। मेरे शिलाजीतको आयुर्वेद महोपाध्याय पं० शङ्करदाजी शास्त्री पदेने पसन्द किया था।

पं० केशवदेव शास्त्री वैद्य बनारस—सम्मेलनके कार्य-से मेरी हार्दिक सहानुभूति है। वैद्योंको इस ओर ध्यान देना चाहिये। आगामी वर्षसे नियमबद्ध कार्य होना चाहिये।

पं० भुवनेश्वर झा बल्लीपुर दरभङ्गा-सम्मेलनके साथ मेरी सहानुभूति है। वैद्योंमें परस्पर प्रेम, मित्रता और एकता होनी चाहिये। यह कार्य सम्मेलनके द्वारा सिद्ध हो सकता है।

पं० नन्दलाल हकीम अबोहर फीरोजपुर--आप धन्य हैं, ईश्वर आपको सफलता दे। सम्मेलनमें जो मन्तव्य स्वीकार होंगे उनके अनुसार चलना मैं अपना कर्तव्य समझूंगा।

पं० जयकृष्ण शर्मा शोभापुर हुशङ्गाबाद-साहित्य सम्मेलनके साथ वैद्यक सम्मेलन कर बड़ी बुद्धिमानीकी गयी है। साहित्य सम्मेलनकी देखा देखी वैद्योंमें उत्साह बढ़ेगा। औषध निर्माणका काम अलग होना आवश्यक है। जड़ी बूटियोंका बगीचा होना प्रयोजनीय है। औषधियोंकी पहिचानके लिये प्रदर्शिनी हो। वैद्यक शिक्षाका समुचित प्रबन्ध होना चाहिये।

पं० किशोरीदत्त राजवैद्य रिवाड़ी—सटीक सटिप्पणयुक्त संस्कृत वैद्यक ग्रन्थ प्रकाशित होने चाहिये। आयुर्वेदके निन्दकोंका मुंह बन्द करनेके प्रयत्न होने चाहिये। वैद्योंमें परस्पर स्नेहभाव बढ़ाना चाहिये। अपनी अनुभविक क्रिया सब पर प्रकट कर देनी चाहिये। देशी नरेशोंसे सहायता लेनेका प्रयत्न होना चाहिये।

पं० ठाकुरप्रसाद शर्मा सीतापुर--वैद्यक साहित्यकी उन्नतिसे हिन्दी साहित्यकी अङ्गपुष्टि होगी। साहित्यका उन्नत होना ही किसी देशकी उन्नतिका कारण है। अतएव वैद्यक साहित्यकी उन्नति होनी चाहिये। सबसे प्रथम वैद्यक ग्रन्थोंकी एक सूची बनायी जाय। अन्य भाषाओंके प्रकाशित बढ़िया ग्रन्थ अनुवादित हों। आयुर्वेदकी अधोगति देशी वैद्योंके कारणसे है। अपने लाभका शतांश वे भी आयुर्वेदके लाभकी परवाह नहीं करते। वैद्य नामधारी धूर्तोंके छलसे देश तङ्ग है। शुद्ध आयुर्वैदिक

औषधियोंकी बिक्रीके लिये कार्यालय होना चाहिये। आयुर्वेदकी उन्नति स्वतन्त्र रूपसे की जाय।

कुंवर शिवराजसिंह गाजीपुर—सम्मेलनके साथ मेरी सहानुभूति है। अन्य विद्याओंकी अवनतिके साथ ही वैद्यक विद्याको भी बहुत धक्का पहुंचा है। वैद्यक विज्ञानकी उन्नति होनी चाहिये। जैसे प्रत्येक अङ्गकी पुष्टिसे शरीर पुष्ट होता है तैसे प्रत्येक साहित्यकी उन्नतिसे देश उन्नत होगा।

पं० बालकृष्ण वैद्य मथुरा—वैद्योंमें परस्पर सहानुभूतिका वर्ताव होना चाहिये। निष्कपट होकर वैद्यककी उन्नतिके लिये अपने अनुभव प्रकट करने चाहिये। सर्वत्र आयुर्वैदिक औषधालय खुलने चाहिये। सर्वत्र वैद्यक सभाएं स्थापित होनी चाहिये। सम्मेलनके कार्योंसे हमारी सहानुभूति है।

पं० चुन्नीलाल कूर्माचलमन्त्री आयुर्वेदीय सभा मथुरा—(इस पत्रमें मथुराके २८ वैद्योंके हस्ताक्षर हैं) वैद्यक सम्मेलनके साथ हमारी हार्दिक सहानुभूति है। वैद्योंमें एकता होना आवश्यक है। निदान, चिकित्सा, निघण्टु और शारीर विभागोंका संशोधन होना चाहिये। प्रचलित संस्कृत विद्यालयोंकी कक्षाएं खुलवानेका प्रयत्न होना चाहिये।

पं० रामनारायण मिश्र लखनऊ--संस्कृत वैद्यक ग्रन्थोंका उत्तम हिन्दी अनुवाद होना चाहिये। डाक्टरी और हकीमी ग्रन्थोंका मिलानकर संशोधन किया जाय। वैद्यक पढ़ानेके लिये सुविधाजनक पाठ्य पुस्तकें बननी चाहिये। वैद्योंमें परस्पर प्रेम भाव बढ़ानेके लिये प्रत्येक नगरमें वैद्यक सभाएं स्थापित होनी चाहिये। जिनमें इस बातका प्रयत्न किया जाय कि वैद्योंमें परस्पर कलह न हो। संपूर्ण वैद्य निष्कपट होकर एक दूसरेसे सलाह लें और परस्पर सलाह बतावें। अनुभूत प्रयोग प्रकाशित कर दिये जाया करें।

पं० बदरीनाथ मिश्र सोकासा -सम्मेलनके कार्यसे मैं सहमत हूं। सभी भाषाओंके वैद्यक ग्रन्थोंकी सहायता लेकर उपयोगी वैद्यक ग्रन्थ हिन्दीमें बनने चाहिये। लुप्त ग्रन्थोंके उद्धारका प्रयत्न होना चाहिये।

पं० मुरलीधर शर्मा राजवैद्य फरुखनगर--कुछ गार्हस्थ्य झंझटोंके कारण उपस्थित नहीं हो सकूंगा। सम्मेलनके साथ मेरी सहानुभूति है। वैद्यकमें शारीर संबन्धी नयी पुस्तकें तैयार होनी चाहिये। जिनमें फुफ्फुस, आहार और प्रवास नालिकाका विस्तृत वर्णन हो।

पं० रामप्रसाद वैद्य इटावा--वैद्योंमें परस्पर एकता होनी चाहिये। वैद्योंके अनुभूत प्रयोगोंकी पुस्तक अलग छपनी चाहिये। निदान ग्रन्थका पुनः संस्कार होना

चाहिये। चिकित्सा और शारीर खण्डका भी संशोधन हो। एक वैद्यक विद्यालय स्थापित होना चाहिये।

श्रीयुक्त कल्याण सिंहजी वैद्य अजमेर--प्राचीन आयुर्वैदिक ग्रन्थोंका सरल हिन्दीमें अनवाद होना चाहिये। निघण्टु, शारीर, निदान, शल्यचिकित्सा, औषधि निर्माण, काय चिकित्सा, स्वास्थ्यरक्षा और वैद्यक कोष विषय पर स्वतन्त्र हिन्दी ग्रन्थ बनने चाहिये। इस कार्यके लिये एक लिमिटेड कम्पनी होनी चाहिये। जड़ी बूटियोंकी प्रदर्शिनी होनी चाहिये।

पण्डित चिन्तामणि पन्त भीमताल--ईश्वर आपकी सार्वदेशिक हितचिन्तना पूर्ण करे। सम्मेलनके कार्योंसे मेरी सहानुभूति है।

पं० काशीप्रसाद वैद्य विलासपुर—शारीरिक अस्वास्थ्यके कारण उपस्थित न हो सकूंगा। ईश्वर सम्मेलन निर्विघ्न समाप्त करे।

पं० त्रिविक्रम शर्मा सारन—सम्मेलनका उद्योग प्रशंसनीय है। शल्यचिकित्सा और रसायन विद्या पर स्वतन्त्र ग्रन्थ बनना चाहिये। सम्मेलनके कार्योंसे मेरी सहानुभूति है।

पं० हरिप्रसाद शर्मा वैद्यरत्न सहारनपुर--सम्मेलनके कार्यसे मेरी सहानुभूति है। स्थायी कार्यालय स्थापित कर सम्मेलनका कार्य भारतव्यापी कर लेना चाहिये।

पं० रामदत्त शर्मा वैद्य आगरा- सम्मेलनके कार्यसे मेरी सहानुभूति है। ईश्वर आपको सफलता दे।

वैद्यराज पं० गङ्गा सहाय शर्मा सीकर—सम्मेलनके होनेसे मुझे बड़ा हर्ष है। ऋषिप्रणीत और नये संशोधित ग्रन्थ पढ़ने पढ़ानेका क्रम प्रचलित करना चाहिये। सम्मेलनके कार्योंसे मेरी सहानुभूति है।

ठाकुर महीपतिसिंह ज़मीन्दार और हुबलालसिंह वर्मा बुदवन--ईश्वर आपके कार्यमें सहायक हो। सम्मेलनके कार्योंसे हमारी सहानुभूति है।

साधु सुधारिणी सभा बड़ोदा -सम्मेलनके साथ सहानुभूति है। आशा है वैद्यककी उन्नतिके कार्य स्थायी रूपसे आरम्भ होंगे। हमारे प्रतिनिधि अधिकारी श्रीमान जगन्नाथ दास विशारद उपस्थित होंगे।

पं० नारायणशङ्कर वैद्य स्वामी नारायणमगडी अहमदाबाद--यदि पत्र पहले मिलता तो बड़ी प्रसन्नतासे सभामें योग देता। आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये जिस कार्यको आपने अनेक कठिनाइयां सहकर उठाया है उसमें ईश्वर आपकी सहायता करे। आशा है आगामी सम्मेलनमें सम्मिलित होनेका सौभाग्य ईश्वर कृपासे प्राप्त होगा।

पं० लक्ष्मीनारायणजी राजवैद्य जबलपुर—कार्यवश आ नहीं सका; किन्तु चित्तसे सम्मेलनकी सफलताका ही ध्यान था।

श्रीयुक्त शिवचन्द्रजी वैद्य हरिद्वार—पं० शङ्करदाजी शास्त्री पदेके कामको फिर प्रचलित देख बड़ा आनन्द हो रहा है। कागजी घोड़े दौड़ानेके बदले इस सम्मेलनके द्वारा कुछ काम भी होना चाहिये। आप ऐसे निस्प्रही वैद्यक भक्तको ऐसा कोई मनुष्य न होगा जो सहायता न दे। अनेक सभा सोसायटियोंके काम स्वार्थ और लोभके कारण बिगड़ जाते हैं। इससे आशा है आपका चलाया काम निस्वार्थ होनेसे चलेगा और सहायक भी आपको मिलेंगे। 'शरीरंपालयामि कार्यं साधयामि' के तत्वपर काम होनेसे मैं सब तरहसे सहायता करनेको तैयार हूं।

पं० अम्बिकादत्त पन्त रानीखेत—सम्मेलनसे पूर्ण सहानुभूति है। डाकृरी यूनानीसे संग्रह कर एक हैण्डबुक बननी चाहिये, जिसमें अनुभूत प्रयोग हों। वैद्य डाइरेकृरी बने, वैद्योंमें एकता बढ़ायी जाय, सर्वत्र सभाएं स्थापित हों। आयुर्वैदिक सम्मेलन स्वतन्त्र होना चाहिये।

आतुरालयका चन्दा।

जबलपुरके पण्डित गोविन्दप्रसादजी शास्त्रीने अपील करते हुए कहा कि अन्यत्र अभी हो अथवा न हो किन्तु कमसे कम प्रयागमें आयुर्वैदिक अस्पताल अर्थात् आतु-

रालय अवश्य स्थापन होना चाहिये। प्रयाग आयुर्वेद-महामण्डलका कार्यालय स्थान होनेके अतिरिक्त तीर्थ-स्थान है। अतएव इस स्थानका अभिमान प्रयाग वासियों-कोही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारतवासियोंको है। इस बातके सुनते ही झींझकके वैद्यवर पण्डित लालमणि त्रिपाठी जीने एक गिन्नी सभापति महोदयके सामने रख दी। स्वर्णमुद्रा देखते ही चारो ओरसे वाह वाह होने लगी। सभापति महोदयने अपने पाससे भी १०१ रुपये देनेका वचन दिया। इस बातसे वैद्योंमें उत्साह बढ़ा और निम्नलिखित चन्दा लिखा गया। सुखसागर औषधालय (दारागञ्ज) के स्वामी आत्मानन्द सरस्वती महाराजने आतुरालयके लिये एक हजार रुपये देनेका वचन दिया है। किन्तु आप अपने रुपये पहले नहीं देना चाहते। जिस समय आतु-रायलका काम आरम्भ हो जायगा अथवा निश्चय पूर्वक उसके आरम्भ होनेका समय आ जावेगा तब आप अपनी सहायताके रुपये दे देवेंगे। यही नहीं बल्कि अन्यत्रसे भी आतुरालयके लिये सहायता लानेका प्रयत्न करेंगे। स्वामी जी इसके लिये अखिल भारतकी वैद्य मण्डलीके धन्यवाद पात्र हैं।

स्वामी आत्मानन्द सरस्वती महाराज १०००)
सभापति महोदय १०१)
पं० लालमणिजी त्रिपाठी झींझक १५) नगद

पं० गोविन्दप्रसाद शास्त्री जबलपुर	११)
पं० कालीचरण शुक्ल प्रयाग	१०)
पं० हरिश्चन्द्र शर्मा अजमेर	११) नगद
पं० सिद्धिनाथ दीक्षित कानपुर	५)
पं० रामेश्वरनाथ चतुर्वेदी प्रयाग	१०१)
पं० देवकीनन्दन त्रिपाठी प्रयाग	५१)
पं० गुलजारीलालजी कानपुर	७)
पं० रामचन्द्रजी वैद्य शास्त्री अलीगढ़	१०)
सैयद छेदाशाह वैद्य कानपुर	५)
पं० धरणीधरजी झा वैद्य बरा	५)
पं० शिवरतन वाजपेयी रहवां	५) नगद
पं० छोटेलालजी वैद्य कानपुर	५१)
लाला जयकुमार जैनी वैद्य प्रयाग	५१)
पं० जयनारायण वैद्य प्रयाग	१०)
पं० स्वामीदयालु वाजपेयी कानपुर	५)
पं० क्षमापति वाजपेयी लखनऊ	११)
पं० ब्रजगोपालजी वैद्य लखनऊ	११)
हकीम मनमोहनलालजी प्रयाग	२५)
लाला जग्गीलालजी प्रयाग	५)
पं० हरदेव जी शर्मा वैद्य कलकत्ता	११)
जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	१०१)
लिखा गया	१६१८)

सभापति महोदयने यहांके रईसोंको भी इस कार्य-के लिये उत्साहित करनेका प्रयत्न किया और उनमें से कई सज्जनोंने इस विषयमें अपनी अनुमति भी प्रकट की है। आशा है यहांके रईस इस विषयकी ओर ध्यान देंगे और अपने नगरकी एक बड़ी आवश्यकता पूर्ण कर केवल आयुर्वेदका ही उपकार नहीं करेंगे बल्कि असं-ख्य दीन भारतवासियोंका अनन्त आशीर्वाद लूटेंगे। क्योंकि यहां आतुरालय होनेसे केवल प्रयाग वासियोंको ही नहीं बल्कि असंख्य तीर्थयात्रियोंको भी लाभ पहुंचेगा। सभापति महोदयने कहा कि यहांके रईस श्रीमान् लाला रामचरणदास राय बहादुर महोदय आयुर्वेदकी उन्नतिके विशेष अभिलाषी हैं। इसलिये इस फण्डके कोषाध्यक्ष वे ही बनाये जायँ।

औषधियोंका प्रदर्शन।

इसके पश्चात कई वैद्योंने अपनी बनायी हुई औ-षधियां दिखायीं, और सभापति महोदयके कहनेसे बनानेकी विधि भी कह सुनायी। प्रयागके लाला सोहन-लाल जैन वैद्यने ताम्र और श्वेत अभ्रकका सत दिखलाया। आपने कहा कि ताम्रको शुद्ध कर शुद्ध गन्धक लेकर शार्ङ्ग-धरकी पद्धतिसे इसे तैयार किया है। अजमेरके पण्डित हरिश्चन्द्रजीने कई उत्तम उत्तम रस दिखलाये। बज्राभ्रक और उसकी कृतिके भिन्न भिन्न स्वरूप बतलाये। सूर्योदय,

मकरध्वज, पञ्चामृत गुग्गुल आदि दिखलाये। आपके पास रसौषधियोंका संग्रह बहुत अच्छा है।

अनुभूत प्रयोग।

जब कई वैद्य अपनी अपनी बनायी औषधियां दिखा चुके तब पूर्ण उत्साहके साथ वैद्य लोगोंने अपने अनुभूत प्रयोग कहने आरम्भ किये। किशुनपुर निवासी प्रयागप्रवासी **पण्डित कालीचरण शुक्ल** वैद्यजीने एक जड़ी दिखायी और कहा कि इसके दिखाने मात्रसे विषमज्वर और बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। यदि किसी स्त्रीको प्रसव न होता हो तो इसे कमरमें बांधनेसे शीघ्र और बिना कष्टके प्रसव होता है। कानमें डालनेसे भी विष दूर होता है। अन्तमें आपने बतलाया कि यह जड़ी अपामार्गकी है! **सभापति महोदयने** कहा कि छिलका निकालकर इसकी जड़ जलमें पीस थोड़ी काली मिर्चके साथ देनेसे हैजेमें लाभ होता है। दिनमें कईबार देना चाहिये। पण्डित **रामनाथजी वैद्यने** कहा कि इसकी जड़से सांपका विष भी दूर होता है। इसकी शाखा दोनों कानमें लगावे और दूषित खून निकाले तो दस्त आता है। जिससे विष कम होता है। बराके पण्डित

धरणीधरजीने कहा कि विषमज्वर दूर करने और सुख प्रसव करानेके सिवाय गर्भस्थ पुत्र या कन्याकी परीक्षा भी इसके द्वारा होती है। गर्भवती स्त्रीसे अपामार्गका पेड़ उखाड़नेको कहे। यदि पूरी जड़के साथ उखड़ आवे तो समझो कि लड़का होगा; किन्तु यदि जड़ टूट जावे तो समझो कि लड़की होगी। अजमेरके पण्डित **हरिश्चन्द्र जीने** कहा कि इसकी जड़ तभी उखाड़नी चाहिये जब सूर्यस्वर चल रहा हो; पुष्प नक्षत्रमें उखाड़ना श्रेयस्कर है। प्रयागके पण्डित **शिवरामजी पाण्डेयने** कहा कि अथर्ववेदमें अपामार्गका पाठ है। तपेदिकमें इसके जीरेको देनेसे लाभ होता है। जुखाम कफ और खांसीमें अन्तधूमविधिसे इसके जीरेकी भस्मकर अदरख और पानसे चूसे तो लाभ होता है। मात्रा दो रत्तीसे चार रत्तीतक। इसके खड़े दानेभी शहद और अदरखसे देनेसे लाभ होता है। कलकत्तेके पण्डित **भूरालालजी** मिश्रने इसका अनुमोदन किया। **जगन्नाथप्रसाद शुक्लने** कहा कि खूनी बवासीरमें इसके बीज चावलके धोवनके साथ देनेसे फायदा होता है। जिस स्त्रीका पुष्पावरोध हुआ हो उसकी योनिमें अपामार्गके जड़की पोटली रखनेसे पुष्पावरोध और योनिशूल नष्ट होता है। इटावाके पण्डित **रमाकान्त-जीव्यासने** कहा कि कास श्वासमें अपामार्गके पञ्चाङ्गकी भस्म देनेसे (शहदके साथ ?) लाभ होता है। हकीम

मनमोहनलालजीने कहा कि अपामार्ग भस्मसे हर-ताल भस्म अच्छी बनती है। प्रयागके पण्डित **केदार-नाथजी चौबे** वैद्यने कहा कि अपामार्गके जड़की छाल दो माशे गोलमिर्चके साथ देनेसे कासश्वास नष्ट होता है। पत्तेके रसकी नास लेनेसे अर्द्धावभेदकमें लाभ पहुंचता है। इसके बीज पीसकर शहदके साथ चटानेसे मधुमेह दूर होता है। मूत्रावरोधमें इसकी जड़का छिलका दो माशे पावभर जलमें पीसकर पिलानेसे पेशाब खुलता है। दिनमें दो बार देना चाहिये। **अलीगढ़**के **पण्डित रामचन्द्रजी** वैद्यशास्त्रीने कहा कि इसके पञ्चाङ्गका धूम्रपान करनेसे श्वास रोग नष्ट होता है। मैंने इसके सिगरेट बनाकर दिये लोगोंको बड़ा लाभ हुआ। रींवाके पण्डित **बाल्मीकिजी राजवैद्य**ने कहा कि अपामार्ग-का स्वरस और सोहागा लगानेसे सेहुआं आराम होता है। रक्त अपामार्गकी जड़को बिच्छूके डङ्कमें छुलाकर फिर बिच्छू पकड़ लिया जाय तो वह डङ्क नहीं मारेगा। पण्डित **हरदेवशर्मा**ने कहा कि अपामार्गका पञ्चाङ्ग बकरीके दूधमें पीसकर लगानेसे पांच दिनमें आराम होता है। **बाबू जैकुमार जैनी** वैद्यने कहा कि अपामार्गकी एक पत्ती गुड़के साथ देनेसे शीत पूर्वक ज्वर नष्ट होता है। इसके जीराकी खीर बनाकर खिलानेसे भस्मक रोग अच्छा

होता है। इसके क्षारसे यकृत, प्लीहा, गुल्म, कासश्वास, आराम होता है। पं० रामचन्द्रजी वैद्यशास्त्रीने कहा कि अपामार्गकी पत्तियोंका रस बच्चोंके मुंहमें लगानेसे मुखका निनांवा अच्छा होता है। सभापति महोदयने कहाकि हैज़ा, मलेरिया आदि पर वैद्य लोग अपनी राय दें तो सरकारका भी उपकार हो। पण्डित केदारनाथजी वैद्यने कहा कि पहले हैज़ा मलेरिया आदि बहुत कम होते थे और साधारण औषधियोंसे ही ये रोग नष्ट हो जाते थे। पहलेतो शहरोंमें ही दो एक हकीम, वैद्य होते थे। अब उचित खानपानके अभावसे रोग बढ़ गये हैं। पहले समयमें इतने मिक्श्चर काममें नहीं आते थे। केवल गुर्चसेही पित्तादि व्याधि दूरकी जाती थीं। मिट्टीके तेल और रेलके धुएंसे भी बीमारियां बढ़ी हैं। पण्डित शिवरामजी पाण्डेने कहा कि मुझे बचपनका स्मरण है; पहले इतने रोग न थे। मिर्जापुरमें केवल एक वैद्य थे। उससमय केवल बुखारके मरीज़ अधिक आते थे। चालीसवर्ष पहलेके रोगी भी आजकलके साधारण मनुष्योंसे अधिक बलवान थे। पहले शीतलाकी औषधि नहीं की जाती थी। छूतछातसे रोगोंका फैलना उससमय भी माना जाता था। प्रायः बुद्धि बढ़ानेके प्रयोग भी लोगोंको दिये जाते थे। बुद्धि बढ़ानेमें शङ्खपुष्पीका उपयोग

होता था। शङ्खपुष्पी मृगी आदिमें भी काम आती है। शङ्खपुष्पीका दो तोला पञ्चाङ्ग एक छटाक पानीमें पीस कर थोड़ी शक्कर मिलाकर छानले। इससे मृगी और अपस्मारमें लाभ होता है। मिर्जापुरके पण्डित **रामनाथशर्माने** इसका अनुमोदन किया।

लाला **जग्गीलालजीने** कहा कि समुद्रफल (इज्जल) दो माशा लेकर दो तोले केलेकी जड़के रसमें पिलानेसे सङ्खिया, धतूरा, अफीम आदि कोई भी विष हो उतर जाता है। यदि केलेका रस न मिले तो केवल जलमें देना चाहिये। यदि एक बार देनेसे फ़ायदा न हो तो दुबारा देवे। तीन बार देनेसे कैसा ही विष हो उतर जाता है। **सभापति** महोदयने कहा कि विष दूर करनेके लिये वमन विरेचन कराना कभी न भूलना चाहिये। और भी कहा कि समुद्रफलको गोमूत्रमें भिगोकर गोली बनाले। इससे ज्वरमें हित होता है। पण्डित **शिवनन्दनजीमिश्रने** कहा कि पिण्डोरमिट्टीसे जमीन लीपकर एरण्डके पत्ते बिछावे और उस पर पित्तज्वरवालेको बैठावे तो तीन चार बार ऐसा ही करनेसे १०४ डिग्री तकका ज्वर उतर जाता है। रीवांके पण्डित बाल्मीकिजीने कहा कि यह भाव प्रकाशमें लिखा है; इससे केवल ताप हटेगा किन्तु ज्वर नहीं छूटेगा।

सभापति और प्रतिनिधियोंका आभार ।

मन्त्री जगन्नाथप्रसाद शुक्लने सभापति महोदयको अनेक धन्यवाद दिये और कहा कि आपकी विद्वत्ता और योग्यताके कारण सम्मेलन सफलतापूर्वक हुआ । जैसे अनुराग और दृढ़तासे काम करनेकी अभिलाषा आपमें देखी गयी और भविष्यमें भी सम्मेलनको दृढ़कर स्थायी कार्य करनेका उत्साह जैसा आपमें देखा गया, उससे यही मालूम पड़ता है कि सौभाग्यसे ईश्वरने ही हमें ऐसा सभापति दिया है; जिसके लिये हम अपनेको धन्य मानते हैं । हमें ऐसे सभापति प्राप्तकरनेमें जिन पण्डित कन्हैयालालजी गोपालाचार्य और पण्डित झाबरमलजी शर्माकी सहायता प्राप्त हुई है, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट किये बिना हमसे नहीं रहा जाता । इसके पश्चात सभामें पधार कर उसकी शोभाको कई गुणा बढ़ानेवाले सम्पादक महोदयोंका हृदयसे आभार मानना हमारा कर्तव्य है। सभापति महोदयके साथ जो अन्य सुयोग्य सज्जन पधारकर हमारा उत्साहबढ़ानेके कारण हुए हैं उन सबोंको भी हमारा हार्दिक धन्यवाद है। जो प्रतिनिधि दिल्ली, मेरठ, अलीगढ़, लाहौर, विजयगढ़, विजनौर, नागपुर, जबलपुर, बरेली, उन्नाव, रायबरेली, लखनऊ, कानपुर, गया, बनारस, दर्भङ्गा, पटना आदि स्थानोंसे पधारकर सम्मेलनको सफल और शोभापूर्ण करनेके कारण हुए हैं, उन्हें भी हम प्रेमपूर्वक धन्य-

वाद देते हैं और हमारे प्रबन्धोंकी त्रुटिके कारण उन्हें जो असुविधाएं भोगनी पड़ी हैं उनके लिये हम विनीत-भावसे क्षमा मांगते हैं। इसके उत्तरमें प्रतिनिधियोंकी ओरसे पण्डित हरिगोविन्दजी शर्मा कर्ण सिकन्दरपुर, पण्डित रामचन्द्रजी शर्मा अलीगढ़, पण्डित रामभजन शर्मा जबलपुर और पण्डित महादेवजी शर्मा कलकत्तावासी-ने सम्मेलनकी स्वागतकारिणी सभा और उसके उद्योगियों-को धन्यवाद दिया।

आगामी सम्मेलन।

आगामी सम्मेलनके लिये लाहौरके देशोपकारक सम्पादक पण्डित ठाकुरदत्त जीने निमन्त्रण दिया था, कलकत्तेके सज्जनोंकी इच्छा थी कि आगामी सम्मेलन कल-कत्तेमें हो; किन्तु कानपुरके उत्साही प्रतिनिधियोंकी उत्कट कामना थी कि आगामी सम्मेलन कानपुरमें हीहो। इस विषयको लेकर बहुत वादविवाद हुआ। अन्तमें यही निश्चय हुआ कि कानपुरके उत्साही सज्जनोंकी इच्छा-को मान दिया जाय और आगामी सम्मेलन कानपुरमें ही किया जाय। यह भी कहा गया कि जहाँ तक होसके आगामी सम्मेलन शीतकालमें हो और सम्मेलनके साथ औषधि, जड़ी बूटी, वैद्यक ग्रन्थ आदि वैद्यक सम्बन्धी प्रदर्शिनी भी हो। यह भी निश्चय हुआ कि स्टैण्डिङ्ग

कमिटी आगामी वर्ष योग्य वैद्योंको उपाधि प्रदान करने-का भी विचार करे।

विदाईका भाषण।

इसके पश्चात् सभापति महोदयने विदाईका भाषण किया। आपके कथनका भाव था कि "हम लोग देश प्रदेशसे आकर मिले थे और तीन दिनों तक अपने आयु-र्वेदकी दशा पर विचार करते रहे। यह तीन दिनोंका समय बहुत ही आनन्दप्रद था; किन्तु अब यह कहते हुए हमारा हृदय भरा आता है, नेत्र अश्रुपूर्ण होरहे हैं कि अब हम लोग जुदा होकर अपने अपने घर चले जावेंगे। दरअसलमें जुदाईका समय बहुत ही हृदयद्रावक होता है, पत्थरके कलेजेको भी पानी कर देता है! अब हमलोग बिदा होंगे। अब मैं सम्मेलनके विसर्जनकी घोषणा क-रता हूं। किन्तु यह बिदाई और यह विसर्जन दुःखप्रद होनेपर भी परिणाममें सुखप्रद है। हम लोग जब देवता-का आराधन-पूजन करनेके पश्चात् विसर्जन करते हैं तब अन्तमें कहते हैं कि " पुनरागमनायच " इसी भाँति यह विसर्जन पुनः आगमनके लिये है। आगामी वर्ष हम सब फिर एकत्र होंगे, फिर मिलेंगे और फिर यही आनन्दका दृश्य दिखाई पड़ेगा।" आपका कथन ऐसा जादूसे भरा हुआ था कि उपस्थित सज्जन रोने लगे। सभापतिसे लगाकर

सभी प्रतिनिधि अश्रुपूर्ण होगये। अनेक सभाएं, अनेक कानफरेन्स और सम्मेलन देखे गये, पश्चिमी भावोंकी प्रधानताके अनेक दृश्य देखे गये; किन्तु यह दृश्य कुछ विचित्र ही था। इससमयका सच्चा प्रेम, आपसकी सहानुभूति और आयुर्वेदका अनुराग यदि वैद्योंमें स्थायी रूपसे रहा तो आयुर्वेदके उद्धारमें बिलम्ब नहीं समझना चाहिये। यह दृश्य बहुत ही आशाप्रद और बहुत ही अद्भुत और आनन्दकारी था।

सभापतिको उपाधि प्रदान।

स्वागतकारिणीके सभापति पण्डित शिवरामजी पांडे वैद्य महोदयने कहा कि सभापति महोदयको हमारे अनन्त धन्यवाद हैं। आपकी योग्यता और विद्वत्तासे हम लोग मुग्ध हैं। आप वैद्योंमें "वैद्यावतंस" हैं। अतएव मेरा प्रस्ताव है कि सम्मेलनकी ओरसे आपको "वैद्यावतंस" की उपाधि प्रदान की जाय। उपस्थित मण्डलीने सहर्ष प्रस्तावको स्वीकार कर सभापति महोदय और धन्वन्तरि महाराज तथा आयुर्वेदके नाम पर जय घोष किया।

सभापतिकी बिदाई।

दूसरे दिन आश्विन शुक्ल ८ को कलकत्तेके प्रतिनिधियोंके साथ सभापति महोदय प्रस्थानित होगये। आप-

को पहुंचानेके लिये स्वागतकारिणी सभाके सभ्य स्टेशन तक गये थे। वहां भी पुष्पवृष्टि और जयघोष हुआ। उस समयका दृश्य भी दर्शनीय था। उससमय करुणारस साक्षात विद्यमान था। गाड़ीकी घण्टी होचुकी थी गाड़ी चलनेको तैयार थी, कि डेढ़ दो मिनटके बीचमें ही सभापति महोदयने अपने आशुकवि होनेका परिचय दिया। बातकी बातमें आपने तीन श्लोक बनाकर जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, पण्डित शिवराम पाण्डे वैद्य और पं० रामभजन शर्मा वैद्यको समर्पित किया। पाठकोंके देखनेके लिये हम उन्हें नीचे उद्धृत करते हैं।

जीयाज्जगन्नाथ बुधोद्य शुक्लः।
शुक्लोऽथ कीर्त्यागुणा सिन्धुचन्द्रः।
यस्य प्रसादादभवत्प्रयागे।
प्रेमा महान् वैद्य हृदन्तरेषु ॥ १ ॥
स्थास्यामि वच्मि हृदयागतमद्यसर्वम्।
देवं चिराय शिवराम बुधं च सेवे ॥
इत्थं विचार शत नन्दित चेत सोमे।
देवेन हन्त विपरीत विधिर्व्यधायि ॥ २ ॥

रामभजन तव सेवामायुष्मन् हन्त कार्य कार्यत्वम
विस्मर्यते न जाने शोकोयदयासि मां त्यक्[illegible]

कृतज्ञता प्रकाश ।

यहां पर हम अपने कतिपय हितैषी मित्रों और सहायकोंका कृतज्ञता पूर्वक स्मरण किये बिना इस रिपोर्टको समाप्त नहीं कर सकते। सबसे पहले हमें अपने उत्साही मित्र चमरौली निवासी पं० सूर्यप्रसाद जी वाजपेयीका स्मरण होता है। बल्कि कहना चाहिये कि इस सम्मेलनके आदि कारण ही आप हैं। समाचार पत्रोंमें आपके ही छेड़नेसे मेरा ध्यान आकर्षित हुआ और मैंने सम्मेलनका अनुष्ठान करना विचारा। आप केवल सुझा कर ही नहीं रहे; बल्कि स्वास्थ्य अच्छा न रहने पर भी १५ दिन पहलेसे ही आप प्रयाग पहुंच गये और रात दिन अदम्य उत्साह और परिश्रमके साथ आपने सम्मेलन सम्बन्धी बड़ेसे बड़ा और छोटेसे छोटा काम सँभाला। सम्मेलनकी सफलतामें आपका परिश्रम बहुत सहायक हुआ है। सम्मेलनके सम्बन्धमें मैं सबसे अधिक आपका कृतज्ञ हूं। सम्मेलनकी स्वागतकारिणीसभाके सभापति पं० शिवराम पाण्डे महोदयके विषयमें विशेष क्या कहा जाय। आप तो इस सम्मेलन नौकाके कर्ण-
धार ही थे; किन्तु अपने मित्र बाबू जयकुमार जैनी वैद्य,
[illegible] सांवलदास रईस और पण्डित रामभजन शर्म्माके
[illegible] मैं अन्तःकरणसे प्रशंसा करूंगा। साथही पं०
[illegible]धियोंके साथ

ठाकुरप्रसाद शर्म्मा वैद्य, डाकृर रामेश्वरनाथ चतुर्वेदी, लाला सोहनलाल जैन वैद्य, हकीम मनमोहनलाल, बाबू गणेशशङ्कर, पण्डित विश्वम्भर चतुर्वेदी और पण्डित कालीचरणजी शुक्ल आदि सज्जनोंको भी परिश्रमके लिये धन्यवाद है। आजकल सब हो किन्तु रुपया न हो तो सभी काम रुक जाते हैं। इसलिये उदारता पूर्वक धन दान करनेवाले सज्जनोंको धन्यवाद देना भी कर्तव्य है। स्वागतकारिणीके सभापति पण्डित शिवरामजी पाण्डे महोदयकी उदारताने मेरे मनसे उदासी और चिन्ताका बोझा हटाया; सुखसागर औषधालयके स्वामी आत्मानन्द सरस्वती महोदयकी उदारता और उत्साह वाक्योंने मुझे धैर्य बँधाया। बरांवके कुंवर सरयूप्रसाद नारायणसिंह बहादुरने उत्साहित किया; कानपुरके उत्साही मित्रों और पैंडेपुर रायबरेलीके ताल्लुकेदार श्रीमान ठाकुर जगन्नाथ बक्शसिंह तथा पं० शिवरतन वाजपेयी जीकी उदारताने खर्चका बोझा हलका किया। अतएव सबको हार्दिक धन्यवाद है। अपने शहरके सुप्रतिष्ठित रईस और उत्कट आयुर्वेदप्रेमी श्रीमान् लाला रामचरणदासजी राय बहादुर महोदयको हमारे असंख्य धन्यवाद हैं। आप वर्षोंसे आयुर्वेदके उद्धारके इच्छुक हैं किन्तु कुछ काम होते न देख इधर आप विरक्त हो रहे थे। जब आपने देखा कि सम्मे[illegible] काम उत्साहसे हो रहा है तब आप उदारत[illegible]

सहायक हुए। और सभापति महोदय तथा उनके साथके सज्जनोंको अपने यहां ठहराकर तथा सम्मानितकर स्वागत-कारिणीका बहुतसा बोझा हलकाकर दिया। आपके कारण स्वागतकारिणीके सभ्योंको बहुत सुविधा हुई। आशा है आप सदा हमारे सहायक रहेंगे। जिस भारतीभवनमें बैठकर हम लोग सभा करते रहे उसके मालिकों और ट्रस्टियोंको भी अनेक धन्यवाद हैं। शहर और दारागञ्ज-के जिन उत्साही युवकोंने वालंटियरका काम कर सहा-यता पहुंचायी उन्हें भी अनेक धन्यवाद हैं।

सम्मेलनका सेवक

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल

मन्त्री.

पत्रों और सभाओंके सम्पादक तथा प्रतिनिधि।

श्रीमान अधिकारी जगन्नाथदास विशारद साधु बड़ौदा।
„ पं० अम्बिका प्रसाद जी वाजपेयी भारतमित्र।
„ पं० बाबूराव विष्णु पराडकर हितवार्ता।
बाबू राम लाल वर्मा बड़ा बाजार गज़ट।
गोपाल रामजी गहमर जासूस।

श्रीमान् बाबू महावीर प्रसाद विहारबन्धु ।
,, पण्डित सकलनारायण पाण्डे शिक्षा ।
,, पण्डित जगदीश्वर जी झा मिथिलामिहिर ।
,, पण्डित लक्ष्मीनारायण जी त्रिपाठी भारतजीवन ।
,, पण्डित ओङ्कार नाथ जी वाजपेयी नवजीवन ।
,, पण्डित बिन्दाप्रसाद पाण्डेय मारवाड़ी नागपुर ।
,, पण्डित ब्रह्मदेव शर्मा ब्राह्मण सर्वस्व ।
,, बाबू महेशचरण सिंह सद्धर्मप्रचारक ।
,, पण्डित राम प्रसाद जी मिश्र जीवन ।
,, पण्डित लक्ष्मणाचार्य शास्त्री सद्धर्म ।
,, रायपूरण चन्द्र जी क्षत्रिय समाचार ।
,, बाबू बालमुकुन्द बर्मा खत्री हितकारी ।
,, पण्डित ठाकुर दत्त जी शर्मा देशोपकारक ।
,, पं० झाबरमल शर्मा भारत।
,, लाला भगवानदीन जी लक्ष्मी ।
,, पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी यादवेन्द्र ।
,, पं० इन्द्रनारायणजी द्विवेदी वैदिकसर्वस्व ।
,, बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन साहित्यसम्मेलन।
,, पं० मुरलीधर जी मिश्र नागरीप्रवर्द्धिनी सभा ।
,, बाबू ईश्वरीप्रसाद नागरीप्रचारिणी सभा आरा ।
,, पं० महादेव जी भट्ट हिन्दीप्रदीप ।
,, पं० कृष्णाकान्त जी मालवीय मर्यादा

,, पं० बालादीन जी शुक्ल स्त्रीधर्म शिक्षक ।
,, पं० लक्ष्मी नारायण नागर वकील नागरीप्रवर्द्धिनी सभा ।
,, पं० जीवानन्द शर्मा काव्यतीर्थ कमला ।

हकीम महोदय जो कृपया सम्मेलनमें पधारे।

मौलवी हकीम अहमद हसन साहब प्रयाग ।
मौलवी हकीम मुहम्मद फ़ाक़िर साहब प्रयाग ।
मौलवी हकीम नियामतउल्ला साहब प्रयाग ।
मौलवी हकीम अब्दुलवली साहब लखनऊ ।

आयुर्वेद प्रचारिणी सभाके प्रयागस्थ प्रतिनिधि ।

पण्डित शिवराम पाण्डेय वैद्य ।
,, वैद्यनाथ शर्मा राजवैद्य ।
,, केदारनाथ शर्मा चौबे वैद्य ।
,, बच्चूराम शर्मा वैद्य ।
,, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती ।
,, ठाकुरप्रसाद शर्मा वैद्य ।
,, मनबोध महाराज ,, ।
,, रमाकान्त शुक्ल वैद्य ।
रमाकान्त व्यास राजवैद्य ।
...शङ्कर मिश्र वैद्य ।

पण्डित बालानन्द मिश्र वैद्य ।
" श्यामलालजी शर्मा वैद्य ।
" रामनाथ मिश्र वैद्य ।
" भगवतीप्रसाद पांडे वैद्य ।
" देवकीनन्दन त्रिपाठी वैद्य ।
" विश्वेश्वर जी मिश्र वैद्य ।
" जयनारायण शर्मा वैद्य ।
बाबू जयकुमार जैनी वैद्य ।
डाक्टर रामेश्वर नाथ चतुर्वेदी एल. सी. पी. एस. ।
डाक्टर लक्ष्मीकान्त शर्मा ।
बाबू सोहनलाल जैनी वैद्य ।
हकीम मनमोहनलाल वैद्य ।
पण्डित प्राणनाथ चौबे वैद्य ।
" कालीचरण शुक्ल वैद्य ।
" उमादत्त शुक्ल वैद्य ।
" सीताराम जी तिवारी खुल्दाबाद ।
" रामजस जी शर्मा वैद्य ।
" भगवत दत्त जी वैद्य ।
लाला जग्गीलाल वैद्य ।
हकीम रामकिशुन जी ।
लाला रामचरण जी अग्रवाल ।
बाबू देवीप्रसाद जी हेड मास्टर ।

श्रीमान् लाला सांवलदास खत्री रईस सेक्रेटरी हरदेव जीकी पाठशाला।

पं० किशोरीलाल जी कुर्ल मन्त्री गौरक्षिणी सभा।

लाला वेणीमाधव।

लाला महाबीरप्रसाद गुप्त।

श्रीयुक्त पण्डित मारकण्डेय जी।

पण्डित बद्रीनारायण शुक्ल।

,, बेणीप्रसाद जी।

,, विश्वम्भरनाथ नागर वैद्य।

बाबू जयविजय नारायण सिंह बरांव।

बाबू दलबहादुर सिंह ,, ।

बाबू रामदीन जी वैश्य।

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल।

पण्डित वासुदेव शर्मा वैद्य।

,, अमरनाथ शर्मा वैद्य।

,, शिवप्रसाद शर्मा वैद्य।

,, विश्वम्भर चतुर्वेदी वैद्य।

लाला बचऊ लालजी रईस।

पण्डित लक्ष्मीनारायण नागर बी. ए. एल. एल. बी.।

,, राधाकान्त जी मालवीय एम. ए.।

,, [illegible]क्ष्मीनारायण तिवारी बी. ए. एल. एल. बी.।

[illegible]धियोंके साथ [illegible]नाथ जी पांडेय।

,, रघुबर दयालु जी वाजपेयी ओंकार प्रेस ।

,, ज्योतिर्विद पंडित शेषधर जी शर्मा ।

,, शीतलप्रसाद तिवारी ।

श्रीमान अधिकारी जी तुलसीदासका अखाड़ा ।

पंडित गयादीन तिवारी तिवारीपुरा ।

,, महावीरप्रसाद वैद्य बहादुरगञ्ज ।

श्रीयुक्त दुर्गाप्रसाद जी मोहतसिमगञ्ज ।

पंडित शिवशङ्कर जी वैद्य अहियापुर ।

बाबू नरेन्द्रनारायण सिंह जी ।

बाबू ऋषभदास जी ।

लाला हीरालाल जी ।

लाला सुमेरचन्द्र जी जैनी ।

बाहरसे आये हुए प्रतिनिधि और प्रतिष्ठित सज्जन ।

इलाहाबाद

पं० आदित्यनारायण द्विवेदी सिरसा ।

पं० सत्यनारायण पाण्डेय जमनीपुरा ।

गोस्वामी महादेव प्रसाद कंकरा ।

पं० शिवनन्दन उपाध्याय कोटवा ।

वैद्यवर पं० धरणी धरजी झा बरा ।
वैद्य पं० गुलजारी लाल शर्मा कड़ा मानिकपुर ।
पं० रमाकान्तो पाध्याय शङ्करगढ़ ।

फतेपुर ।

वैद्यराज मन्नू लाल जी मिश्र बिन्दकी ।
रावत हरप्रसाद सिंहजी एकडला ।
पं० बाबादीन जी शुक्ल एकडला ।
पं० गङ्गाप्रसाद शुक्ल डेंडासई ।

कानपुर ।

वैद्य पं० सीताराम जी शर्मा
वैद्य कुल भूषण पं० रामेश्वर प्रसाद मिश्र ।
वैद्यवर पं० कालिका प्रसाद त्रिपाठी ।
" पं० शिवनारायण मिश्र ।
वैद्यवर पं० छोटेलाल जी शर्मा ।
" पं० शिवनन्दन जी मिश्र ।
" पं० लाल मणिजी त्रिपाठी झींझक ।
लखुल लाला गणेश शङ्कर ।
पण्डित पं० स्वामी दयाल वाजपेयी सैथा ।
दीक्षित सिद्ध नाथ शर्मा नौगवां ।
टू... केदाशाह (शाह) पौहार ।
...थियोंके साथ ... गुलजारी लाल जी ।

...ा बाबू श्याम विहारी खत्री ।
पं० रामधनी मिश्र ।
" बाबू काशीनाथ जी ।
" बा० नारायण प्रसाद जी निगम ।
" बा० नारायण प्रसादजी अरोड़ा ।
स्वामी ठलाकटानन्द जी महाराज ।

इटावा ।

वैद्यवर पं० शिवसहाय जी ।

आगरा ।

वैद्यवर ठा० ज्ञानसिंह जी ।
" पं० बलदेव दास जी ।
कविराज पं० सत्यनारायण बी. ए. धांधू पुरा ।

मथुरा ।

पं० बनवारीलाल जी वैद्य ।
गोस्वामी पं० लक्ष्मणाचार्य जी शास्त्री ।

अलीगढ़ ।

पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्य शास्त्री ।
बा० राधावल्लभ जी वैद्य (विजयगढ़) ।

मेरठ ।

आ० मा० पं० सूर्य प्रसाद शर्मा ।

दिल्ली।

वैद्यवर बाबू मानसिंह जी जनरल सेक्रेटरी यूनानी तिब्बी कानफरेंस।

लाहौर।

वैद्यवर पं० ठाकुरदत्त शर्मा।

अजमेर।

आ० प० पं० हरिश्चन्द्र शर्मा दाधीच।

श्रीयुक्त पं० लक्ष्मी नारायण जी।

राजपूताना।

वैद्यवर पं० भूरालाल जी मिश्र शेखावाटी।

" पं० वृद्धिचन्द्र जी शर्मा लक्ष्मणगढ़।

भिवानी।

श्रीमान पं० राधाकृष्ण जी मिश्र।

कश्मीर।

बाबू अशरफ़ी लाल प्रायवेट मुलाज़िम महाराजा।

बिजनौर।

पण्डितवर पं० भागीरथ लाल शर्मा।

हरिद्वार।

...यियोंके साथ ...रण सिंह रसायन शास्त्रीगुरुकुल काङ्गड़ी।